श्री गणेश स्मृति ग्रंथमाला-ग्रंथाङ्क –३१

जैन-तत्व निर्णय

प्रथम भाग

(श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर की 'जैनसिद्धान्त भूषण'–परीक्षा के प्रथम खण्ड हेतु निर्धारित)

प्रकाशक

श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला, बीकानेर
(श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)
समता भवन, रामपुरिया स्ट्रीट, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक

श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला
(श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)
समता भवन, रामपुरिया स्ट्रीट, बीकानेर (राजस्थान)

●

प्रथम सस्करण- २२००

●

जून १९७४

●

मूल्य—तीन रुपया

●

मुद्रक—
जैन आर्ट प्रेस
(श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)
समता भवन, रामपुरिया स्ट्रीट, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशकीय

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की अभिवृद्धि करने के उद्देश्य से श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, वीकानेर ने वालकों के धार्मिक, नैतिक सस्कारो को सवल वनाने, युवा एवं प्रौढ वर्ग के भाई-वहिनो मे क्रमवद्ध पाठ्यक्रमानुसार धार्मिक, सैद्धान्तिक ग्रन्थो के अध्ययन की अभिरुचि जाग्रत करने एव उन्हे तलस्पर्शी ज्ञान कराने के लिये श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा वोर्ड की स्थापना की थी।

विगत वर्षों मे परीक्षा वोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार अध्ययन करने से समाज के आवाल-वृद्ध वर्ग मे धार्मिक जिज्ञासा की वृद्धि हुई है और वालको को नैतिक सस्कार मिले हैं।

परीक्षा वोर्ड के पाठ्यक्रम को और अधिक सुरुचिपूर्ण एव ज्ञान की विविध विधाओ से सम्पन्न वनाने तथा वालोपयोगी परीक्षाओं की पाठ्यपुस्तको मे धार्मिक, नैतिक सस्कारो की शिक्षा देने वाले विशेष उपयोगी विचारो को गर्भित करने की दृष्टि से गतवर्ष वीकानेर मे शिक्षा-शास्त्रियो, एव मर्मज्ञ विद्वानो की प र मुनि श्री सपतमुनि जी सा, प र श्री धर्मेशमुनि जी म सा एव श्री पारसमुनि जी म सा आदि सत-सतिया जी म सा के सान्निध्य मे विद्वद्गोष्ठी का आयोजन किया गया था।

विद्वद्गोष्ठी मे लिए गए निर्णय के अनुसार जैन सिद्धान्त भूषण परीक्षा के प्रथम खण्ड हेतु जैन-तत्त्व निर्णय भाग-१ का प्रकाशन किया गया है। आशा है,

प्रस्तुत पुस्तक छात्रोपयोगी होने के साथ ही साधारण पाठकों के लिए भी रुचिकर होगी ।

काफी वर्षों पूर्व कविवर मुनि श्री नानचन्द्र जी महाराज विरचित गुजराती ग्रन्थ 'जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली' का हिन्दी-अनुवाद श्रीयुत् मास्टर रिखबचन्द जी कडावत ने प्रस्तुत किया था, जिसे श्रीयुत् गिरधारीलाल जी अनराज जी साखला, बेंगलोर ने प्रकाशित किया । इसी प्रकार कामदार श्री झबेरचद जी जादव जी द्वारा प्रस्तुत 'शालोपयोगी जैन प्रश्नोत्तर' (दो भाग) का हिन्दी-अनुवाद डॉ. श्री धारशी गुलाबचद सघाणी, अजमेर ने किया, जो मूल लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ । ये ग्रन्थ छात्रोपयोगी होने पर भी अप्राप्य से हो रहे थे । ऐसी स्थिति मे इनको समन्वित रूप से 'जैन-तत्त्व निर्णय' के नाम से पुनर्मुद्रित किया गया है । एतदर्थ इन ग्रन्थो के लेखक, अनुवादक तथा प्रकाशक महानुभावो के प्रति सघ की ओर से हार्दिक आभार स्वीकार किया जाता है ।

इस पुस्तक का प्रकाशन श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल, रतलाम की निधि से, जो सघ को साहित्य प्रकाशन आदि कार्यों के लिये प्राप्त हुई है, किया गया है । इसके लिये हम मण्डल के सभी सदस्यों के आभारी है ।

मन्त्री,

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, रामपुरिया स्ट्रीट, बीकानेर (राजस्थान)

विषय-सूची

जैन-तत्त्व निर्णय

प्रथम खण्ड

लोग-लोक

७ लम्बाई चौड़ाई ऊंचाई ७ ७ गज = ७ घनगज
७ ७x७ ३४३
सात गज लंबी आकाश प्रदेश
की पंक्ति को श्रेणी कहते हैं।
७ गज लंबी ७ गज चौड़ी
आकाश प्रदेश की पंक्ति को
पतर कहते हैं।
७
१
७
७

जैन-तत्त्व-निर्णय

पाठ-१

लोकालोक

१ प्र०—इस दुनिया को जैन शास्त्र मे क्या कहते है ?
उ०—लोक ।

२. प्र०—लोक के मुख्य विभाग कितने व कौन-कौन से है ?
उ०—तीन, उर्ध्वलोक, अधोलोक व तिरछालोक ।

३ प्र०—अपन किस लोक मे रहते है ?
उ०—तिरछा लोक मे ।

४ प्र०—उर्ध्वलोक मे मुख्यकर कौन रहते है ?
उ०—वैमानिक देव ।

५ प्र०—अधोलोक मे मुख्यकर कौन रहते हैं ?
उ०—नारकी व भुवनपति देव ।

६ प्र०—उर्ध्व और अधो का मतलब क्या है ?
उ०—उर्ध्व मायने ऊँचा और अधो मायने नीचा ।

७. प्र०—लोक कितना बडा है ?
उ०—असख्य योजन का लम्बा, चौडा व ऊँचा ।

८. प्र०—असख्य किसे कहते है ?
उ०—जिसकी गिनती नही हो सके ।

९. प्र०—लोक के चारो ओर क्या है ?
उ०—अलोक ।

१० प्र०—अलोक कितना बडा है ?

उ०—अनन्त ।

११. प्र०—अनन्त का अर्थ क्या है ?

उ०—जिसका अन्त याने पार नही सो अनन्त कहलाता है।

१२. प्र०—लोक बडा है या अलोक ?

उ०—अलोक ।

१३. प्र०—अलोक मे क्या-क्या चीजे है ?

उ०—सिर्फ आकाश है और कुछ भी नही।

१४. प्र०—लोक और अलोक दोनो मिलकर क्या कहलाता है।

उ० - लोकालोक ?

पाठ–२

पंच परमेष्ठी की पहिचान

१. प्र०—लोकालोक सम्पूर्णतया कोन जान सकते है व देख सकते हैं ?

उ०—परमेश्वर ।

२. प्र०—अपन यहा बातचीत करते हैं, क्या परमेश्वर वह जानते हैं ?

उ०—हां, वह सब कुछ जानते हैं।

३. प्र०—सब कुछ जानने वालों को क्या कहना चाहिए ?

उ०—सर्वज्ञ ।

४. प्र०—सर्वज्ञ कौन-कौन कहे जा सकते है ?

उ०—श्री सिद्ध भगवंत और श्री अरिहृत देव ।

५. प्र०—सिद्ध भगवान कहा रहते है ?
उ०—सिद्ध क्षेत्र मे ।
६ प्र०—सिद्ध क्षेत्र कहा पर है ?
उ०—लोक के शिरोभाग पर व अलोक के नीचे ।
७ प्र०—श्री सिद्ध भगवान के हाथ कितने है ?
उ०—एक भी नही है ।
८ प्र०—सिद्ध भगवान यहा कब आवें ?
उ०—यहा नही आवें, क्योकि उनको यहा आने का कोई कारण ही नही है ।
९ प्र०—अरिहत देव का अर्थ क्या है ?
उ०—कर्म रूप शत्रु को हनन करने वाले देव याने केवलज्ञानी ।
१०. प्र०—कर्म किसे कहते है ?
उ०—जीव को जो चारो गति मे रुलाता है और ससार के सुख-दु ख का मूल कारण है, उसको कर्म कहते हैं ।
११ प्र०—कर्म कितने प्रकार के है व कौन-कौन से हैं ?
उ०—आठ प्रकार के, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, अन्तराय ।
१२ प्र०—कर्मो को तुमने देखा है ?
उ०—नही, अपन उनको नही देख सकते है ।
१३ प्र०—तुम्हारे पास कितने कर्म है ?
उ०—आठ ।
१४ प्र०—सिद्ध भगवत के पास कितने कर्म है ?
उ०—एक भी नही ।
१५. प्र०—अरिहत देव के पास कितने कर्म है ?
उ०—चार कर्म ।

१६ प्र०—अरिहत देव के कितने हाथ होते हैं ?
उ०—दो

१७. प्र०—अरिहत देव खाते हैं क्या ?
उ०—वे साधु की तरह अचेत आहार करते हैं।

१८. प्र०—सिद्ध भगवत क्या खाते हैं ?
उ०—कुछ नही (उनके शरीर ही नही है तो फिर खाने की जरूरत ही क्या ।)

१९. प्र०—इस वक्त इस लोक मे कितने अरिहत है ?
उ०—बीस ।

२०. प्र०—वे किस लोक मे है ?
उ०—तिरछा लोक मे ।

२१. प्र०—तिरछा लोक के किस क्षेत्र में ।
उ०—महाविदेह क्षेत्र मे ।

२२. प्र०—महाविदेह क्षेत्र कितने है ?
उ०—पाच

२३. प्र०—अरिहन्त देव काल करके कहा जाते है ?
उ०—मोक्ष मे ।

२४ प्र०—इस भरतक्षेत्र में आखिरी अरिहत (तीर्थंकर) कौन हुए ?
उ०—श्री महावीर प्रभु, दूसरा नाम श्री वर्धमान स्वामी।

२५. प्र०—श्री महावीर प्रभु अव कहा है ?
उ०—सिद्ध क्षेत्र मे ।

२६. प्र०—नवकार मत्र कहिये ।
उ०—नमो अरिहताण, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण ।

२७. प्र०—नमो का अर्थ क्या ?

उ०—नमस्कार हो।

२८ प्र०—अरिहनाण का अर्थ क्या ?

उ०—अरिहन्त देव को।

२९ प्र०—सिद्धाण का अर्थ क्या ?

उ०—सिद्ध भगवत को।

३० प्र०—अरिहन्त देव व सिद्ध भगवान इन मे बडे कौन ?

उ०—सिद्ध भगवान।

३१ प्र०—तो नवकार मत्र मे अरिहत देव को पहिले नमस्कार क्यो किया जाता है ?

उ०—क्योकि सिद्ध भगवन्त की पहिचान कराने वाले वे ही (अरिहत) है।

३२ प्र०—अरिहन्त कैसे होते है ?

उ०—मुनि जैसे।

३३ प्र०—सिद्ध भगवत का आकार कैसा है ?

उ०—वे निरजन है व अशरीरी होने से निराकार हैं।

३४ प्र०—निरजन किसे कहते है ?

उ०—जिनको कर्मरूप अजन (मैल) नही है, उनको।

३५ प्र०—निराकार मायने क्या ?

उ०—जिनका आकार नही है, सो निराकार है।

३६ प्र०—नमो आयरियाण का अर्थ क्या ?

उ०—आचार्य जी को नमस्कार।

३७ प्र०—आचार्य किसको कहते है ?

उ०—जो शुद्ध आचार आप पालते है व दूसरे को पलाते है उनको।

३८ प्र०—आचार्य मे कितने गुण होते है ?

उ०—छत्तीस।

३९. प्र०—अरिहंत मे कितने गुण होते है ?
उ०—बारह ।

४०. प्र०—आचार्य बडे हैं या अरिहत देव ?
उ०—अरिहत देव ।

४१. प्र०—सिद्ध भगवंत मे कितने गुण होते है ?
उ०—आठ ।

४२. प्र०—नवकार मत्र के चौथे पद में किन को नमस्कार करने को कहा है ?
उ०—उपाध्याय जी को ।

४३. प्र०—उपाध्याय जी किस को कहते है ?
उ०—जो शुद्ध सूत्रार्थ आप पढते है व दूसरे को पढाते है ।

४४. प्र०—अपनी पाठशाला में कौन उपाध्याय है ?
उ०—कोई नही है ।

४५. प्र०—उपाध्यायजी मे कितने गुण होते है ?
उ०—पच्चीस ।

४६. प्र०—उपाध्याय जी व आचार्य जी इन दोनो मे बडे कौन हैं ?
उ०—आचार्य जी ।

४७. प्र०—नवकार मत्र का पांचवा पद कहिये ?
उ०—नमो लोए सव्वसाहूण ।

४८. प्र०—लोए मायने क्या ?
उ०—लोक में ।

४९. प्र०—सव्वसाहूण मायने क्या ?
उ०—सर्व साधुजी महाराज को ।

५०. प्र०—साधुजी में कितने गुण है ?
उ०—सत्ताईस ।

५१. प्र०—नवकार मन्त्र में कितने को नमस्कार करने को कहा है ?
उ०—पाच को ।

५२. प्र०—कौन-कौन पाच ?
उ०—अरिहतदेव, सिद्धभगवान, आचार्य जी, उपाध्याय जी व साधुजी ।

५३ प्र०—इन पाचो को क्या कहते हैं ?
उ०—पचपरमेष्ठी ।

५४. प्र०—पचपरमेष्ठी में कितने गुण होते हैं ?
उ०—एक सौ आठ ।

५५ प्र०—पचपरमेष्ठी में साधुपन कितने पालते हैं ?
उ०—चार, अरिहतदेव, आचार्य, उपाध्याय जी और साधुजी ।

५७ प्र०—सिद्ध भगवन क्या करते हैं ?
उ०—अनत आत्मिक सुख मे विराजमान है ।

५८. प्र०—पचपरमेष्ठी मे मनुष्य कितने है ?
उ०—चार (सिद्ध भगवत के अलावा)

पाठ-३

जीव-तत्त्व और अजीव-तत्त्व

१. प्र०—अपने शरीर पर जलता हुवा अंगारा गिर जाय तो क्या होता है ?

उ०—वेदना होती है।

२. प्र०—लोग मर जाते है, पीछे शरीर को क्या करते है ?

उ०—आग मे जलाते है।

३. प्र०—उसकी वेदना होती है या नही ?

उ०—नही होती है।

४. प्र०—क्यों वेदना नही होती है।

उ०—क्योकि उसमे जीव नही है।

५. प्र०—कब तक सुख या दुःख मालूम होता है ?

उ०—जब तक शरीर मे जीव होता है तब तक।

६. प्र०—सुख दु.ख शरीर समझता है या जीव ?

उ०—जीव समझता है शरीर नही।

७. प्र०—तुमने जीव देखा है ?

उ०—नही, जीव देखने मे नही आता है।

८. प्र०—शरीर मे जीव किस जगह है ?

उ०—सारा शरीर मे (सर्वांग मे) व्याप्त है।

९. प्र०—किस मिसाल ?

उ०—जैसे तिल मे तेल, दूध मे घृत, फूल मे सुगध।

१०. प्र०—जीव मरता है या नही ?

उ०—जीव कभी मरता नही है।

११. प्र०—जब मरना मायने क्या ?

उ०—शरीर मे से जीव का चला जाना।

१२. प्र०—जीव शरीर को छोड के कहा जाता है ?

उ०—अपने कर्मानुसार दूसरे शरीर को प्राप्त होता है।

१३ प्र०—क्या सब जीवो को दूसरे शरीर मे उत्पन्न होना पडता है।

उ०—जो जीव सिद्ध होते है वे तो मोक्ष मे जाते है

और उनके सिवाय सबको शरीर धारण करना पड़ता है।

१४ प्र०—जीव लोक मे ज्यादा है या अलोक में ?
उ०—अलोक में जीव होते ही नही है।

१५. प्र०—लोक में ऐसी कोई जगह है कि जहा कोई जीव नही है ?
उ०—जीवो से सम्पूर्ण लोक भरा हुवा है सूई के अग्र भाग जितनी जगह भी खाली नही है।

१६. प्र०—जीव का दूसरा नाम क्या है ?
उ०—आत्मा।

१७ प्र०—हाथी का आत्मा बड़ा या कीड़ी का ?
उ०—दोनो की आत्मा समान है।

१८ प्र०—हाथी जब मर के चींटी होता है तब उसका आत्मा इतनी छोटी देह में कैसे समा सकता है ?
उ०—जैसे सारे मकान में फैला हुवा दीपक का प्रकाश एक छोटे से वर्तन में भी समा सकता है। इसी तरह हाथी का आत्मा कीड़ी के शरीर मे समाता है।

१९ प्र०—जीव को अपन देख सकते है या नही ?
उ०—नही देख सकते क्योंकि वह अरूपी है।

२० प्र०—तो जो जो चीजें अपन देख सकते है वे सब जीव है या अजीव ?
उ०—सब अजीव ही है।

२१ प्र०—जीव व अजीव में क्या भेद है ?
उ०—जीव चैतन्य लक्षणवाला और ज्ञान गुणवाला है, और अजीव अचेतन याने जड़ है।

२२ प्र०—तुम्हारा शरीर जीव है या अजीव ?

उ०—अजीव ।

२३. प्र०—तब यह अजीव शरीर हलन चलन आदि क्रिया कैसे कर सकता है ?

उ०—जब तक शरीर में जीव होता है तब तक हलचल सकता है । जीव निकल जाने के बाद कुछ नही कर सकता ।

२४. प्र०—किन दो तत्वो में सर्व पदार्थों का समावेश होता है ?

उ०—जीव तत्व व अजीव तत्व मे यानि चेतन व जड में ।

पाठ—४

द्वीप व समुद्र

१. प्र०—द्वीप किसे कहते है ?

उ०—जिस जमीन के चौतरफ जल हो ।

२. प्र०—ऐसे द्वीप कितने हैं ?

उ०—असख्याता, उनकी गिनती मनुष्य शक्तिके बाहर हैं।

३. प्र०—ये सब द्वीप कहा है ।

उ०—तिर्छा लोक मे ।

४. प्र०—द्वीप के आस-पास क्या होता है ?

उ०—समुद्र ।

५ प्र०—समुद्र कितने हैं ?

उ०—असंख्याता ।

६. प्र०—द्वीप ज्यादा हैं या समुद्र ?

उ०—दोनो समाना है ।

७ प्र०—इसका क्या कारण है ?

उ०—एक द्वीप के चौतरफ एक समुद्र व उसके चौरफ एक द्वीप, इस तरह से क्रमश द्वीप व समुद्र रहते है।

८. प्र०—इन सब के बीच में कौन सा द्वीप है ?

उ०—जम्बुद्वीप ।

९. प्र०—अपन कहा रहते हैं ?

उ०—जम्बूद्वीप मे ।

१०. प्र०—जम्बूद्वीप के आस-पास क्या है ?

उ०—लवण समुद्र ।

११. प्र०—लवण समुद्र किस दिशा की तरफ है ?

उ०—चो तरफ है ।

१२. प्र०—लवण समुद्र मायने कैसा समुद्र ?

उ०—खारा समुद्र ।

१३. प्र०—जम्बूद्वीप का आकार कैसा है ?

उ०—गोल रुपया जैसा ।

१४. प्र०—लवण समुद्र का आकार कैसा है ?

उ०—लवण समुद्र का आकार भी गोल है मगर बीच में जम्बूद्वीप होने से कंकण चूडी, कड़ा जैसा गोल है ।

१५. प्र०—जम्बूद्वीप कितना बड़ा है ?

उ०—एक लाख जोजन का लबा चौडा है ।

१६. प्र०—लवण समुद्र कितना बड़ा है ?

उ०—दो लाख जोजन का ।

१७. प्र०—परस्ता से जम्बूद्वीप जितने बड़े खंड लवण समुद्र

'मे से कितने हो सकते है ?

उ०—चौबीश अर्थात्, जम्बूद्वीप लवण समुद्र ने चौबीश गुनी जगह रोक दी है।

१८ प्र०—लवण समुद्र के चौतरफ कौनसा द्वीप है ?

उ०—धात की खड द्वीप।

१९. प्र०—धात की खड कितना बडा है ?

उ०—उसका पट चार लाख जोजन का है।

२०. प्र०—जम्बूद्वीप जैसे धातकी खड मे से कितने विभाग हो सकते है ?

उ०—१४४ (१३×१३=१६९-२५=१४४)

२१. प्र०—धातकी खड के चौतरफ क्या है ?

उ०—कालोदधि समुद्र।

२२. प्र०—कालोदधि समुद्र कितना बडा है ?

उ०—उसका पट आठ लाख जोजन का है ?

२३. प्र०—जम्बूद्वीप जैसे कालोदधि समुद्र मे से कितने विभाग होते है ?

उ०—६७२ (२९×२९=८४१-१६९=६७२)

२४. प्र०—कालोदधि के चौतरफ क्या है ?

उ०—पुष्कर द्वीप।

'चित्र न १ मे देखो ? कि सबके बीच का बिन्दु जम्बूद्वीप है। इस जम्बूद्वीप जैसे बिन्दु दो घेरे मे लवण समुद्र के अन्दर १८ हैं इन १८ बिन्दू के सिवाय जो जगह बची है उनको ६ बिन्दु के बराबर समझो। इस प्रकार से १८+६=२४ खण्ड हुए। इसी प्रकार आगे धात की खण्ड, कालोदधि समुद्र व पुष्कर द्वीप मे भी समझना चाहिये :—
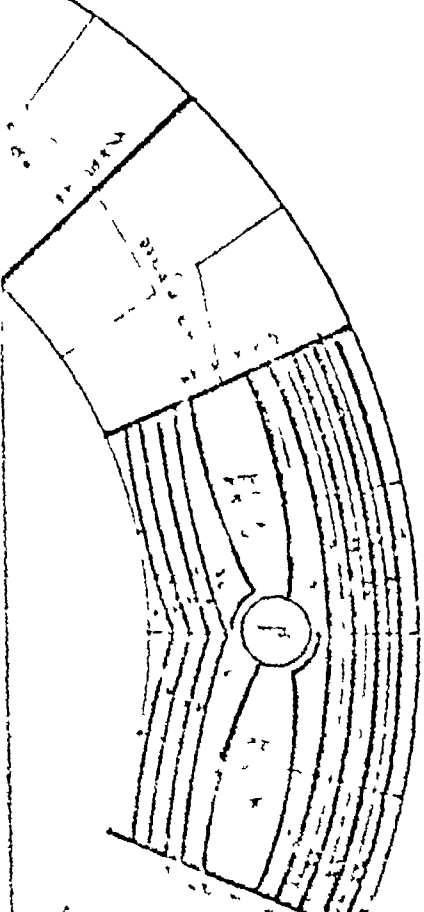
सुदर्शन मेरु
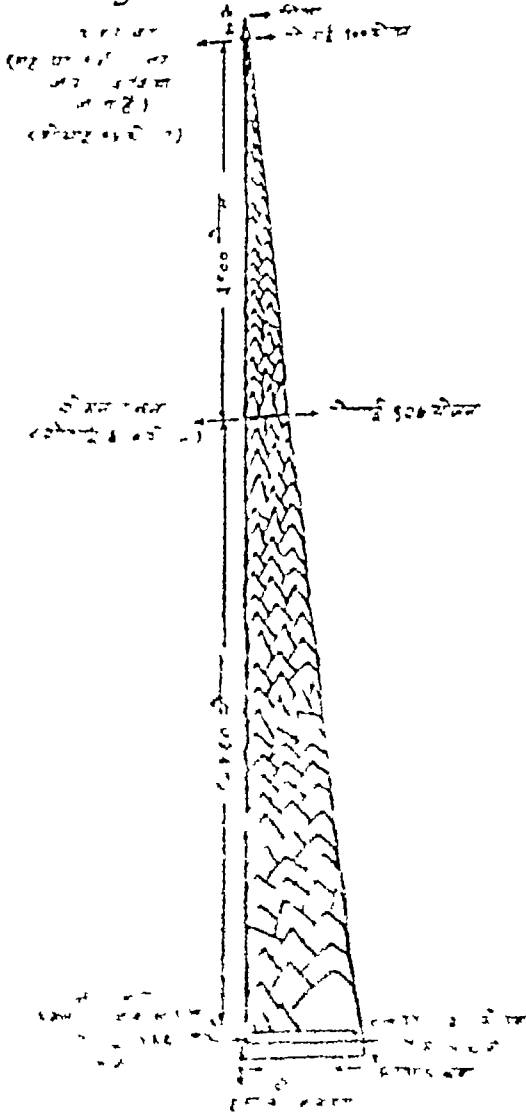
२५ प्र०—पुष्कर द्वीप कितना बड़ा है ?

उ०—उसका पट सोलह लाख योजन का है।

२६. प्र०—पुष्कर द्वीप के बीच में क्या है ?

उ०—मानुष्योत्तर पर्वत है।

२७ प्र०—मानुष्योत्तर पर्वत कौनसी दिशा मे है ?

उ०—यह पर्वत भी अढाई द्वीप के चौतरफ गढ (किले) की तरह गोल है।

२८ प्र०—यह पर्वत मानुष्योत्तर क्यों कहा जाता है ?

उ०—यह मनुष्य क्षेत्र की मर्यादा करता है, इस लिये मानुष्योत्तर पर्वत कहा जाता है, इसके आगे असंख्याता द्वीप समुद्र है किन्तु किसी मे भी मनुष्य नही है।

२९. प्र०—मनुष्य क्षेत्र मे कितने द्वीप व समुद्र है ?

उ०—अढाई द्वीप और दो समुद्र है।

३०. प्र०—अढाई द्वीप कौन-कौन से है ?

उ०—पहला जम्बूद्वीप, दूसरा धातकी खण्ड द्वीप और तीसरा अर्द्ध पुष्कर द्वीप।

३१ प्र०—दो समुद्र कौन से है ?

उ०—पहला लवण समुद्र, दूसरा कालोदधि।

३२ प्र०—अर्द्ध पुष्कर द्वीप कितना बड़ा है ?

उ०—इसका पट आठ लाख जोजन का है।

३३ प्र०—जम्बूद्वीप जैसे कितने खण्ड अर्द्ध पुष्कर द्वीप में हो सकते है ?

उ०—११८४ (४५×४५=२०२५—८४१=११८४)

३४. प्र०—अढाई द्वीप की लम्बाई चौडाई कितनी है ?

उ०—पैंतालीस लाख जोजन की।

३५. प्र०—अर्द्ध पुष्कर द्वीप मे दूसरी तरफ कौन बसते है ?
उ०—तिर्यञ्च पशु, पक्षी आदि ।

३६. प्र०—पुष्कर द्वीप के आगे लोक मे क्या-क्या हैं ?
उ०—असख्याता द्वीप समुद्र एक-एक से दुगुणे होते गये है उन द्वीपो मे असख्याता देवताओ के नगर हैं सबसे अन्त का और सबसे बडा स्वयभू रमण समुद्र है । स्वयभू रमण समुद्र ने ही अर्द्धराज-जितनी जगह रोकली है । इस समुद्र के चौतरफ बारह जोजन घनोदधि घनवाय वा तनवाय है, यहा ही तिर्छा लोक का अत होता है । बाद मे अलोक है ।

पाठ–५

साधुजी का आचार

१. प्र०—तीर्थ कितने हैं ?
उ०—चार; साधु, साध्वी, श्रावक, और श्राविका ।

२. प्र०—साधुजी किसको कहते है ?
उ०—जो पच महाव्रत पालते है उनको ।

३. प्र०—महाव्रत मायने क्या ?
उ०—बडाव्रत ।

४. प्र०—साधुजी का पहला महाव्रत कौनसा है ?
उ०—किसी जीव की हिंसा (मारना) करना नही, कराना नही और हिंसा करने वाले को भला भी

समझना नही ।

५. प्र०—साधुजी का दूसरा महाव्रत कौनसा है ?
उ०—किसी तरह भी झूठ बोलना नही, बोलाना नहीं और झूठ बोलने वाले को भला भी समझना नही ।

६. प्र०—साधुजी का तीसरा महाव्रत कौनसा है ?
उ०—किसी प्रकार की चोरी करनी नही, कराना नही, और चोरी करने वाले को भला भी समझना नही ।

७ प्र०—साधुजी का चौथा महाव्रत कौनसा है ?
उ० -नववाड युक्त शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करना यानी सर्वथा मैथुन का त्याग करना, कराना, तथा मैथुन सेवन करने वाले को भी भला नही समझना ।

८. प्र०—साधुजी का पांचवा महाव्रत कौनसा है ?
उ०—धन, दौलत आदि नही रखना, नही रखना, और परिग्रह रखने वाले को भला भी नही समझना ।

९ प्र०—इन पांच महाव्रतो के सिवाय भी कोई छट्ठा महाव्रत है ।

१२. प्र०—साधुजी अपना मकान छोड कर त्यागी क्यों होते है ?

उ०—धर्म ध्यान से अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिये ।

१३. प्र०—क्या ससार मे रह कर अपनी आत्मा का कल्याण वे नही कर सकते ?

उ०—ससार मे कुटुम्ब आदि को पालने के लिये धन कमाना आदि कई कार्य करने पडते है जिसमे सम्पूर्ण जीवो की दया पालनी मुश्किल है। ससार के झगडो में फसे हुए मनुष्य को परोपकार के लिये व आत्म कल्याण के लिये पूरा वक्त मिलना असभव है ।

१४. प्र०—क्या साधुजी सारादिन धर्म ध्यान ही मे निकालते है ?

उ०—आहार निहार आदि, शारिरीक कारण टाल-कर बाकी सारा ही दिन धर्म ध्यान ही मे लगाते है।

१५. प्र०—सारा ही दिन धर्म ध्यान मे लगाते है तो खाते पीते कहां से है ?

उ०—बयालीस दोष रहित गोचरी करके आहार पानी गाव मे से लाते है ।

१६. प्र०—गोचरी मायने क्या ?

उ०—जैसे गाय ऊपर-ऊपर से घास खाती है, और घास-उगने मे हरज आता नही हैं उसी तरह साधुजी बहुत घरो से थोडा-थोडा निर्दोश आहार लाते है। घर घणी को फिर रसोई करणी पडती नही है, जिस घर मे आहार पानी ज्यादा नही है

भारंड पंखी

१२. प्र०—साधुजी अपना मकान छोड कर त्यागी क्यों होते है ?

उ०—धर्म ध्यान से अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिये।

१३. प्र०—क्या ससार मे रह कर अपनी आत्मा का कल्याण वे नही कर सकते ?

उ०—ससार मे कुटुम्ब आदि को पालने के लिये धन कमाना आदि कई कार्य करने पडते है जिसमे सम्पूर्ण जीवों की दया पालनी मुश्किल है। ससार के झगडो में फसे हुए मनुष्य को परोपकार के लिये व आत्म कल्याण के लिये पूरा वक्त मिलना असभव है।

१४. प्र०—क्या साधुजी सारादिन धर्म ध्यान ही मे निकालते हैं ?

उ०—आहार निहार आदि, शारिरीक कारण टाल-कर बाकी सारा ही दिन धर्म ध्यान ही मे लगाते है।

१५. प्र०—सारा ही दिन धर्म ध्यान मे लगाते है तो खाते पीते कहा से है ?

उ०—बयालीस दोष रहित गोचरी करके आहार पानी गाव मे से लाते है।

१६. प्र०—गोचरी मायने क्या ?

उ०—जैसे गाय ऊपर-ऊपर से घास खाती है, और घास-उगने मे हरज आता नहीं है उसी तरह साधुजी बहुत घरो से थोडा-थोडा निर्दोश आहार लाते है। घर धणी को फिर रसोई करणी पडती नही है, जिस घर मे आहार पानी ज्यादा नही है

भारंड पंखी

वहां से कुछ भी लेते नही है ।

१७. प्र०—साधुजी का पोशाक कैसा होता है ?
उ०—वे धोती की जगह चोल पट्टा पहनते हैं, चद्दर ओढते हैं, मुंह पर मुह पति, हाथ मे रजोहरण (ओघा) और पातरा रखते है । सिर और पाव खुले ही रखते हैं ।

१८. प्र०—साधुजी दिन मे कितने वार पडिलेहणा करते है ?
उ०—दो वार यानि सुवह और शाम को चौथी पहर के शुरूआत मे ।

१९ प्र०—पडिलेहण मायने क्या ?
उ०—अपने पास रहे हुए कपडे, ओघा, पातरा, शास्त्र आदि मे जीव जन्तु का देखना । कोई जीव उसमे हो तो यतना से दूसरी जगह छोड देना ।

२०. प्र०—साधुजी व आर्याजी किनती वार प्रतिक्रमण करते है ?
उ०—दो वार सुवह, शाम ।

२१. प्र०—साधुजी एक ही गाव मे कितने दिन ठहर सकते हैं ?
उ०—एक साल मे एक गाव में सारा चौमासा और शेष (वाकी) काल मे साधुजी एक गाव में एक महिना और आर्याजी दो महिने तक ठहर सकते है ।

२२, प्र०—एक गाव से विहार कर जाने के वाद उसी गाव में साधुजी व आर्याजी फिर कव आ सकते है ?
उ०—जितने दिन ठहरे हैं। उन से दूगने दिन छोड कर फिर उसी ग्राम में पधार सकते है ।

२३. प्र०—साधुजी रास्ते में नीचे देख-देख कर क्यो चलते है ?
उ०—जीव जन्तु या वनस्पति आदि जीवो की रक्षा के लिये ।

२४ प्र०—अधेरे मे किस तरह चलते है ?
उ०—रजोहरण (ओघा) मे पूंजकर ।

२५ प्र०—साधुपना सहित जीव शरीर छोडकर किस गति मे जाता है ?
उ०—देव गति में या मोक्ष में ।

पाठ–६

सचेत अचेत की पहिचान

१ प्र०—साधुजी जल कैसा काम मे लाते है ?
उ०—अचेत यानि जीव रहित ।

२ प्र०—कुआ, तालाब, नदी, नल आदि का पानी कैसा होता है ?
उ०—सचेत यानि जीव सहित ।

३ प्र०—पानी की एक बूंद मे कितने जीव होते हैं ?
उ०—असख्याता[1] यानि गिनती मे ही नही आवे ।

४. प्र०—गिनती मे आवे उसे क्या कहते हैं ?
उ०—सख्याता ।

५. प्र०—बरसात का पानी कैसा होता है ?
उ०—सचेत यानि जीव सहित ।

नोट—[1]वर्तमान मे एक डाक्टर ने माइक्रमवीय यत्र द्वारा पानी की एक बूद मे ३६ हजार से ज्यादा जीवों को चित्र न. २ मे देखे।

६. प्र०—सचेत पानी अचेत कैसे होता है ?

उ०—गर्म करने से या कई दूसरी चीजो के सयोग से पानी के जीव मर जाते है, जैसे-चावल के धोने से, आटे की कठोती आदि धोने से, द्राक्ष (दाख) अमचूर आदि कई वस्तुओ के धोने से पानी अचेत हो जाता है।

७ प्र०—साधुजी सचेत पानी क्यो नही लेते है ?'

उ०—पानी के जीवो की दया के लिये।

८ प्र०—पानी (अपकाय) के जीवो की दया के लिये साधु जी और क्या करते है ?

उ०—चौमासे में चार महिना एक ही गाव में ठहरते हैं और वरसात में गोचरी को भी नही जाते है।

९. प्र०—साधुजी खुराक (भोजन) कैसा करते है ?

उ०—अचेत यानि जीव रहित ।

१०. प्र०—शाक (साग) भाजी सचेत है या अचेत ?

उ०—कच्ची लीलोती सचेत और राधी हुई अचेत।

११. प्र०—लीलोती राध ने से कैसे अचेत हो जाती है ?

उ०—अग्नि के सयोग से लीलोती के जीव मर जाते है।

१२. प्र०—क्या कच्ची लीलोती साधुजी खाते है ?

उ०—सचेत होने से नही खाते है।

नोट—'यदि साधुजी के लिये कोई चाह करके पानी को अचेत करके दे तो साधुजी को ऐसा अचेत जल भी अकल्पनीय है इसलिये नही ले सकते। यदि साधु के निमित्त वनाया आहार पानी जान कर साधु लेवे तो वे सयम के घर से दूर हैं। ऐसा समझो।

१३. प्र०—कच्चा अनाज साधुजी खाते हैं ?
उ०—नही यह भी सचेत है ।

१४. प्र०—सचेत अचेत अनाज कैसे मालूम होता है ?
उ०—जो अनाज बोने से उगता है वह सचेत और बोने से नही उगता वह अचेत होता है ।

१५ प्र०—चावल सचेत या अचेत ?
उ०—चावल तो, उपर का फूस निकल जाने से अचेत है और शाल सचेत है ।

१६. प्र०—ज्वार, बाजरा, गेहूँ, मूग, चना, उडद, मोठ, मक्की, आदि सचेत या अचेत ?
उ०—यह सभी सचेत है क्योंकि बोने से उगता है ।

१७. प्र०—उडद या मूग की दाल सचेत या अचेत ?
उ०—दाल मात्र अचेत होती है ।

१८ प्र०—आटा सचेत या अचेत ?
उ०—अचेत ।

१९ प्र०—कैसा आटा, दाल साधुजी के लिये अकल्पनीय है ?
उ०—तुरत की बनाई हुई दाल या पीसा हुआ आटा सचेत होने से साधुजी को अकल्पनीय है ।

२०. प्र०—कच्चा नमक (लूण) सचेत या अचेत ?
उ०—सचेत ।

२१. प्र०—नमक मे किस काय के जीव हैं ?
उ०—पृथ्वी काय के ।

२२. प्र०—पृथ्वी काय के जीव और किस-किस मे हैं ?
उ०—खड्डी, खार, मिट्टी, पत्थर, हिंगलू, हरताल, गेरु; गोपी, चन्दन, रत्न, परवाल (मोती) आदि मे ।

२३. प्र०—ज्वार के दाना जितने पृथ्वी काय मे कितने जी हैं ?

एक बूँद पानी का चित्र

उ०—असख्याता ।

२४ प्र०—पाणी मे किस काय के जीव है ?

उ०—अप काव के ।

२५ प्र०—हरी लीलोती मे किस काय के जीव हैं ?

उ०—वनस्पति काय के जीव ।

२६. प्र०—वनस्पति काय के जीव कहा-कहा रहते हैं ?

उ०—पेड, पौधा, जड, धड, शाखा, प्रतिशाखा, फूलपता, वीज आदि हरि मे जीव होता है ।

२७. प्र०—वनस्पति काय के जीव कितनी प्रकार के होते हैं ?

उ०—दो, प्रत्येक और साधारण ।

२८ प्र०—प्रत्येक वनस्पति काय किस को कहते हैं ?

उ०—प्रत्येक (हर एक) शरीर मे एक जीव होता है ।

२९. प्र०—साधारण वनस्पति किस को कहते है ?

उ०—प्रत्येक शरीर मे अनन्ता जीव होते हैं उसे साधारण वनस्पति कहते है ।

३० प्र०—वनस्पति मे कितने जीव होते हैं ।

उ०—उगते अकूरे में अनता जीव, कच्ची में असख्याता और पक्की में सख्यता जीव ।

३१ प्र०—साधुजी आम या आम का रस ले सकते हैं ?

उ०—गुठली सजीव होने से पूरा आम नही ले सकते किन्तु आम का रस कुछ देर से ले सकते हैं ।

३२. प्र०—साधुजी घी ठडा लेते है या गरम ?

उ०—दोनो (गर्म और जमा हुआ) ले सकते हैं ।

३३. प्र०—साधुजी तेल, दूध, दही, छाछ, शक्कर, गुड, आदि ले सकते हैं ?

उ०—हा यह सभी अचेत होने से ले सकते हैं ।

३४. प्र०—साधुजी खारा ले सकते हैं ?

उ०—खारा सचेत होने से नही ले सकते ।

३५. प्र०—क्या अचेत वस्तु भी हमेशा ले सकते हैं ?

उ०—नही; असूझता आहार पानी अचेत होने पर भी साधुजी नही ले सकते हैं ।

३६. प्र०—असूझता मायने क्या ।

उ०—अचेत निर्दोष वस्तु सचेत वस्तु के साथ लगी हो या आहार पाणी देते वक्त सचेत वस्तु का स्पर्श (संघटा) हो जाये तो अचेत वस्तु भी साधुजी को लेना अकल्पनीय है ।

३७. प्र०—साधुजी को आहार पानी देते वक्त किन-किन वस्तुओ को नही छुना चाहिये ?

उ०—जो जो वस्तु सचेत हो जैसे पृथ्वी काय (खट्टी, खार, लूण आदि) अपकाय (पानी सचेत) तेउकाय (अग्नि आदि) वायुकाय (फूंक मार के कोई चीज नही देना) वनस्पति (लीलोती) को नही छूना चाहिए ।

३८. प्र०—साधुजी को आहार पानी देते समय अग्नि को क्यो नही छूना चाहिए ?

उ०—अग्नि के छोटे से चिनगारे मे भगवन्तो ने असंख्याता जीव फर्माये है ।

३९ प्र०—उन जीवों को क्या कहते हैं ?

उ०—अग्नि काय या तेउकाय ।

४०. प्र०—साधुजी को आहार पानी देते समय फूंक क्यों नही मारना चाहिए ।

उ०—फूंक से वायुकाय के जीव मर जाते हैं ।

४१. प्र०—वायरे के जीव कैसे मर जाते हे ?
उ०—खुला मुंह बोलने से, झटकने से, ढोल, घटा, झालर आदि के वाजाने से वायुकाय के जीव मरते हैं ।

४२. प्र०—एक समय खुला मुह बोलने से कितने वायुकाय के जी मर जाते हैं ?
उ०—असख्याता ।

४३ प्र०—पृथ्वी काय मायने क्या ?
उ०—पृथ्वी के जीव जैसे खड्डी, खार, मिट्टी, पत्थर, लूण, आदि ।

४४ प्र०—अप्काय मायने क्या ?
उ०—पानी के जीव, नल, कूआ, तालाव, वरसात, वर्फ (हिम) आदि ।

४५ प्र०—तेउकाय मायने क्या ?
उ०—अग्नि के जीव जैसे चिनगारा, ज्वाला अंगिरा, विजली आदि ।

४६. प्र०—वायु काय मायने क्या ?
उ०—वायरे के जीव ।

४७. प्र०—वनस्पति काय मायने क्या ?
उ०—लीलोती के जीव जैसे आम, जाम, भाजी, फूल, पत्ते आदि ।

पाठ-७

त्रस व स्थावर जीव

१. प्र०—पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, और वनस्पति के जीव क्या स्वयं (खुद) हल चल सकते है ?
उ०—नही, वे स्वयं हल चल नही सकते ।

२. प्र०—जो जो जीव स्वय हल चल नही सकते उन्हे क्या कहते है ?
उ०—स्थावर ।

३. प्र०—जो जीव स्वयं हल चल सकते है उन्हे क्या कहते है ।
उ०—त्रस ।

४. प्र०— तुम कैसे हो, त्रस या स्थावर ?
उ०—त्रस ।

५. प्र०—हाथी, घोडा, ऊट, गाय, भैस, आदि जीव त्रस हैं या स्थावर ?
उ०—त्रस ।

६. प्र०—मक्खी, मकोडा, चीटी आदि त्रस या स्थावर ?
उ०—त्रस ।

७. प्र०—नीम, पीपल, आम, आदि वृक्ष त्रस या स्थावर ?
उ०—स्थावर ।

८. प्र०—आलमरी, दीवाल, स्लेट (पाटी) आदि त्रस है या स्थावर ?
उ०—इसमे जीव नही है अर्थात् जड है ।

९. प्र०—नमक (लूण) के जीव त्रस या स्थावर ?
उ०—स्थावर ।

१०. प्र०—शंख, शीप, कोडी आदि त्रस हैं या स्थावर ?
उ०—त्रस ।

११ प्र०—घडी, फोनोग्राफ, रेल, वायुयान आदि त्रस हैं या स्थावर ?
उ०—इनमे जीव नही है यह जड है कलो से चलते हैं।

१२ प्र०—जीव के मुख्यभेद कितने हैं ?
उ०—दो, त्रस और स्थावर ।

१३ प्र०—स्थावर के कितने भेद है ?
उ०—पाच, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय वायुकाय, और वनिस्पति काय ।

१४. प्र०—कुल कितने काय के जीव हैं ?
उ०—छ काय के, पृथ्वी, अप, तेउ, वायु, वनि- स्पति और त्रस काय ।

१५ प्र०—छः काय जीवो के जाति आश्रिय कितने भेद हैं ?
उ०—पाच, एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पचेन्द्रिय ।

१६ प्र०—गति आश्रिय जीवों के कितने भेद हैं ?
उ०—चार, नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य और देवता ।

१७ प्र०—सभी जीवो के विस्तार से कितने भेद हैं ?
उ०—पाच सो त्रेसठ (५६३) ।

१८. प्र०—५६३ भेद मे से हर एक गति के कितने-कितने भेद हैं ?
उ०—नारकी के १४, तिर्यञ्च के ४८, मनुष्य के ३०३ और देवता के १९८ सब मिला के ५६३ हुए ।

पाठ- ८

महावीर शासन

१. प्र०—अपन कौनसा धर्म पालते है ?
उ०—जैन धर्म ।

२. प्र०—"जैन धर्म" ऐसा नाम किस तरह हुआ ?
उ०—जिन परमात्मा का प्ररूपित (स्थापित) किया हुआ होने से जैन धर्म ऐसा नाम हुआ ।

३. प्र०—जिन का अर्थ क्या है ?
उ०—रागद्वेष को जितने वाले ।

४. प्र०—"जिन" के और नाम क्या-क्या हैं ?
उ०—तीर्थंकर, वीतराग, अरिहन्त, परमात्मा, प्रभु आदि ।

५. प्र०—अपन किस तीर्थंकर के शासन मे हैं ?
उ०—चौबीसवें महावीर प्रभु के शासन मे है ।

६. प्र०—महावीर प्रभु की मातुश्री का क्या नाम है ?
उ०—त्रिशला देवी ।

७. प्र०—महावीर प्रभु के पिता का क्या नाम है ?
उ०—सिद्धार्थ राजा ।

८. प्र०—महावीर प्रभु की जाति क्या थी ?
उ०—क्षत्रिय (राजपूत)

९. प्र०—सिद्धार्थ राजा की राजधानी किस शहर मे थी ?
उ०—क्षत्रिय कुण्ड नगर मे ।

१०. प्र०—सिद्धार्थ राजा के कुंवर कितने थे ?
उ०—दो, नन्दीवर्द्धन और महावीर ।

११ प्र०—महावीर स्वामी के शरीर का वर्ण कैसा था ?
उ०—स्वर्ण (सोना) जैसा ।

१२. प्र०—श्री महावीर प्रभु का देहमान (शरीर का ऊचापन) कितना था ?
उ०—सात हाथ का ।

१३. प्र०—श्री महावीर प्रभु का आयुष्य कितना था ?
उ०—बहत्तर (७२) वर्ष ।

१४ प्र०—श्री महावीर प्रभु ने कितने वर्ष की उम्र में दीक्षा ली ?
उ०—३० वर्ष की वय मे ।

१५ प्र०—दीक्षा लेने के बाद धर्म की प्ररुपना कब की ?
उ०—बारह वर्ष छह मास और पन्द्रह दिन बाद केवल ज्ञान उत्पन्न होने पर ।

१६ प्र०—केवल ज्ञान का अर्थ क्या है ?
उ०—सम्पूर्ण ज्ञान ।

१७. प्र०—केवल ज्ञान होने पर श्री महावीर प्रभु ने क्या किया ?
उ०—केवल ज्ञान से लोक मे त्रस और स्थावर जीवो को दुखी देखकर उनको दुख. से मुक्त करने के लिये मोक्ष मार्ग फर्माया । अनेक जीवो को ससार सागर से पार उतारे, अनेक जीवो की दया का पालक साधु वर्ग स्थापित किया । दानादिक अनेक उत्तम गुणो से अलकृत श्रावक वर्ग भी बनाया और अपूर्व ज्ञान भडार गणधर देव को दिया, जिन्होने शास्त्र बनाया अन्त मे तीस वर्ष केवल प्रवर्ज्या पाल सिद्ध गति को प्राप्त हुए ।

१९. प्र०—श्री महावीर प्रभु ने धर्म की प्ररूपना की, इससे पहिले जगत मे जैन धर्म था या नही ?

उ०—जैन धर्म अनादि व शाश्वत है। इस जगत् में कम से-कम २० तीर्थंकर दो करोड केवली और दो हजार करोड साधु साध्वी महाविदेह क्षेत्र मे हमेशा विद्यमान रहते है। अपने इस भरतक्षेत्र मे भी महावीर प्रभु के पहिले अनन्ता तीर्थंकर हो गये, आने वाले काल के अनन्ता होवेंगे, वे सभी जैन धर्म का पुनरुद्धार करेगे।

पाठ–९

पुण्य तत्व व पाप तत्व

१. प्र०—सर्व जीव समान होने पर भी कई जीव भूखे मरते है, और अपने को खाने-पीने, रहने आदि का सब सुख मिलता है, इसका क्या कारण है ?

उ०—अपन ने पूर्ण भव मे सुभ कमाई की है, उसका अच्छा फल आज अपन भोग रहे है और रक या दुखी जीवो ने पूर्व भव मे अशुभ कमाइ की है उनका बुरा फल वे इस समय भोग रहे है।

२. प्र०—शुभ और अशुभ कमाई का अर्थ क्या है ?

उ०—शुभ कमाई का अर्थ पुण्य और अशुभ कमाई का अर्थ पाप है।

३. प्र०—शुभ कमाई यानि पुण्य क्या करने से होता है ?

उ०—दूसरे जीवो को शाति देने से, परोपकार, दया, सत्य, शील, क्षमा, तप, नियम, व्रत, पच्चक्खाण, विनय आदि गुणो का पालन करने से और माता पिता गुरु जनो की सेवा करने व इनका दिल नही दुखाते हुए नीतिमय आज्ञा को पालन करने से।

४ प्र०—जीव पाप कैसे करते हैं ?

उ०—अपनी और दूसरो की आत्मा को क्लेश उपजाने से, चोरी (कम तोलना, कम नापना) हिसाब मे ज्यादा-कमती कर देना, रिश्वत (सू क) लेकर दूसरे का बिगाड कर देना, अच्छी वस्तु दिखाके खोटी दे देना। झूठ बोलना, झूठी साक्षी देना, विश्वास-घात करना, कन्या बेचना, तमाकू पीना, जुआ, मासाहार, मद्यपान करना, वेश्यागमन, शिकार, परस्त्री सेवन करना आदि से।

५ प्र०—पुण्य के फल कैसे होते हैं ?

उ०—मीठे व जीव को प्रियकारी।

६ प्र०—पाप के फल कैसे होते हैं ?

उ०—कडवे व जीव को कष्टकारी।

७ प्र०—क्या राजा कभी रक (गरीब) भी हो जाता है ?

उ०—हा, उसके पाप कर्म के उदय से हो सकता है।

८ प्र०—तब क्या रक भी राजा हो सकता है ?

उ०—हा, पुण्य का उदय होने से रक भी राजा हो जाता है।

९. प्र०—पुण्य पाप का उदय होना किसको कहते है ?

उ०—किये हुए पुण्य पाप का जब अपन को नतीजा

(फल) मिलता है। यानि फलदाता।

१०. प्र०—आज अपने जो पुण्य या पाप करते हैं उनका उदय (फल) कब होगा ?

उ०—कई कर्म तो ऐसे होते है जो आज का आज ही फल देते है जैसे चोरी करते ही पकडा जावे उसको ताडन तर्जन कठोर वचन आदि से या खोडा बेडी आदि से कष्ट रूप फल मिलता है। और कई कर्म ऐसे होते है जो सख्याता असख्याता अनन्ता भव मे भी कर्मो का फल मिलता है।

११. प्र०—क्या पाप करने वाले जीवो का पुण्य का उदय होता है ?

उ०—हां, कितनेक पापी जीव चोर जार (व्यभिचारी) कसाई आदि वर्तमान मे पाप कर्म करते रहने पर भी धन, धान्य, पुत्र, कलत्र आदि के सुख भोगते है यह उनके पूर्व सचित पुण्य का ही उदय है।

१२. प्र०—क्या पुण्य करने वाले जीवों को पाप का उदय होता है ?

उ०—हां, कितनेक धर्मात्मा अच्छे कार्य करते रहने पर भी दुःखी नजर आते है यह उनके पूर्व सचित पाप का ही उदय है।

१३. प्र०—पुण्य पाप का समावेश जीव तत्व मे होता है या अजीव तत्व मे ?

उ०—पुण्य पाप के पुद्गल अजीव (जड) होने से उनका समावेश अजीव तत्व मे ही होता है।

१४. प्र०—पुण्य पाप के पुद्गल रूपी है या अरूपी ?

उ०—रूपी है, अपन उनको अति सूक्ष्म होने से नही देख सकते, किन्तु केवली भगवान ही देख सकते हैं।

१५ प्र०—पुण्य के उदय से जीव कौन-कौन सी गति में जाता है ?

उ०—देवगति या मनुष्य गति मे।

१६ प्र०—मनुष्य गति मे भी कई जीव नीच गोत्र में जन्मते हैं और अनेक कष्ट पाते है वे किस कारण से ?

उ०—पाप के उदय से।

१७ प्र०—पाप के उदय से जीव कौन-कौन सी गति में उपजेत है ?

उ०—नरक व तिर्यञ्च गति में।

१८ प्र०—तिर्यञ्च गति में भी कई जीव शाता वेदनीय और दीर्घायुष्य पाते हैं वे किस कारण से ?

उ०—पुण्य के उदय से।

१९ प्र०—नरक के अनन्त दुख भोगते हुए जीवो के पास "शुभ कर्म पुद्गल" यानि पुण्य है या नही ?

उ०—चारो ही गति में भटकने वाले जीवो के पास पुण्य या पाप दोनो प्रकार के पुद्गल होते हैं।

२० प्र०—पुण्य या पाप अर्थात् शुभाशुभ कर्मों से छुटे हुए जीव कौनसी गति को पाते हैं ?

उ०—सिद्ध गति यानि मोक्ष।

२१. प्र०—सिद्ध गति यानि मोक्ष के साधन में क्या पुण्य की जरूरत है ?

उ०—हा, पुण्य के उदय बिना मनुष्य भव आर्यक्षेत्र, उत्तम-कुल आदि का सयोग नही मिलता है। और ऐसे सयोग मिले बिना कभी भी मोक्ष का

साधन नही हो सकता ।

२२. प्र०—सिद्ध गति पाने के वाद क्या पुण्य की आवश्यता है ?
उ०—नही, जैसे समुद्र से किनारे पहुचने के लिए नाव की जरूरत है किन्तु किनारे पहुच जाने के वाद नाव की आवश्यकता नही रहती, वैसे ही ससार समुद्र मे से मोक्ष रूप किनारे पर पहुँचने के लिए पुण्य के सहारे की जरूरत है किन्तु मोक्ष मे पहुच जाने के वाद पुण्य की जरूरत नही। और जहा तक अपने नाव मे बैठे रहे वहां तक किनारा भी प्राप्त नही होता है, वैसे ही जहा तक पुण्य है वहा तक मोक्ष की भी प्राप्ति नही हो सकती यानि पुण्य और पाप दोनो का क्षय होने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

पाठ–१०

मनुष्य के भेद

१. प्र०—मनुष्य के मुख्य भेद कितने और कौन-कौन से ?
उ०—चार; कर्मभूमि के, अकर्मभूमि के, अन्तर द्वीपा के और समूर्च्छिम मनुष्य ।

२. प्र०—कर्मभूमि किसको कहते हैं ?
उ०—जिस भूमि के मनुष्य असि (तलवार शस्त्र आदि) मसि (स्याही से लिखना आदि) कृषि (खेती) इन

तीनों द्वारा मनुष्य अपनी आजीविका चलाते हैं उसे कर्मभूमि कहते हैं।

३ प्र०—इन तीनो प्रकार का व्यापार यहा है ?
उ०—हा ।

४. प्र०—इस भूमि को क्या कहते हैं ?
उ०—कर्मभूमि ।

५. प्र०—कर्मभूमि के कितने क्षेत्र हैं ?
उ०—पन्द्रह, ५ भरत, ५ ईरवृत, ५ महाविदेह।

६ प्र०—इन पन्द्रह मे से अपन किस क्षेत्र मे रहते हैं ?
उ०—भरत क्षेत्र मे

७ प्र०—भरत क्षेत्र कितने हैं ?
उ०—पाच ।

८ प्र०—इन पाच मे से जम्बूद्वीप मे कितने भरत हैं ?
उ०—एक ।

९. प्र०—बाकी के चार भरत कौन से द्वीप मे है ?
उ०—दो धातकी खण्ड में दो अर्द्ध पुष्कर में।

१० प्र०—अपन वहां जा सकते हैं या नही ?
उ०—देवता की सहायता बिना अपन वहां नही जा सकते ।

११ प्र०—देवता की सहायता बिना भी कोई वहां जा सकते है ?
उ०—हा, लब्धिधारी मुनिराज ।

१२ प्र०—ऐसे मुनिराज अभी कहां हैं ?
उ०—पाच महाविदेह क्षेत्र मे ।

१३ प्र०—पाच महाविदेह मे तीन प्रकार का व्यापार है ?
उ०—हा, है।

१४ प्र०—पांच महाविदेह मे से जम्बूद्वीप मे कितने महाविदेह है ?

उ०—एक ।

१५ प्र०—बाकी के चार कहां है ?

उ०—दो धातकी खन्ड मे दो अर्द्ध पुष्कर द्वीप मे ।

१६. प्र०—पाच भरत और पाच महाविदेह के सिवाय और पाच क्षेत्रो के क्या नाम है ?

उ०—ईरवृत ।

१७ प्र०—पाच ईरवृत क्षेत्र कहा-कहां हैं ?

उ०—एक जम्बूद्वीप मे, दो धातकी खण्ड मे और दो अर्द्ध पुष्कर द्वीप मे ।

१८. प्र०—कर्मभूमि के पन्द्रह क्षेत्र छोटे बडे हैं या एक सरिखे ?

उ०—एक ही द्वीप मे भरत ईरवृत क्षेत्र विस्तार और आकार मे एक सरीखे हैं, और उसी ही द्वीप मे महाविदेह क्षेत्र बडा है । ऐसे ही जम्बूद्वीप से धातकी खण्ड के क्षेत्र बडे है । और धातकी खड से अर्द्ध पुष्कर द्वीप के क्षेत्र बडे है ।

१९. प्र०—जम्बूद्वीप मे भरत ईरवृत और महाविदेह क्षेत्र कहा-कहा है ?

उ०—दक्षिण मे भरत, उत्तर मे ईरवृत और बीच मे महाविदेह ।

२१. प्र०—अकर्म भूमि किसको कहते है ?

उ०—जहा के लोग असि, मसि, कृषि के व्यापार बिना दस प्रकार के कल्पवृक्ष से अपना जीवन चलाते है उसे अकर्म भूमि कहते है ।

२२. प्र०—कल्पवृक्ष का अर्थ क्या ?

उ०—मनोवाञ्छित वस्तु देने वाले वृक्ष ।

२३ प्र०—अकर्मभूमि के कितने क्षेत्र हैं ?
उ०—तीस, पाच हेमवय, पाच हिरण्यवय पाच हरिवास पाच रम्यकवास पाच देवकुरु पाच उत्तर कुरु ।

२४ प्र०—जम्बूद्वीप मे अकर्मभूमि के कितने क्षेत्र हैं ?
उ०—छ १ हेमवय १ हिरण्यवय १ हरिवास १ रम्यकवास १ देवकुरु १ उत्तरकुरु ।

२५ प्र०—अर्द्धपुष्कर द्वीप में और घातकी खड में अकर्मभूमि के कितने कितने क्षेत्र है ?
उ०—बारह-बारह (दो हे व, दो हि. ब, दो हरि, दो, रम्य, दो देव, दो उत्तर)

२६ प्र०—अकर्मभूमि के मनुष्य कैसे होते हैं ?
उ०—जुगलिया ।

२७ प्र०—उनको जुगलिया क्यो कहते है ?
उ०—वहा स्त्री पुरुष साथ ही युगल जोडी से जनमते हैं इसलिये उन्हे जुगलिया कहते है ।

२८ प्र०—प्रत्येक युगलनी कितने पुत्र पुत्री को जन्म देती है ?
उ०—एक जोडी, जिसमें एक लडका और एक लडकी ।

२९ प्र०—हेमवय हिरण्यवय में जुगलनी अपने पुत्र पुत्री को कितने दिन पालन पोषण करती है ?
उ०—७९ (गुणियासी) दिन पालन करती है ।

३० प्र०—हरिवास रम्यक वास में जुगलनी अपने पुत्र पुत्री को कितने दिन प्रतिपालन करती है ?
उ०—६४ दिन ।

३१ प्र०—देवकुरु उत्तरकुरु मे कितने दिन पालती है ?
उ०—४९ दिन ।

३२. प्र०—इतने छोटे बच्चो के मां बाप मर जाते हैं। तो उन बेचारों का क्या हाल होता होगा ?

उ०—वे उस समय मा बाप जितने बडे हो जाते हैं और वो भाई बहिन स्त्री पुरुष होकर रहते है और कल्पवृक्ष से मनोवाछित सुख भोगते है।

३३ प्र०—भाई बहिन स्त्री पुरुष हो जाते है यह अयोग्य रिवाज कैसे है ?

उ०—यह रिवाज जुगलियो मे अनादिकाल से चला आरहा है; इनमे व्यभिचार, चोरी, झूठ, झगडा, वैर विरोध कुछ होता नही है।

३४. प्र०—जुगलियो मे स्त्री की आयुष्य ज्यादा या पुरुष की ?

उ०—दोनो की समान आयुष्य है दोनो साथ ही जन्मते हैं और साथ ही मरते है।

३५ प्र०—जुगलिया का आयुष्य कितना होता है ?

उ०—हेमवय हिरण्यवय मे एक पल्योपम, हरिवास रम्यकवास मे दो पल्योपम, देवकुरु उत्तरकुरु मे तीन पल्योपम।

३६. प्र०—जुगलिया का उत्कृष्ठ अवघेणा (ऊचापन) कितना होता है ?

उ०—हेमवय हिरण्यवय में एक कोस, हरिवास रम्यकवास मे दो कोस, देवकुरु उत्तरकुरु में तीन कोस।

३७. प्र०—जुगलिया मरकर किस गति में जाते है ?

उ०—देवगति में।

३८. प्र०—जुगलिया कौनसा धर्म पालते है ?

उ०—वे कोई धर्म नही पालते, वे भद्रीक हैं।

३९. प्र०—तीस अकर्मभूति के सिवाय और जगह भी जुग-

लिया के क्षेत्र हैं ? यदि है तो कहां हैं ?

उ०—लवण समुद्र मे ५६ अन्तरद्वीप मे हैं उसमे जुगलिया के ५६ क्षेत्र हैं।

४० प्र०—अन्तर द्वीप नाम क्यो कहा जाता है ?

उ०—समुद्र मे अन्तरिक्ष होने से अधर हैं उसको अन्तर द्वीप कहते है।

४१ प्र०—अधर कैसे रहे होगे ?

उ०—पर्वत की दाढो पर होने से समुद्र मे अधर हैं।

४२ प्र०—ऐसीं दाढें कितनी है ?

उ०—आठ।

४३ प्र०—यह आठ दाढ़ें किस-किस पर्वत से निकली हैं ?

उ० चार चुल हिमवन्त पर्वत से और चार शिखरी पर्वत से।

४४. प्र०—चुल हिमवन्त और शिखरी पर्वत कहा हैं ?

उ०—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के उत्तर में चुल हिमवन्त पर्वत है और ईरवृत क्षेत्र के दक्षिण में शिखरी पर्वत है।

४५ प्र०—चुलहिमवन्त व शिखरी पर्वत छोटे बडे है या एक सरीखे ?

उ०—दोनो बराबर हैं।

४६ प्र०—चुलहिमवन्त और शिखरी पर्वत जमीन मे कितने हैं ? और जमीन के उपर कितने ऊचे है ?

उ०—जमीन मे २५ जोजन और ऊपर १०० जोजन।

४७. प्र०—यह चुलहिमवन्त और शिखरी पूर्व पश्चिम में लम्बे कितने है ?

उ०–२४९३२ जोजन।

४८. यह दोनो पर्वत उत्तर दक्षिण चौडे कितने हैं ?
उ०—१०५२ जोजन १२ कला के चौडे है ।
४९ प्र०—इन प्रत्येक दाढो की लम्बाई कितनी है ?
उ०—८४०० जोजन की ।
५०. प्र०—एक-एक दाढ पर कितने-कितने द्वीप है ?
उ०—सात-सात ।
५१. प्र०—जगति का कोट कहा है ?
उ०—इस जम्बूद्वीप के चारो ही तरफ जगति का कोट है ।
५२. प्र०—जगति के कोट से कितने अन्तर पर द्वीप है ?
उ०—जगति के कोट से ३०० जोजन आगे जावें जब ३०० जोजन का लम्बा चौडा पहला अन्तर द्वीप आता है, वहां से ४ सौ जोजन आगे और उतना ही लम्बा चौडा द्वीप आता है, और वहा से ५ सौ जोजन दूर ५ सौ जोजन का लम्बा चौडा, ६ जोजन जावे जब ६ सौ जोजन का लम्बा चौडा, ७ सौ जोजन जावे जब ७ सौ जोजन का लबा चौडा पाचवा अतर द्वीप, और ८ सौ जोजन जावे जब ८ सौ जोजन का लम्बा चौडा छट्ठा अन्तर द्वीप आता है। वहां से ९ सौ जोजन का सातवां अन्तर द्वीप आता है, इस तरह से ८ दाढो मे मिलकर ५६ अन्तर द्वीप लवण समुद्र मे पानी के समाटे से ढाई जोजन से ज्यादा ऊचा है।
५३. प्र०—अन्तरद्वीप मे तीन प्रकार के व्यापार है या नही ?
उ०—नही है, वहा कल्पवृक्ष से जीवन चलाते है ।
५४ प्र०—अन्तरद्वीप के मनुष्य का आयुष्य कितना है ?

उ०—पल्योयम का असख्यातवा भाग यानि असख्याता वर्ष का।

५५ प्र०—अन्तरद्वीप के जुगलिया की अवघेणा कितनी होती है ?

उ०—८०० धनुष की।

५६ प्र०—अन्तरद्वीप के जुगलिया मरकर कहा जाते है ?

उ०—देव गति में (भुवनपति या वाणव्यन्तर में)।

५७ प्र०—सब प्रकार के जुगलिया की कम-से-कम अवघेणा कितनी होती है ?

उ०—अगुल के असख्यातवा भाग माता के उदर में पीछे बढती चली जाती है।

५८ प्र०—जुगलिया के कुल क्षेत्र कितने हैं ?

उ०—८६ (३० अकर्मभूमि के ५६ अन्तरद्वीप के)।

५९. प्र०—मनुष्य के कुल कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—१०१ (८६ जुगलिया के १५ कर्मभूमि के)

६०. प्र०—मनुष्य के १०१ क्षेत्र में जम्बूद्वीप मे कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—नौ (३ कर्मभूमि, ६ अकर्मभूमि)।

६१ प्र०—लवण समुद्र मे मनुष्य के कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—छप्पन अन्तरद्वीप।

६२ प्र०—धातकी खण्ड मे मनुष्य के कितने क्षेत्र है ?

उ०—अठारह (६ कर्मभूमि १२ अकर्मभूमि के)।

६३ प्र०—कालोदधि में मनुष्य के कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—एक भी नही।

६४ प्र०—अर्द्धपुष्कर में मनुष्य के कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—१८ (६ कर्मभूमि के और १२ अकर्मभूमि के)।

६५ प्र०—ढाई द्वीप के बाहर मनुष्यो के कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—एक भी नहीं यानि ढाई द्वीप के बाहर मनुष्य है ही नही ।

६६. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य किसे कहते है ?

उ०—मनुष्य सबधी अशुचि (गदे) स्थान मे उत्पन्न होते है उसे समूर्च्छिम कहते हैं ।

६७. प्र०—ऐसे अशुचि के स्थान कितने और कौन-कौन से हैं ?

उ०—१४ मनुष्य के, १ मल मे, २ मूत्र मे, ३ कफ मे, ४ सेडा मे, ५ उल्टी मे, ६ पित्त मे, ७ राध मे, ८ खून मे, ९ वीर्य मे, १० वीर्य के सूखे पुद्गल भीजने में, ११ मनुष्य के जीव रहित शरीर में, १२ स्त्री पुरुष के सयोग मे, १३ नगर की मोरी में, १४ सर्व मनुष्य सबधी अशुचि के स्थान मे समूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते है ।

६८. प्र०—क्या जुगलियां के मय मूत्र आदि में समूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते है ?

उ०—हा होते है ?

६९. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य को तुमने देखा है ?

उ०—नही, उनका शरीर बहुत बारीक है।

७०. प्र०—उनकी अवघेणा कितनी होती है ?

उ०—अगुल के असख्यातवा भाग ।

७१. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य का आयुष्य कितना होता है ?

उ०—अन्तर्मुहूर्त (४८ मिनट के अन्दर मर जाते है ।)

७२. प्र०—क्या समूर्च्छिम मनुष्य के माता पिता होते है ?

उ०—नही, वे बिना माता पिता के ही उत्पन्न होते है ।

७३. प्र०—जो माता पिता के सयोग से पैदा होते हैं उन्हे कैसे मनुष्य कहते है ?

उ०—गर्भज मनुष्य ।

७४. प्र०—गर्भज मनुष्य के कितने भेद हैं ?

उ०—दो सौ दो (२०२)।

७५. प्र०—गर्भज मनुष्य के २०२ भेद कैसे होते है ?

उ०—मनुष्य के १०१ क्षेत्र है जिसमे १०१ तो अपर्याप्ता और १०१ पर्याप्ता मिल के २०२ भेद हुए।

७६. प्र०—जुगलिया गर्भज है या समूर्च्छिम ?

उ०—जुगलिया गर्भज है।

७७ प्र०—अपर्याप्ता और पर्याप्ता शब्द का क्या अर्थ है ?

उ०—जीव शरीर धारण करते समय आहार के पुद्गल लेकर उन पुद्गलो को शरीर इन्द्रिय श्वासोच्छास भाषा और मनके रूप मे परगमा लेता है तब वह पर्याप्ता समझा जाता है और जिस भव मे जितनी पर्याप्तिया बाधनी हो उतनी नही बाध ले तब तक पर्याप्ता गिना जाता है।

७८ प्र०—इन छ पर्याप्ता के नाम क्या है ?

उ०—आहार पर्याप्ता, शरीर पर्याप्ता, इन्द्रिय पर्याप्ता, श्वासोश्वास पर्याप्ता, भाषा पर्याप्ता और मन पर्याप्ता।

७९. प्र०—अपर्याप्ता की अवस्था मे जीव ज्यादा से ज्यादा कितने समय तक रहता है ?

उ०—अन्तर्मुहूर्त तक (४८ मिनट के अन्दर)।

८०. प्र०—अपर्याप्ता कहा तक गिना जाता है ?

उ०—जितनी पर्याप्तिया बाधने की हो पूरी नही बाधे जहा तक अपर्याप्ता गिना जाता है। (छ प्रजा होवे और पाच बाधे वहा तक अपर्याप्ता पाच बांधने की होवे और चार बाधे वहा तक अप-

र्याप्ता और चार बाधने की होवे और तीन बाधे वहा तक अपर्याप्ता गिना जाता है ।)

८१. प्र०—अपने पास कितनी पर्याप्ता है ?
उ०—छः ।

८२. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य के कितने भेद है ?
उ०—१०१ (१०१ मनुष्य क्षेत्र है इसलिये इनके भी इतने ही भेद है)।

८३ प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य मे अपर्याप्ता पर्याप्ता ऐसा दो भेद होता है या नही ?
उ०—नही, क्योंकि वे अपर्याप्ता अवस्था मे ही मर जाते हैं।

८४ प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य मे कितनी पर्याप्ता है ?
उ०—तीन, (पहिले की) और श्वास लेवे तो उच्छवास नही लेवे, उच्छवास लेवे तो श्वास नही लेवे।

८५ प्र०—मनुष्य के कुल भेद कितने हैं ?
उ०—३०३ (१०१ क्षेत्र के गर्भज मनुष्यों अपर्याप्ता और पर्याप्ता १०१ और १०१ समूर्च्छिम मनुष्य के मिलकर ३०३ भेद हुए)।

८६. प्र०—मनुष्य के ३०३ भेद मे से भरतक्षेत्र मे कितने भेद है ?
उ०—तीन, (जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के अपर्याप्ता पर्याप्ता और समूर्च्छिम)।

८७. प्र०—जम्बूद्वीप मे मनुष्य के कितने भेद है ?
उ०—२७, तोन कर्मभूमि के ९ भेद, और ६ अकर्म भूमि के १८, मिलकर २७ भेद हुए।

८८. प्र०—लवण समुद्र मे मनुष्य के कितने भेद है ?

उ०—५६×३=१६८ ।

८९. प्र०—घातकी खन्ड मे मनुष्यो के कितने भेद हैं?
उ०—५४ (६ कर्मभूमि के १८ भेद, १२ अकर्मभूमि के ३६, सब मिलकर ५४) ।

९० प्र०—अर्द्धपुष्कर द्वीप मे मनुष्यो के कितने भेद हैं?
उ०—५४ (६ कर्मभूमि के १८, और १२ अकर्मभूमि के ३६ मिलकर ५४) ।

पाठ-११

तिर्यञ्च के भेद

१. प्र०—तिर्यञ्च किसको कहते हैं ?
उ०—मनुष्य, देवता और नारकी के सिवाय दूसरे सर्व त्रस स्थावर जीवो को तिर्यञ्च कहते है ।

२, प्र०—तिर्यञ्च के मुख्य भेद कितने और कौन-कौन से हैं ?
उ०—तीन, (एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और पचेन्द्रिय)

३. प्र०—पाच इन्द्रिया कौन कौन सी है ?
उ०—श्रोत्रेन्द्रिय (कान) चक्षुइन्द्रिय (आख) घ्राण इन्द्रिय (नाक) रसइन्द्रिय (जोभ) स्पर्शेन्द्रिय (शरीर) ।

४. प्र०—एकेन्द्रिय किसे कहते हैं ?
उ०—जिनके केवल एक ही इन्द्रिय यानि शरीर ही हो ।

५ प्र०—विकलेन्द्रिय के मुख्य भेद कितने व कौन-कौन से हैं ?

उ०—तीन, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय और चौइन्द्रिय ।

६. प्र०—बेइन्द्रिय किसको कहते है ?

उ०—जिनके काया और मुख दो इन्द्रिय हों ।

७ प्र०—कुछ बेइन्द्रिय जीवो के नाम बताओ ?

उ०—शख, सीप, कीडे, गिडोले, लट आदि ।

८. प्र०—तेइन्द्रिय मे तीन इन्द्रिया कौनसी होती है?

उ०—काया, मुख और नासिका ।

९ प्र०—कुछ तेइन्द्रिय जीवो के नाम बताओ ?

उ०—जू , लीख, चाचड, खटमल, कीडी आदि ।

१०. प्र०—चौइन्द्रिय मे चार इन्द्रिया कौनसी होती हैं?

उ०—शरीर, मुख, नाक और आख ।

११ प्र०—कुछ चौइन्द्रिय जीवो के नाम बताओ ?

उ०—मक्खी, मच्छर, डास, भवरे, बिच्छू आदि ।

१२. प्र०—पचेन्द्रिय मे पाच इन्द्रिया कौन-कौन सी होती है?

उ०—शरीर, मुख, नाक, आख और कान ।

१३ प्र०—तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—दो, सज्ञी अर्थात् गर्भज, असज्ञी (समूर्च्छिम)

१४ प्र०—सज्ञी और असज्ञी किसे कहते हैं ?

उ०—जिसके मन होता है और माता पिता से जन्मते है उनको सज्ञी कहते और जिनके मन नही होता और बिना माता के होते है उन्हे असज्ञी कहते है ।

१५. प्र०—एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव समूर्च्छिम है या गर्भज और उनके मन होता है या नही ?

उ०—वे माता-पिता की बिना अपेक्षा उत्पन्न होते हैं जिससे वे समूर्च्छिम है और इनके मन नही होता है ।

१६ प्र०—सम्मूर्च्छिम या गर्भज तिर्यञ्च पचेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के होते हे ?

उ०—पांच प्रकार के होते है, जलचर, स्थलचर, उर-पर, भुजपर और खेचर ।

१७ प्र०—जलचर कितको कहते हैं ?

उ०—जल मे रहने वाले तिर्यञ्च, जैसे मच्छ, कच्छ, मगर, मेंढक आदि ।

१८ प्र०—स्थलचर किसे कहते है ?

उ०—जमीन पर चलने वाले तिर्यञ्च, पचेन्द्रिय ।

१९ प्र०—स्थलचर तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के कितने भेद है ?

उ०—चार, एकखुरा, दोखुरा, गडिपया, और सणपया ।

२० प्र०—एक खुरा किसे कहते है ?

उ०—जिनके पैर मे एक खुरा हो, जैसे घोडा, गधा ।

२१ प्र०—दो खुरा किसे कहते हैं ?

उ०—जिनके दो खुर हो, जैसे गाय, भैस, बकरे आदि ।

२२. प्र०—गडपिया किसे कहते है ?

उ०—जिनके पैर का तला सुनार की एरन जैसे चपटा हो, जैसे, हाथी, गेंडा, ऊट, आदि ।

२३ प्र०—सणपया किसे कहते हैं ?

उ०—नखवाले जीव, जैसे चीता, सिंह, कुत्ता, बिल्ली आदि ।

२४. प्र०—उरपर किसे कहते है ?

उ०—पेट के बल से चलने वाले, जैसे साप ।

२५. प्र०—उरपर के कितने भेद हैं ?

उ०—दो, एक फण माडते हे दूसरे फण नही माडते ।

२६ प्र०—भुजपर किसको कहते हे ?

उ०—जो भुजा और पेट के बल से चलते हैं, जैसे नोल,

कौल, ऊदरा, खिसकोल आदि ।

२७. प्र०—खेचर किसको कहते है ?
उ०—जो आकाश मे उडते है ।

२८. प्र०—खेचर के कितने भेद है और कौन-कौन से है ?
उ०—चार, चर्मपखी, रोमपंखी, विततपखी और समुगपखी ।

२९. प्र०—चरमपखी किसको कहते है ?
उ०—जिसकी पाखें चमड़े जैसी होती है जैसे चिमगादर (बागल) आदि ।

३०. प्र०—रोमपखी किसको कहते हैं ?
उ०—जिनकी पाखें रोम (केश) की होती है, जैसे तोता, कबूतर, चिडिया आदि ।

३१. प्र०—विततपखी किसको कहते हैं ?
उ०—जिसकी पाखे हमेशा फैली हुई रहती है ।

३२. प्र०—समुगपखी किसको कहते है ?
उ०—जिसकी पाखें हमेशा बध रहती हैं ।

३३. प्र०—बिततपखी और समुगपखी को तुमने देखा है ?
उ०—नही, यह पक्षी अढाई द्वीप के बाहर है ।

३४. प्र०—अढाई द्वीप के अन्दर कितने प्रकार के पक्षी रहते हैं ?
उ०—दो प्रकार के चर्मपखी और रोमपखी ।

३५. प्र०—अढाई द्वीप के बाहर कितने प्रकार के पक्षी रहते हैं ?
उ०—चार ही प्रकार के ।

३६. प्र०—क्या मक्खी भवरे को खेचर कह सकते है ?
उ०—नही, यह चउन्द्रिय होने से विकलेन्द्रिय है ।

३७. प्र०—सीप क्या जलचर मे गिनी जाती है ?

उ०—नहीं, यह बेइन्द्रिय होने से विकलेन्द्रिय हैं।

३८. प्र०—अपन जलचर है या स्थलचर ?

उ०—अपन तो मनुष्य है, जलचर स्थलचर आदि भेद तो तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के है।

३९ प्र०—तिर्यञ्च के कुल कितने भेद हैं ?

उ०—४८, एकेन्द्रिय के २२, विकलेन्द्रिय के ६ और तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के २० कुल ४८।

४०. प्र०—ऐकेन्द्रिय के २२ भेद मे से पृथ्वीकाय के कितने भेद है ?

उ०—चार, सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता।

४१ प्र०—एकेन्द्रिय के २२ भेद मे से अपकाय के कितने है ?

उ०—चार, सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता, पर्याप्ता।

४२. प्र०—एकेन्द्रिय के २२ भेद मे से तेउकाय के कितने ?

उ०—चार, सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता।

४३. प्र०—एकेन्द्रिय के २२ भेद मे से वायुकाय के कितने हैं ?

उ०—चार, सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता।

४४ प्र०—एकेन्द्रिय के २२ भेद में से वनस्पति के कितने हैं ?

उ०—६, सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता, पर्याप्ता, प्रत्येक और साधारण। सब मिलकर २२ भेद हुवे।

४५ प्र०—विकलेन्द्रिय के ६ भेद कैसे होते है ?

उ०—बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउन्द्रिय यह तीन ही विकलेन्द्रिय है, इन तीनो के अपर्याप्ता और पर्याप्ता मिल के ६ भेद हुए।

४६. प्र०—तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के २० भेद कैसे हुए ?

उ०—जलचर, स्थलचर, उरपर, भुजपर और खेचर। इन पाचो के सज्ञी और असज्ञी मिलकर १० और

इन दसों के पर्याप्ता और अपर्याप्ता मिलकर २० भेद हुए।

४७. प्र०—तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के २० भेद मे से अपर्याप्ता कितने और पर्याप्ता कितने ?

उ०—१० अपर्याप्ता (५ गर्भज के और ५ समूर्च्छिम के)। १० पर्याप्ता (५ गर्भज के ५ समूर्च्छिम के)।

४८. प्र०—तिर्यञ्च के ४८ भेद मे त्रस कितने और स्थावर कितने ?

उ०—२६ त्रस के (२० पचेद्रिय के, ६ विकलेन्द्रिय के) २२ स्थावर के (पृथ्वीकाय आदि एकेन्द्रिय के)।

४९. प्र०—तिर्यञ्च के ४८ भेद मे से असज्ञी के कितने और सज्ञी के कितने ?

उ०—असज्ञी के ३८ भेद (२२ एकेन्द्रिय के, ६ विकलेन्द्रिय के और १० असज्ञी तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के) सब मिल ३८ हुए और १० सज्ञी के।

५०. प्र०—सूक्ष्म एकेन्द्रिय किसको कहते है ?

उ०—जो मारने से मरते नही, जलाने से जलते नही यानि आयुष्य से मरे, बिना आयुष्य मरे नही, सम्पूर्ण लोक मे काजल की कूपली समान भरे है। केवल ज्ञानी के नजर आवें और छद्मस्त (अपन) के नजर नही आवे उसको सूक्ष्म एकेन्द्रिय कहते है। उनका आयु अन्तर महूर्त का होता है।

५१. प्र०—बादर जीव किसको कहते है ?

उ०—जो मारने से मरते हैं, हनाने से हनते हैं, जलाने से जलते है आयुष्य आने से मरते है और बिना आयुष्य से भी मरते है अपन इनको देख भी

ज्योतिष मंडल दिग्दर्शन

शनि का तारा ३ योजन ऊपर

मंगल का तारा ३ योजन ऊपर

गुरु का तारा ३ योजन ऊपर

शुक्र का तारा ३ योजन ऊपर

बुद्ध का तारा ४ योजन ऊपर

नक्षत्र मंडल ३ योजन ऊपर

चन्द्र विमान १ योजन ऊपर
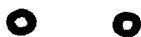
नित्य राहू- पर्व राहू ७९ योजन ऊपर

सूर्य का विमान १ योजन ऊपर

केतू का विमान ९ योजन ऊपर
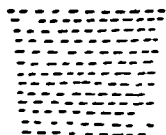
तारा मंडल समतल भूमि से ७९० योजन ऊंचा है, यहां से ऊपर ११० योजन में ज्योतिष विमान है!
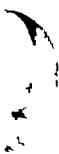
सकते है और नही भी देख सकते है ।

५२ प्र०—तिर्यञ्च के ४८ भेद मे से सूक्ष्म के कितने और बादर के कितने है ?

उ०—सूक्ष्म के १० और बादर के ३८ ।

पाठ–१२

तिर्छालोक में ज्योतिषी देव

१ प्र०—क्या तुमने सूर्य देखा है ?

उ०—हा ।

२ प्र०—जैन शास्त्रानुसार सूर्य क्या है ?

उ०—ज्योतिषी देवता का विमान ।

३ प्र०—यह विमान किस चीज का है ?

उ०—स्फटिक रत्न का ।

४. प्र०—यह उजाला कहा से आता है ?

उ०—सूर्य के विमान से ।

५ प्र०—उजाला का दूसरा नाम क्या है ?

उ०—ज्योति या प्रकाश ।

६. प्र०—सूर्य मे रहने वाले देव कैसे देवता कहलाते है ?

उ०—ज्योतिषी देव ।

७. प्र०—सूर्य के सिवाय कोई दूसरे ज्योतिषी देव है ?

उ०—हा है, चद्र, ग्रह, नक्षत्र व तारा ।

८ प्र०—कुल कितने प्रकार के ज्योतिषी देव है ?

उ०—पांच प्रकार के, यानि चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, और तारा ।

९. प्र०—अपने से ऊपर कितने जोजन तक तिर्छा लोक है; और उसमे क्या है ?

उ०—अपने ऊपर नवसौ जोजन तक तिर्छा लोक है और उसमे ज्योतिषी मडल है ।

१०. प्र०—अपने से कितने जोजन ऊपर तारा मण्डल है और तारो के विमान कितने लम्बे चौडे व ऊचे है ?

उ०—७९० जोजन ऊपर तारा मण्डल है और प्रत्येक विमान आध-कोस के लम्बे, चौडे, व पाव कोस के ऊचे है, और पाच ही रग के रत्नो मे है ।

११. प्र०—तारा मण्डल से कितना ऊपर सूर्य का विमान है और वो कितना लम्बा, चौडा, व ऊचा है ?

उ०—तारा मण्डल से १० जोजन ऊपर है और एक जोजन के ६१ भाग मे ४८ भाग का लम्बा-चौडा और २४ भाग का ऊचा है ।

१२. प्र०—सूर्य के और चन्द्रमा के विमान मे कितना अन्तर है और कितना लम्बा, चौडा व ऊचा है ?

उ०—सूर्य के विमान से ८० जोजन ऊपर चन्द्रमा का स्फटिक रत्नमय एक जोजन के ६१ भाग मे से ५६ भाग का लम्बा-चौडा और २८ भाग का ऊचा है ।

१३. प्र०—नक्षत्र मण्डल कहां है, और उनके विमान कितने लम्बे चौड़े व ऊचे है ?

उ०—चन्द्रमा से ४ जोजन ऊपर नक्षत्र मण्डल है और उन नक्षत्रो के विमान पांच ही वर्णों के एक कोस

के लम्बे चौडे व आध कोस के ऊचे हैं।

१४. प्र०—ग्रह मण्डल कहा है और वो कितने लम्बे चौडे और कैसे रत्नोमय हैं।

उ०—नक्षत्र मण्डल से ऊपर चार जोजन ग्रहमण्डल है और वो विमान दो कोस के लम्बे चौडे व एक कोस के ऊचे और पाच ही वर्णों के रत्नो मे है।

१५ प्र०—ग्रह मण्डल के ऊपर क्या है ?

उ०—ग्रह मण्डल के ऊपर चार जोजन बुद्ध का तारा हरे रत्नमय है, और बुद्ध के तीन जोनन ऊपर शुक्र का तारा स्फटिक (सफेद) रत्नमय है और शुक्र से तीन जोजन ऊपर बृहस्पति का तारा पीले रत्नो का है।

१६. प्र०—मगल और शनि कहा हैं, और कैसे हैं ?

उ०—बृहस्पति से ३ जोजन ऊपर मगल ग्रह का तारा रक्त (लाल) रत्नमय और मगल से तीन जोजन ऊपर शनि का तारा जबू (जामुन के रग) रत्न-मय है।

१७ प्र०—राहु और केतु ग्रह के तारे कहा है ?

उ०—सूर्य के विमान से एक जोजन नीचे केतु का विमान है और चन्द्रमा से एक जोजन नीचे राहु[1]

नोट—[1]कभी-कभी जो सूर्य व चन्द्रमा का ग्रहण होता है वह सूर्य के नीचे जितने अश मे केतु का विमान आजाता है उतने ही अश मे सूर्य ग्रहण गिना जाता हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के नीचे जितने अशो मे राहु का विमान आता है उतने ही अशो मे चन्द्र ग्रहण होता है।

का विमान है। यह सभी ज्योतिषी चक्र अढाई द्वीप के अन्दर नवसो जोजन मे सदा काल फिरता है। इसके ऊपर ऊर्ध्व लोक है।

१८. प्र०—कुल देवता कितने है ?

उ०—असंख्याता।

१९. प्र०—विमान की सख्या अधिक है, या देवताओ की ?

उ०—देवों की सख्या अधिक है, क्योकि प्रत्येक विमान मे बहुत से देव रहते है।

२०. प्र०—ज्योतिषीयो मे देव ज्यादा है या देविया ?

उ०—देविया, क्योकि प्रत्येक देवता के कम से कम चार देविया अवश्य होती है।

२१. प्र०—अपन जो विमान देखते है वे सब किस लोक मे है ?

उ०—तिर्छालोक मे।

२२. प्र०—जीव के ५६३ भेद में ज्योतिषियो के कितने भेद हैं ?

उ०—बीस, चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा यह पाच चर, और पाच स्थित मिलकर ज्योतिषियो की कुल दश जात होती है। उन दशो का पर्याप्ता व अपर्याप्ता मिलकर बीस भेद ज्योतिषियो के होते है।

२३ प्र०—जिन विमानो को अपन देखते हैं, वे सब चर हैं या स्थिर।

उ०—चर है, यानि निरंतर पूर्व से दक्षिण, पश्चिम, उत्तर इस प्रकार गोल फिरते रहते है।

२४. प्र०—स्थिर विमान कहा है ?

उ०—अढाई द्वीप के बाहर।

२५. प्र०—ज्योतिषियो मे इन्द्र कितने हैं ?

उ०—दो, चन्द्रमा और सूर्य।

पाठ- १३

तिर्छालोल में वाणाव्यन्तर देव

१. प्र०—तिर्छालोक का आकार कैसा है ?

उ०—गोल चक्की के पाट जैसा।

२ प्र०—तिर्छालोक की लम्बाई चौडाई कितनी है ?

उ०—एक राज की अर्थात् असख्याता जोजन की।

३. प्र०—तिर्छालोक की ऊचाई कितनी है ?

उ०—१८०० जोजन की।

४ प्र०—अपने से नीचे कितने जोजन तक तिर्छालोक कहलाता है ?

उ०—नवसौ जोजन तक।

५. प्र०—इन वनसौ जोजन में क्या क्या हैं ?

उ०—जिस जमीन पर अपन रहते हैं, वह एक हजार जोजन का पृथ्वी पिंड है उसमे एकसौ जोजन ऊपर और सौ जोजन नीचे छोडकर बीच मे ८०० जोजन की पोलान मे असख्याता वाणव्यतर देवताओ के नगर है। नीचे के सौ जोजन तो अधोलोक मे गिने जाते हैं और ऊपर के सौ जोजन मे से १० जोजन ऊपर और १० जोजन नीचे छोडकर बीच मे जो अस्सी जोजन की पोलान है उसमे दस जाति के जृभकादेव रहते है।

६. प्र०—वाणव्यतर देवो के कितने भेद है ?

उ०—सोलह, १ पिशाच २ भूत ३ यक्ष ४ राक्षस ५ किन्नर ६ किंपुरिस ७ मोहरग ८ गधर्व ९ आण

पन्नी १० पाकपन्नी ११ इसीवाई १२ भुइवाई १३ कंदिय १४ महाकंदिय १५ कोहंड १६ पयगदेव।

७. प्र०—जृंभका देव कितनी जाति के है?

उ०—दस जाति के अर्थात् १ आणजृंभका (अन्न के रखवाले) २ पाणजृंभका (पानी के) ३ लैणजृंभका। स्वर्ण (आदि धातु के) ४ सैणजृंभका (मकान के) ५ वत्थजृंभका (वस्त्र के) ६ पुष्पजृंभका (फूलों के) ७ फलजृंभका (फल के) ८ बीजजृंभका (बीज धान के) ९ बिज्जुजृंभका (बिजली के) १० अवियत जृंभका। (पानभाजी के रखवाले) यह दस ही सर्व जगत की रखवाली करते है जो यह नही होवे तो वाणव्यतर देवता वस्तुओ का हरण‡ कर लेवे। इसलिये यह देवता त्रिकाल (सध्या, सवेरे, और दुपहर) मे फेरी देने निकलते है यानि चौकीदारी करते है।

नोट—‡यह जृंभका अपनी फेरी के समय कोई वस्तु ठिकान नही पावे तो वे अवधिज्ञान से देखते है, कि अमुक (फला) देवता ने इस वस्तु का हरण किया है, ऐसा जानकर उस चोर देवता को पकड कर इन्द्र के पास ले जाते हैं। तब इन्द्र उस चोर देवता को वज्र से प्रहार करते हैं। वे देवता उस प्रहार से मरता तो नही, किन्तु १२ वर्ष तक हाय त्राहिकर कष्ट पाता है और विशेष अपराधी को देश निकाला आदि की सजा देते है। जिस से वो देवता १२ वर्ष तक इस पृथ्वी पर किसी शून्य मकान, वृक्ष आदि मे निवास करता है। यह चोर देवता जहा निवास करता है उस जगह के मनुष्य आदि

८. प्र०—वाणव्यतर व जृंभका देव कुल कितने हैं ?
उ०—असख्याता ।

९. प्र०—वाणव्यतर देवताओ का आयुष्य कितना होता है ?
उ०—जघन्य यानि कम से कम दस हजार वर्ष का, और उत्कष्ट (ज्यादा से ज्यादा) एक पल्योपम का ।

१० प्र०—वाणव्यतर मे देवियो की आयु कितनी होती है ?
उ०—जघन्य दस हजार वर्ष की और उत्कृष्ट अर्द्ध-पल्योपम की ।

११. प्र०—वाणव्यतर मर के कौनसी गति में जाते हैं ?
उ०—दो गति (मनुष्य वा तिर्यञ्च) मे ।

१२ प्र०—वाणव्यतर के नगर अपन नीचे पोलान मे हैं । तो वहा सूर्य का प्रकाश कैसे पहुचता होगा, क्या वे घोर अधकार ही मे रहते होगे ?
उ०—नही, उनके नगरो मे बडे-बडे महल रत्नो से जडित हैं । वे सब सूर्य के समान प्रकाश करते हैं । और उनके शरीर और आभूषणो (गहणा) का भी बहुत प्रकाश रहता है । जिससे वहा अधकार नही है ।

१३ प्र०—अपन कभी इन नगरो मे देवता हुए होगे ?
उ०—हा, अपन भी अनन्तवार इन नगरो में देवता व देवीपने से उत्पन्न हुए हैं ।

को अपने दुष्ट स्वभाव का परिचय देने के लिये लोगो को भयकर रूप आदि करके हीन मनोबल वालो को भयभीत करते हैं । इनका विशेष प्रभाव शीलभ्रष्ट नर-नारियो पर ही पडता है । शीलवन्त और सयमी मनुष्यो से तो उलटा वे डरते हैं और नमन आदि स्तुति सेवा करते हैं ।

१४ प्र०—कैसे मनुष्यो को वाणव्यतर आदि देवता सदा नमस्कार करते हैं, व भजते है और स्तुति करते है। और किसी प्रकार का दुख परिसह नही दे सकते हैं ?

उ०—तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, उत्तम साधु, साध्वी, और ब्रह्मचारी जो शुद्ध शीलव्रत पालने वाले स्त्री पुरुपो को देवता भी नमस्कार करते है, किसी प्रकार का कष्ट नही पहुचा सकते है।

१५. प्र०—जोव के ५६३ भेदो मे से वाणव्यतर के कितने भेद हैं ?

उ०—बावन, (सोलह जाति के वाणाव्यतर दस जाति के जृभका इन २६ के पर्याप्ता और अपर्याप्ता मिलकर ५२ हुए।)

१६. प्र०—वाणव्यतर देवो मे इन्द्र कितने हैं ?

उ०—बत्तोस (१६ उत्तर के और १६ दक्षिण के एक-एक जाति के दो-दो इन्द्र होते हैं।)

१७ प्र०—इन्द्र किसको कहते है और कुल कितने है ?

उ०—देवताओ के राजा को इन्द्र कहते है और कुल इन्द्र ६४ है।

पाठ– १४

आठ कर्म

१ प्र०—अपनी आत्मा और सिद्ध भगवान की आत्मा मे क्या अन्तर है ?

उ०—अपनी आत्मा तो आठ कर्मों से बधी हुई है और सिद्ध भगवन्त सब कर्मों के बन्धन से मुक्त (खुले-हुए हैं)।

२. प्र०—सिद्ध भगवन्त को अनन्त ज्ञान हैं यानि अनन्ता-काल की बात को जानते हैं, और अपन नही जानते हैं इसका क्या कारण है ?

उ०—सिद्ध भगवान ने ज्ञानावर्णीय कर्म का नाश किया है, और अपन ने नही किया। जैसे सूर्य में प्रकाश करने का और आख मे देखने का स्वभविक गुण है, किन्तु सूर्य के आगे बादल व आख के ऊपर पट्टी आजाने से सूर्य व आंख का गुणा (देखना आदि) छिप जाता है, इसी प्रकार आत्मा मे अनन्त ज्ञान गुण है किन्तु कर्मों का आवरण (परदा) आजाने से ज्ञान प्रगट होता नही है। ज्यो ज्यो ज्ञानावर्णिय कर्म क्षय या उपशम होते है त्यो-त्यो उतने ही अश मे ज्ञान प्रगट होता जाता है ।

३ प्र०—सिद्ध भगवन्त मोक्ष मे विराजे हुए, देवताओ के नाटको के सुख, और नरक के जीवो का दुख तथा अपने लोक की सम्पूर्ण रचनाओ को हथेली

के आंवले के समान देखते है। और अपन दीवाल के पीछे की चीज भी नही देख सकते इसका क्या कारण ?

उ०—अपन को दर्शनावार्णीय कर्म जो राजा के द्वारपाल समान है वो देखने मे बाधा डालता है, और सिद्ध भगवान ने इस कर्म का क्षय करलिया है।

४. प्र०—सिद्ध भगवन्त को तो अनन्त सुख है और अपने को नही इसका क्या कारण है ?

उ०—अपन को वेदनीय कर्म जो शहद भरी तलवार के समान है चाटने से स्वाद तो आता है किन्तु जीभ कट जाने से दुःख भी होता है। इसी प्रकार वेदनीय कर्म शाता और अशाता देता है और सिद्ध भगवन्त ने उस कर्म का क्षय किया है।

५. प्र०—अपन मे क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय है और सिद्ध भगवन्त मे नही है इसका क्या कारण है ?

उ०—अपन मोहनीय (जो दारू से बेहोस होने वाले के समान) कर्म के वश मे है और सिद्ध भगवन्त ने मोहनीय कर्म का सर्वथा क्षय किया है।

६ प्र०—अपन को वृद्ध अवस्था और मौत का भय है और सिद्ध भगवन्त को नही इसका क्या कारण है ?

उ०—अपन ने आयु कर्म को क्षय नही किया है और सिद्ध भगवन्त ने आयु कर्म क्षय किया जिससे वे अजर और अमर पद को पाये है।

७ प्र०—अपन नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य, और देवता इन चारो गति मे भटकते हैं। और अनेक प्रकार के

शरीर को धारण करते है। किन्तु सिद्ध भगवान को ऐसा नही करना पडता है इसका क्या कारण ?

उ०—अपन ने नाम कर्म का क्षय नही किया है और सिद्ध भगवन्त ने उसका क्षय किया है।

८ प्र०—अपन ऊच नीच गोत्र मे (कुल मे, बश मे) जन्म लेते है और सिद्ध भगवन्त आत्मा के मूल गुण को (अगुरु-लघु) प्राप्त हुए हैं इसका क्या कारण ?

उ०—अपन गोत्र कर्म के वश मे है और सिद्ध भगवन्त ने गोत्र कर्म का क्षय किया है।

९ प्र०—अपन को मनोवाञ्छित अर्थ साधने मे बारम्बार विघ्न होता है, और सिद्ध भगवन्त ने सब अर्थ की सिद्धी की है इसका क्या कारण है ?

उ०—सिद्ध भगवान ने अन्तराय कर्म का क्षय किया है अपन ने नही किया है।

१० प्र०—ज्ञानावर्णिय कर्म किसको कहते है ?

उ०—ज्ञान को रोकने वाला कर्म यानि ज्ञान पर आवरण (परदा) डालने वाला कर्म।

११ प्र०—ज्ञान के मुख्य भेद कितने और कोन-कौन से हैं ?

उ०—पाच, मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान और केवलज्ञान।

१२ प्र०—मतिज्ञान किसको कहते हैं ?

उ०—पाच इन्द्रिया और छठ्ठा मनसे जो बात जानी जावें उसे मतिज्ञान कहते हैं।

१३. प्र०—श्रुतिज्ञान किसे कहते है ?

उ०—शास्त्र पढने से और सुनने से जो ज्ञान आवे उसे श्रुतिज्ञान कहते हे।

१४ प्र०—अवधिज्ञान किसे कहते है ?
उ०—मर्यादा मे रहे हुए रूपी द्रव्यो को इन्द्रियो की सहायता विना आत्मा के प्रदेश से जाने (देखे) उसे अवधिज्ञान कहते है।

१५. प्र०—मनपर्यवज्ञान किसे कहते है ?
उ०—ढाई द्वीप मे रहे हुए पर्याप्ता सज्ञी पचेन्द्रिय जीवो की मन की बात को जाने उसे मनपर्यवज्ञान कहते है।

१६. प्र०—केवलज्ञान किसे कहते है ?
उ०—लोकालोक मे रहे हुए सर्व रूपी, अरूपी द्रव्य तथा सर्व जीवो के गये काल, आवते काल और वर्तमान काल के सर्व भाव जाने, देखे उसे केवलज्ञान कहते है।

१७ प्र०—दर्शनावर्णिय कर्म किसे कहते है ?
उ०—दर्शन यानि देखने के गुणो को रोकने वाले कर्म को दर्शनावर्णिय कर्म कहते हैं।

१८ प्र०—दर्शन कितने है ?
उ०—चार, चक्षु दर्शन (आखो से देखना) अचक्षु दर्शन (विना आखो से देखना) अवधि दर्शन (अवधिज्ञान से देखना) और केवल दर्शन (केवलज्ञान से देखना)।

१९ प्र०—वेदनीय कर्म के कितने भेद है ?
उ०—दो, शाता वेदनीय, और अशाता वेदनीय।

२०. प्र०—शाता वेदनीय से क्या होता है और अशाता वेदनीय से क्या होता है ?
उ०—शाता वेदनीय से सुख होता है, और अशाता वेद-

नीय से दुःख होता है।

२१. प्र०—सिद्ध भगवन्त को शाता वेदनीय है या अशाता वेदनीय ?

उ०—उन्होने वेदनीय कर्म का ही नाश कर दिया है और अनन्त आत्मिक सुख में विराजमान है।

२२ प्र०—मोहनीय कर्म के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—दो, दर्शन मोहनीय और चरित्र मोहनीय।

२३ प्र०—दर्शन मोहनीय किसको कहते हैं ?

उ०—दर्शन याने समकित् (सच्ची मान्यता) को रोकने वाले कर्म को।

२४ प्र०—चारित्र मोहनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—चारित्र (कर्मों से छुटने का उपाय तप, नियम, सयम आदि) को मोहने (रोकने) वाले कर्म को।

२५ प्र०—आयु कर्म के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—चार, नर्क आयु (नारकी का आयुष्य) तिर्यञ्च आयु, मनुष्यआयु, और देवता का आयुष्य।

२६. प्र०—नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उ०—दो, शुभ नाम और अशुभ नाम।

२७ प्र०—नाम कर्म किसको कहते हैं ?

उ०—जिसके उदय से जीव अरूपी होने पर भी नाम कर्म के योग से और पुद्गलो के सयोग से नर्क मे जाने से नेरिया नाम धराता है, तिर्यञ्च में जाने से पशु, पक्षी, वृक्ष, फलादि नाम धराता है। मनुष्य गति मे जन्म लेकर मनुष्य का नाम धराता है और देवलोक में जन्म लेकर देवताओ के नाम धराता है।

२८ प्र०—शुभ नाम कर्म के उदय से जीव को क्या फल मिलता है ?

उ०—जिसके उदय से जीव को गति, जाति, शरीर, अग, उपाग, रूप लावण्य तथा यशोकीर्ति आदि अच्छे पाते है ।

२९ प्र०—अशुभ नाम कर्म के उदय से क्या फल मिलता है ?

उ०—जिसके उदय से जीव को गति, जाति, अग (छाती, पेट को कहते है) उपाग (हाथ, पाव को कहते हैं) रूप लावण्य तथा यशोकीर्ति आदि अच्छे नही पावे ।

३० प्र०—गोत्र कर्म के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—दो, ऊच गोत्र और नीच गोत्र ।

३१. प्र०—गोत्र के क्या अर्थ है ?

उ०—कुल कथवा वश ।

३२. प्र०—ऊच गोत्र से क्या फल मिलता है ?

उ०—जाति (एकेन्द्रिय से पचेन्द्रिय तक) कुल, बल, रूप तथा ऐश्वर्य आदि उच्च प्रकार के यानि प्रशसा करने के योग्य मिलते है ।

३३ प्र०—नीच गोत्र से क्या फल मिलता है ?

उ०—जिसके उदय से जीव को, जाति, कुल, वल, रूप, तथा ऐश्वर्य हल्के और प्रशसा नही करने योग्य मिलते है ।

३४. प्र०—अन्तराय कर्म के कितने भेद है ?

उ०—पाच, दान अन्तराय, लाभ अन्तराय, भोग अन्तराय, उपभोग अन्तराय, और वीर्यान्तराय ।

३५ प्र०—दानान्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—जिसके उदय से जीव योग्य सामग्री (चीज वस्तु धन आदि) होते हुए और योग्य पात्र का सयोग होने पर भी दान नही दे सकता है ।

३६. प्र०—लाभान्तराय कर्म किसे कहते है ?

उ०—जिसके उदय से जीव को अनुकूल सयोग (जैसे अपनी कमाई मे या बडेरो के धन में या किसी भी लाभ होने के मौके पर भी) लाभ नही हो सके उसे लाभान्तराय कर्म कहते है ।

३७ प्र०—भोगान्तराय कर्म किसे कहते है ?

उ०—भोग की सामग्री जैसे वस्त्र आभूषण (गहणो) स्त्री, घर, बगीचा आदि होते हुए और भोगने की लालसा रहते हुए भी भोग नही सके ।

३८. प्र०—उपभोगान्तराय कर्म किसे कहते है ?

उ०—उपभोग यानि भोजन, दूध, घृत, फल फूल आदि प्राप्त होते हुए भी और भोगने की लालसा होते हुए भी भोग नही सकें उसे उपभोग अन्तराय कहते हैं ।

३९ प्र०—वीर्यान्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—बलवान (शक्तिमान) होते हुए भी जीव धर्मादि कार्यों में पुरुषार्थ नही कर सके उसे वीर्यान्तराय कर्म कहते हैं ।

४०. प्र०—ससारी जीवो को कर्म बधन होता है और सिद्ध भगवन्तो को नही होता है इसका क्या कारण है ?

उ०—कर्म बधन के कारण होवे तो कर्म बधन होना है जैसे अपने को भूख कारण है तो उसके लिये रोटी करनी पडती है और रोटी बनाने में छ. काय

जीवो की हिंसा होती है और हिंसा से कर्म बधन होता है और सिद्ध भगवान को कोई कारण ही नही है। जिससे कर्म वधन भी नही होता है।

पाठ–१५

आश्रवतत्व और संवरतत्व

१. प्र०—कर्म बधन के हेतु, अर्थात् कारण कितने है ?
उ०—पाच, मिथ्यात्व, आविरति, प्रमाद, कषाय और जोग।

२. प्र०—कर्म बधन के पांचो हेतु या कारणो को क्या कहते है ?
उ०—आश्रव (आते हुए कर्मों के पुद्‌गल)।

३. प्र०—मिथ्यात्व का अर्थ क्या है ?
उ०—झूठी मान्यता अर्थात् वीतराग प्रभु के फर्माये हुए तत्वो को जाने नही और श्रद्धे नही।

४. प्र०—अविरति का अर्थ क्या है ?
उ०—व्रत पच्चखान से रहितपना, यानि जिसको व्रत पच्चखान नही होवे उनको अविरति कहते है।

५ प्र०—प्रमाद का अर्थ क्या है ?
उ०—धर्म कार्य में आलस्य करे प्रसको प्रमाद कहते है।

६ प्र०—कषाय का अर्थ क्या है ?
उ०—क्रोध, मान, माया, लोभ और इसी से जीव ससार

मे भटकता है ।

७. प्र०—जोग का अर्थ क्या है ?

उ०—मन, बचन, काया का व्यापार ।

८. प्र०—मन, वचन, काया को अच्छे रस्ते चलावे उसे क्या कहते है ?

उ०—शुभ जोग ।

९. प्र०—मन, वचन, काया को बुरे (खोटे) रस्ते चलावे उसे क्या कहते है ?

उ०—अशुभ जोग ।

१० प्र०—आश्रव मे शुभ अशुभ ऐसे दो भेद है या नही ?

उ०—है, शुभ जोग से शुभ कर्मो का बध होता है । उसको पुण्य यानि शुभ आश्रव कहते है और अशुभ जोग से अशुभ कर्म बध होता है उसको पाप यानि अशुभ आश्रव कहते हैं ।

११ प्र०—आश्रव आत्मा को हितकारी है या अहितकारी ?

उ०—अहितकारी यानि त्याग ने लायक है ।

१२ प्र०—आश्रव आत्मा को क्यो अहितकारी है ?

उ०—आत्मरूप तालाब मे आश्रवरूप कर्मों के नाले आते हैं जिससे कर्म बध होता है, और इसी के उदय से जीवचारो गति मे भटकता है ।

१३ प्र०—कर्म आते है उनकी रुकावट कैसे हो सकती है ?

उ०—आश्रवरूप द्वार बध करने से ।

१४ प्र०—आश्रवरूप द्वार कैसे बद हो सकता है ?

उ०—वीतराग के फर्माये हुए शास्त्रो से तत्व ज्ञान ग्रहण कर उस पर पूर्ण श्रद्धा रखने से समकित की प्राप्ति होती है । समकित की प्राप्ति के बाद व्रत

पञ्चखान करने और विषय कषाय छोड़ने से कर्मों की रूकावट होती है उसे सवर कहते है।

१५. प्र०—सवर के कितने भेद हैं ?

उ०—पाच, समकित, विरतिपन, अप्रमाद, अकषाय और शुभ जोग।[१]

१६. प्र०—विरतीपन का अर्थ क्या और उससे क्या लाभ ?

उ०—प्रणातिपात (जीव की हिंसा) मृषावाद (झूठ) अदतादान (चोरी) मैथुन, परिग्रह, रात्रि भोजन आदि का त्याग कर पञ्चखान करने से अविरति रूप आश्रवद्वार बंद हो जाता है।

१७ प्र०—विरति के कितने भेद हैं ?

उ०—दो, देश विरति और सर्व विरति।

१८. प्र०—सर्व विरति किसको कहते है ?

उ०—उपर बतलाये हुए सर्व पापों का सर्वथा त्याग करने वाले मुनियों को सर्व विरति कहते है।

१९. प्र०—देश विरति किसको कहते हैं ?

उ०—जो अपनी शक्ति अनुसार व्रत पच्चखान करते है और उपयोग सहित पालते है ऐसे श्रावक श्राविकाओ को देश विरति कहते है।

२०. प्र०—अप्रमाद का अर्थ क्या और उससे क्या लाभ ?

उ०—पाचो प्रमाद को छोडना अप्रमाद और उससे

नोट—[१]शुभ जोग को निश्चयनय से आश्रव कहते हैं, किन्तु पुण्य बध क हेतु और मोक्ष की प्राप्ति मे साधनभूत होने से व्यवहार नय से इसे सवर मे गिनते हैं। निश्चयनत से अजोगीपना सवर गिना जाता है।

प्रमाद रूप आश्रव द्वार बद होता है।

२१ प्र०—पाच प्रमाद कौन-कौन से हैं ?

उ०—मद, विषय, कषाय निन्दा और बिकथा।

२२. प्र०—अकषाय का अर्थ क्या और उससे क्या लाभ ?

उ०—क्रोधादि कषाय का त्याग करना अकषाय और उससे कषाय रूप आश्रव द्वार बद होता है।

२३. प्र०—शुभ जोग से क्या लाभ ?

उ०—इससे अशुभ जोग रूप आश्रवद्वार बद होता है।

२४. प्र०—सवर तत्व जीव को हितकारी है या अहितकारी ?

उ०—हितकारी, आदरणीय।

पाठ-१६

नारकी व परमाधामी

१. प्र०—बहुत पाप करने वाले जीव कहा जाते है ?

उ०—नरक मे जाते है।

२. प्र०—नरक कितने और उनके क्या नाम हैं ?

उ०—सात, घमा, वशा, शिला, अजना, रिट्ठा, मघा, और माघवइ।

३. प्र०—सात नारको के गोत्र गुण निष्पन्न नाम क्या है ?

उ०—रत्न प्रभा (काले रत्न की भयकर प्रभा है) शर्कर-प्रभा (तलवार जैसी तीक्ष्णा पत्थरवाली) बालू-प्रभा (उसमे उष्णा रेती है) पक-प्रभा (लोही मास

के कीचड वाली) धुम्र-प्रभा (धुआ वाली) तम प्रभा (अघकार वाली) तमतमा प्रभा (घोर अध· कार वाली)।

४ प्र०—सात नरक कहां है ?

उ०—अपने नीचे प्रमथ पहिली नरक है और वहाँ से असंख्याता जोजन नीचे दूसरी नरक है। इसी तरह से एक-एक से असंख्य जोजन नीचे अनुक्रम से सात नरक है व उसके नीचे अनन्त अलोक है।

५. प्र०—पहिली नरक की पृथ्वी अपने से कितनी दूर है ?

उ०—पहिली नरक का हजार जोजन के पट (छत) पर ही अपन रहते है ?

६. प्र०—नरक गति प्राप्त करनै वाले जीवो को क्या कहते है ?

उ०—नारकीय व नैरिया

७. प्र०—नैरियो के मा बाप होते है या नही ?

उ०—नही, वे नरकवासी की कु भिओ मे जन्मते है।

८. प्र०—नरकवासी की कु भिआ कैसी है ?

उ०—तिजारा (अफीम) के डोडा की तरह पेट चौडा मु ह सकडा और अदर तीक्ष्ण धारा होती है।

९. प्र०—नरक की कु भिओ मे पापी जीव कैसे जन्म पाते है ?

उ०—अधोमुख से कु भिओ मे पडकर अशुभ पुद्‌गलो का आहार करने से उनका शरीर फूल जाता है। तब कुंभिओ मे रही हुई तीक्ष्ण धारा मे शरीर छिदता है तब वे महान दु खी होकर बूम पारते है तब परमाधामी देव आके सडासी आदि शस्त्रो से उसको खीचकर टुकडे-टुकडे कर बाहर निकालते है उन्हे अत्यन्त वेदना होती है पर मरते

नही है किन्तु पारे की तरह फिर मिल जाते है।

१०. प्र०—सात नरक मिलकर कुल कितने नरकवास है ?
उ०—चौरासी लाख ।

११. प्र०—प्रत्येक नरकवासी मे कुल कितनी कुंभिया हैं ?
उ०—असख्याता कुभिया है।

१२. प्र०—प्रत्येक नरकवासो मे कितने नैरिये हैं ?
उ०—असख्याता ।

१३ प्र०—नैरियो को नारकी मे क्या दुख है ?
उ०—केवल दुख-ही-दुख है सुख कुछ भी नही है। क्षेत्र वेदना, अन्योन्यकृत वेदना, और परमाधामीकृत वेदना इतनी होती है कि जिसके सुनने से हृदय कापने लगता है।

१४. प्र०—क्षेत्र वेदना कितने प्रकार की होती है ?
उ०—दस प्रकार की, भूख, तृषा, ठड, गर्मी, दाह, ताव-डर, चिन्ता, खुजली, परवशपना यह दस प्रकार की क्षेत्र वेदना है।

१५ प्र०—अन्योन्यकृत वेदना का अर्थ क्या है ?
उ०—नारकी के जीव परस्पर (आपस मे) लडते हैं व दात और नाखून से एक दूसरे को बहुत ही दुख देते है उसका नाम अन्योन्यकृत वेदना है।

१६ प्र०—परमाधामीकृत वेदना माने क्या ?
उ०—परमाधामी जाती के क्रूर देवता है वह देवना नारकी को छेदते। भेदत है और वहुत ही दुख देते हैं।

१७ प्र०—उन देवतो को परमाधामी क्यों कहते हैं ?
उ०—पूर्वभव मे अज्ञान तप (जिसमे असख्य प्राणियो का

क्षय होय) उनके प्रभाव से परम अधर्मी यानि बडे पापी दयाहीन होते है।

१८. प्र०—परमाधामी देवता नारकी को दुःख क्यो देते हैं ?

उ०—जैसे निर्दयी मनुष्य अपने शिकार के व्यसन का पोषण करने के लिये जगलो मे पशु, पक्षियो को गोली, छर्रे, गुलेल आदि मारते है और वे जीव दुखी होकर तडपते है, लौटते है और यह शिकारी आनन्द मान लेते है और कितनेक निर्दयी पुरुष जैसे पाडे, भेड, तीतर, मुर्गी आदि आपस मे लडाकर सुख मानते है इसी प्रकार परमाधामी नेरियो को दु'खी देखकर ही आनन्द मानते है।

१९. प्र०—ऐसा करने से परमाधामी देवो को पाप होता है या नही ?

उ०—हा, पाप जरूर लगता है और इस पाप के करने से नीच योनियो मे बकरे, कूकडे होकर अधूरी आयुष्य से ही मरते है।

२०. प्र०—परमाधामी देवता कितनी जाति के है ?

उ०—१५ जाति के, १. अम्ब (आम की तरह नेरिये को मसलकर रस ढीला करते है) २. अबरस (चोर की तरह मारकर हड्डी, मास, रक्त अगोपाग अलग-अलग फेकते है) ३. श्याम (चोर को मारने की तरह जबर प्रहार करते है) ४ सबल (सिह, रीछ, कुत्ते, बिल्ली आदि क्रूर रूप बना कर नेरिये नेरिये को चीरफाड कर मास निकाल लेते है) ५ रुद्र (देवो के भोपे जैसे बकरे आदि को त्रिशूल से छेदते है वैसे ही ये नेरिये को त्रिशूल, भाले

आदि से छेदते है) ६. महारुद्र (कसाई की तरह नेरिये के अग को खण्ड-खण्ड करते हैं) ७. काल (हलवाई जैसे तलते हैं) ८. महाकाल (चिमटे से उसी का मास तोड तोडकर उसी को खिलाते हैं) ९ असिपत्र (गर्मी के घबराहट से वृक्षो के नीचे बैठने वाले नेरियो पर तलवार जैसे वृक्षो के पत्र डालकर टुकडे-टुकडे करते हे) १० धनुष (हजारो बाणो से नेरिये को छेदते हैं), ११ कुभ (नीबू, मिरची के अथाणे की तरह पचाते हैं), १२. बालू (भडभूजे की तरह भू जते हैं), १३ वैतरणी (धोबी की तरह वैतरणी नदी मे नेरिये को निचोते, पछाडते है), १४. खर स्वर (भयकर स्वर शब्दो से डराते है), १५ महाघोष (जैसे वाघरी बकरियो भेडो को कोठे मे भरता है वैसे ही नेरियो को अधेरे और सकडे स्थान मे अणमावते खचाखच भर देते हे। यहा मास भक्षण करने वाले को वहा उसी का मास तोड-तोडकर खिलाते हैं, और कहते हैं कि अरे! मूर्ख प्राणियो का मास तुझे प्यारा था तो अब तेरे शरीर का भी खाकर मजा ले। इसी तरह शराब तथा अणछाणा जल पीने वाले को लोहा, शीशा आदि गर्मागर्म उबलता हुआ सडासी से पकड मुह मे डालते हे और कहते है कि तुझे शराब प्यारी थी तो जरा इसकी भी तो लज्जत ले। और परस्त्री सेवने वाले को लोहे की गर्म पुतली से आलिङ्गन कराके कहते हे कि तुझे परस्त्री प्यारी थी तो अब यह सुन्दर लाल वर्ण

की स्त्री को अलिङ्गन करते क्यों रोता है ?

२१. प्र०—हर एक जाति के देवता कितने है ?
उ०—असख्याता ।

२२ प्र०—नारकी जीवो का आयुष्य कितना होता है ?
उ०—जघन्य १० हजार वर्ष का और उत्कृष्ट ३३ सागरोपम का ।

२३. प्र०—नैरियो का शरीर कैशा होता है ?
उ०—अत्यन्त कुरूप ।

२४. प्र०—नारकीके नेरियो की अवघेणा कितनी होती है ?
उ०—प्रत्येक नरक मे अलग-अलग है सबसे कम पहली मे (७॥ धनुष्य की छ अगुल) और सबसे ज्यादा सातवी मे (५०० धनुष्य की) ।

२५ प्र०—नेरिया असली शरीर से कम ज्यादा कर सकता है या नही ?
उ०—ज्यादा से ज्यादा दुगुणा कर सकता है ।

२६ प्र०—नर्क मे प्रकाश होता है या नही ?
उ०—नही, वहा हमेशा अन्धकार ही रहता है ।

२७ प्र०—अन्धकार मे वे एक दूसरे को कैसे देखते है ?
उ०—अवधिज्ञान या विभग ज्ञान से ।

२८. प्र०—अवधिज्ञान से कहा तक देख सकता है ?
उ०—कम से कम आध कोष, सातवी नर्क मे । ज्यादा से ज्यादा ४ कोस पहली नर्क में ।

२९. प्र०—नेरियो के इन्द्रिया कितनी होती ह ?
उ०—पाच ही होती हैं ।

३०. प्र०—अपन कभी नेरिये व परमाधामी हुए होगे ?
उ०—अनन्त ही वार ।

सूर्य का मांडला
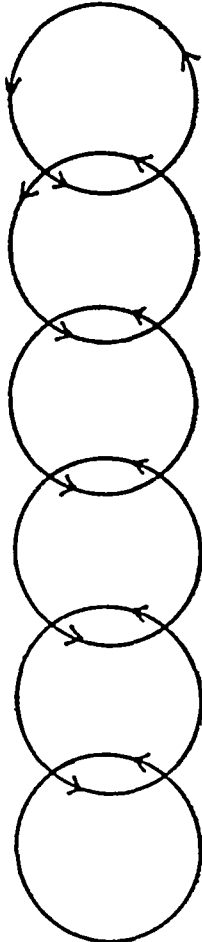
पाठ- १७

काल चक्र

१. प्र०—मानुष्य क्षेत्र (ढाई द्वीप) मे चन्द्रमा सूर्य आदि गोल फिरते है इससे हमे क्या लाभ है ?

उ०—दिन और रात होती है जिससे हमे काल (घडी) पल आदि का प्रमाण मालूम होता है ।

२. प्र०—आज प्रात.काल से दूसरे (कल) प्रात.काल तक को क्या कहते हैं ?

उ०—एक दिन या अहोरात्री ।

३ प्र०—एक अहोरात्री की घडी कितनी है ?

उ०—साठ (६०) ।

४. प्र०—एक अहोरात्री के मुहूर्त कितने हैं ?

उ०—तीस ।

५ प्र०—एक मुहूर्त की घडी कितनी ?

उ०—दो, ।

६. प्र०—दो घडी यानि एक मुहूर्त की आवलिका कितनी ?

उ०—एक क्रोड सडसट लाख सततर हजार दो सौ सोलहा १,६७,७७,२१६ ।

७. प्र०—एक आवलिका के असख्यातवां भाग को क्या कहते है ?

उ०—समय यानि अति सूक्ष्म काल जिसके दो भाग केवली भगवान के भी कल्पनामें नही आ सकते ।

८. प्र०—आंख बन्द कर खोले उतने मे कितने समय वीतते है ?

उ०—असंख्याता जिसकी सख्या अपन नहीं कर सकते।

९. प्र०—कितने दिन का एक पक्ष, कितने पक्ष का एक मास, कितने मास की एक ऋतु, कितने ऋतु का एक अयन, और कितने अयन का एक वर्ष होता है ?

उ०—१५ दिन का एक पक्ष, २ पक्ष का एक मास, २ मास का एक ऋतु, ३ ऋतु का एक अयन और २ आयन का एक वर्ष होता है।

१०. प्र०—एक वर्ष की ६ ऋतुओ के नाम क्या है ?

उ०—हेमन्त (मृगसर, पोष) शिशर (माघ, फागन) बसन्त (चैत, वैसाख) ग्रीष्म (जेठ, आसाढ) वर्षा (सावन भादवा) सर्द (आसोज, कार्तिक)।

११. प्र०—पूर्व किसको कहते है ?

उ०—८४ लाख वर्ष का एक पूर्वांग होता है और ८४ लाख पूर्वांग का एक पूर्व होता है। यानि ८४ लाख को ८४ लाख से गुणा करने से ७०५६०००-००००००० सीत्तर लाख छप्पन हजार किरोड वर्ष का १ पूर्व होता है।

१२. प्र०—पल्योपम किसको कहते है ?

उ०—चार कोस का लम्बा चौडा व ऊचा एक कूआ होवे जिससे सात दिन के जुगलिये बालक के केशों के टुकडे-टुकड़े करके भरे जिस कूए पर चक्रवर्ती राजा की सैना निकल जाने पर भी कुछ भी नही दबे और उसमे से सौ-सौ वर्ष से एक-एक केश का टुकडा निकाला जावे जब सम्पूर्ण कुआ खाली हो जावे तब एक पल्योपम काल व्यतीत होता है।

१३. प्र०—सागरोपम किसे कहते हैं ?
उ०—दस क्रोडा क्रोड पल्योपम का एक सागरोपम होता है ।

१४. प्र०—कालचक्र का अर्थ क्या है ?
उ०—दस क्रोडाक्रोडी सागरोपम का एक अवसर्पिणी काल यानि जिसमे सुख व पुद्गलो की सरसाई समय-समय मे घटती जाती है । दस क्रोडाक्रोड सागरोपम का एक उत्सर्पिणी काल जिसमे समय-समय पर सुख और पुद्गलो की सरसाई बढती जाती है । यह दोनो मिलकर बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम का एक कालचक्र होता है ।

१५ प्र०—काल चक्र के बारह आरो मे घटता बढता काल का परिणाम कौन से क्षेत्रों मे होता है ?
उ०—पाच भारत व पाच ईरवृत मिलकर १० क्षेत्रो मे बढता घटता भाव वरत रहा है ।

१६ प्र०—एक अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी के कितने आरे होते हैं ?
उ०—छ छ ।

१७ प्र०—यह छ आरे एक सरीखे होते हैं या छोटे वडे ?
उ०—छोटे वडे होते है ।

१८. प्र०—एक काल चक्र के बारह आरो के नाम क्या है ?
उ०—प्रथम अवसर्पिणी के ६ आरो के नाम—१ सुखमा सुखम, २ सुखम, ३ सुखमा दुखम, ४. दुखमा सुखम, ५ दुखम, ६. दुखमा दुखम ।
उत्सर्पिणी काल के ६ आरो के नाम—१ दुखमा दुखमा, २. दुखम, ३. दुखमा सुखम, ४ सुखमा

दुखम, ५. सुखम, ६. सुखमा सुखम ।

१६. प्र०—अवसर्पिणी काल के ६ आरों के काल का प्रमाण क्या है ?

उ०—पहला आरा चार क्रोडा क्रोड सागरोपम का, दूसरा तीन क्रोडाक्रोडा सागरोपम का, तीसरा दो क्रोडा-क्रोड सागरोपम, चौथा एक क्रोडाक्रोक्र सागरोपम मे ४२ हजार वर्ष कम, पाचवा और छट्ठा इकीस-इकीस हजार वर्ष का ।

२०. प्र०—उत्सर्पिणी काल के ६ आरो का प्रमाण क्या है ?

उ०—पहला और दूसरा इकीस-इकीस हजार वर्ष का तीसरा एक क्रोडाकोड सागरोपम मे ४२ हजार वर्ष कम, चौथा दो क्रोडाक्रोड सा० का, पाचवां तीन क्रोडाक्रोड सा० का और छट्ठा चार क्रोडा-क्रोड सा० का ।

२१. प्र०—अवसर्पिणी काल के पहले आरे का सुख कैसा होता है ?

उ०—देव कुरु उत्तर कुरु के जुगलिया जैसा होता है। तीन पल्योपम का आयुष्य और ३ कोस का शरीर। मनुष्य के शरीर मे २५६ पासुली होती है और ३ दिन से अहार की इच्छा होती है। स्त्री पुरुष महादिव्य रूपवन्त सरल स्वभावी होते हैं । इस आरे मे पृथ्वी की सरसाई मिश्री जैसी होती है।

२२. प्र०—अवसर्पिणी काल का दूसरा आरा कैसा होता है ?

उ०—इस आरे का सुख हरिवास रम्यक वास के जुग-लिया जैसा होता है, दो कोस का शरीर, दो पल्योपम का आयुष्य व १२८ पांसुली होती है

और दो दिन से आहार की इच्छा होती हैं, पृथ्वी का स्वाद शकर जैसा होता है।

२३ प्र०—अवसर्पिणी का तीसरा आरा कैसा होता है ?

उ०—उसका सुखमादुखम् नाम है, (यानि सुख बहुत और दु ख थोडा) एक कोस का शरीर, एक पल्योपम का आयुष्य और शरीर में ६४ पासुली होती है। एक दिन से अहार की इच्छा होती है। पृथ्वी का स्वाद गुड जैसा होता है।

२४. प्र०—अवसर्पिणी का चौथा आरा कैसा होता है ?

उ०—उतरते तीसरे आरे मे काल स्वभाव से दस प्रकार के कल्पवृक्ष इच्छित वस्तु पूरी नही देने से जुगलिये आपस मे लडने लगते हैं उनको समझाने को १५ कुलकर अनुक्रम से होते हैं, पहले से ५ कुलकर तक हकार दड चलता है ६ से १० तक मकार दड चलता और ११ से १५ तक धिक्कार दड चलता है। अर्थात लडते हुए जुगलिया को, हैं, मत, धिक्कार कहने से शरमा कर भाग जाते हैं। और अकर्म भूमि मिटकर कर्मभूमि होती है। तीसरे आरे के ८४ लाख पूर्व से कुछ ज्यादा वाकी रहे तव १५वें कुलकर पहले तीर्थंकर अध्योध्या नगरी में होते हैं, उस समय काल दोष से कल्पवृक्ष सर्वथा फल देने वद हो जाते हैं। तव मनुष्य भूख से पीडित हो अकुलाते हैं उस समय करुणा करके जो होने वाले तीर्थंकर होते है, वे वहा स्वभाव से ही उत्पन्न हुआ २४ प्रकार का अनाज खाना वताते हैं। कच्चा अनाज खाने से

पेट मे दर्द होने लगता है। तब अरणी की लकडी से अग्नि जला उसमे पकाने को कहते है। भोले प्राणी अग्नि को अनाज खाते देखकर कहते हैं कि इसका ही पेट नही भरता तो हमे क्या देगी। तब प्रथम कुभकार की स्थापना करते है और अनुक्रम से ४ कुल, १८ श्रेणी, १८ प्रश्रेणियो, ३६ कौम और ७२ कला पुरुष की, ६४ स्त्री की, १८ लिपिओं १४ विद्या आदि की स्थापना करते हैं। तब इन्द्र इनको राज्यपद देता है फिर राणी पुत्र की वृद्धि होती है और वे अन्त मे राज्य पाट सव छोड दीक्षा ले, तीर्थंकर पद प्राप्त कर, चार तीर्थ की स्थापना कर, मोक्ष पधारते है। और अनुक्रम से समय-समय पर बाकी के २३ तीर्थंकर होते हैं और चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव प्रतिवासुदेव आदि श्लाघीय पुरुष भी इसी आरे मे होते हैं।

२५ प्र०—अवसर्पिणी कालका पांचवां आरा कैसा होता है ?

उ०—पांचवां दुखम आरा (केवल दुःख ही है) २१ हजार वर्ष का होता है, वर्णादि पर्याय मे अनन्त गुणा हीनता होती है, ओर आयुष्य घटते घटते जाझेरा सौ वर्ष का रह जाता है। सात हाथ का शरीर और १६ पासुली होती है।

२६. प्र०—अवसर्पिणी काल का छठा आरा कैसा होता है ?

उ०—छट्ठा दुखमा दुखम आरा २१ हजार वर्ष का होगा। उसके अन्तिम दिन पहले देवलोक के सकेन्द्रजी का आसन चले (अग फुरुके) तब सकेन्द्रजी यहां के लोगो को सूचित करेंगे कि हे लोगों! होशियार

हो जाओ, कल पांचवां आरा उतर के छट्ठा आरा बैठेगा सुकृत करना होवे सो करलो। इस सुचना से उत्तम पुरुष तो सथारा कर स्वर्ग मे जावेंगे। फिर सवर्तकनामा महावायु चलेगी इससे सर्व-पहाड, नदी, किल्ले टूट पडेंगे, केवल वेताढ्य-पर्वत, गगा, सिंधु नदी, रूषभकूट और लवण समुद्र की खाई इनके सिवाय सर्वक्षय हो जायेंगे। उस समय पहले प्रहर मे जैन धर्म और दूसरे प्रहर मे सर्व धर्म विच्छेद जायेगे। तीसरे प्रहर मे राज-नीति और चौथे प्रहर में बादर अग्नि विच्छेद जायगी। उस समय भरत क्षेत्र का अधिष्टायक देवता केवल मनुष्य पशु को उठाकर गगा और सिधु नदी के वेताढ्य पर्वत के दक्षिण और उत्तर चार काठे दोनो तरफ के आठ आठ काठे मे नव-नव बिल सब मिलके ७२ बिल है। एक-एक बिल मे ३-३ मजले उनमे इन मनुष्यो को रखेंगे। उस समय वर्ण, गध, रस, स्पंश के पर्यायो मे अनन्त गुणा पुद्गल की हीनता हो जायेगी। उन मनुष्यो का उत्कृष्ट २० वर्ष का आयुष्य और १ हाथ का शरीर रह जायगा। आठ मासुली और अहार की इच्छा अप्रमाण यानि तृप्ति होवे ही नही। रात्रि मे ठड और दिन मे गर्मी विशेष पडेगी इसलिए मनुष्य बाहिर नही निकल सकेंगे। सिर्फ प्रात. और सन्ध्या को बाहर निकल गगा सिंधु जिसमें अर्द्ध चक्र प्रमाणा जल वहेगा उसमे के कच्छ–मच्छ पकड रेती मे दबा देंगे, प्रात. का

संध्या और संध्या का प्रातः लाकर खावेगे और पशु की हड्डियो को ही चाट कर रहेगे, मृत्यक की खोपडी मे पानी पीवेंगे, वह अति निर्बल कुरूपी, दुर्गन्धि, रोगीष्ट, गंदे, अपवित्र, नग्न, पशु की तरह रहेगे। जैसे तिर्यञ्च मे माता भगनी का विचार नही है, वैसे ही उनको भी कुछ विचार नही रहेगा। ६ वर्ष की स्त्री गर्भधारण करेगी। लडके लडकी वहुत होगे गडसूरी जैसे परिवार लेके फिरेंगे। महाक्लेशी और महादु.खी होगे। धर्म पुण्य रहित एकान्त मिथ्यात्वी मरके नरक और तिर्यञ्च गति मे जावेंगे।

२७. प्र०—उत्सर्पिणी काल के मनुष्यो के सुख दुःख कैसे होते है ?

उ०—उत्सर्पिणी काल का पहला आरा अवसर्पिणी काल के छट्टा आरा जैसा जानना। उ. स का दूसरा आरा अ. स. का पाचवां आरा जैसे जानना। उ. स. का तीसरा आरा अ. स. के चौथा आरा जैसे जानना। उ. स. का चौथा आरा अ. स. के तीसरा आरा जैसे जानना। उ. स का पांचमा आरा अ. स. के दूसरा जैसे जानना। उ. स. का ६ छट्टा आरा अ. स. के पहला आरा जैसे जानना।

२८. प्र०—यहा अभि कौन से काल का कौनसा आरा चल रहा है ?

उ०—अवसर्पिणी काल का पांचवां आरा चल रहा है।

२९. प्र०—एक काल चक्र में भरत इरवृत मे जुगल के कितने

काल चक्र

उत्सर्पिणी काल अवसर्पिणी काल
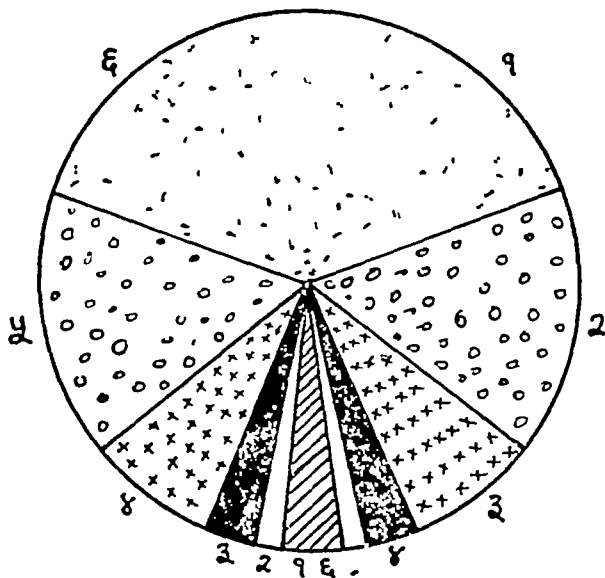
६-१ पहला आरा-सुखमा सुखम् ४ क्रोडा क्रोड़ी सागरोपम

५-२ दूसरा आरा - सुखम् ३ क्रोडा क्रोडी सागरोपम

४-३ तीसरा आरा सुखम् दुखम् २ क्रोडा क्रोडी सागरोपम

३ ४ चौथा आरा - दुखम् सुखम् ४२ हजार वर्ष कम १ क्रो क्रोसा

२-५ पॅचवा आरा - दुखम् २१ हजार वर्ष का

१-६ छठा आरा- दुखम् दुखम २१ हजार वर्ष का
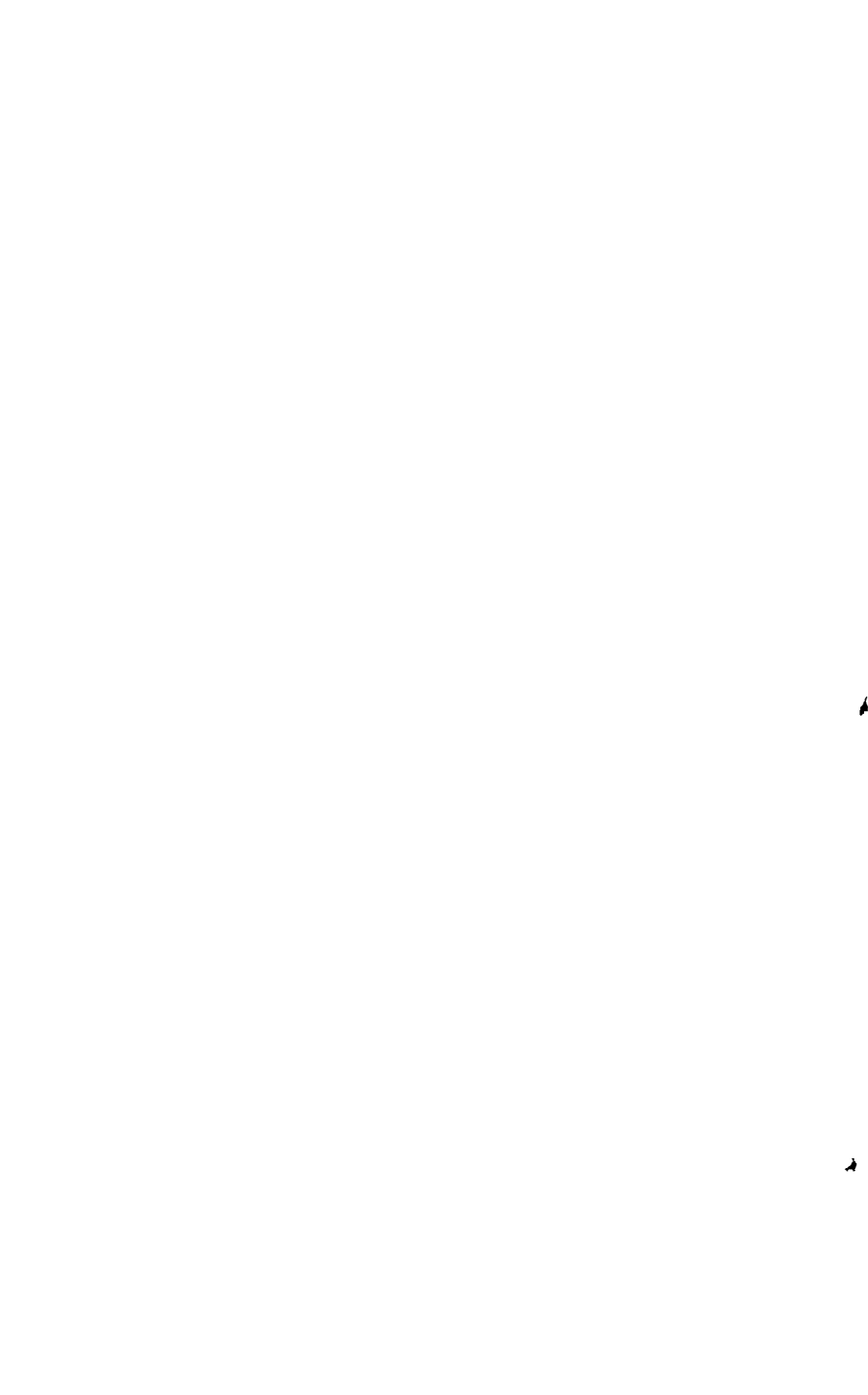
आरे होते है ?

उ०—अवसर्पिणी के पहले तीन व उत्सर्पिणी के अन्तिम के तीन मिलकर छ आरे जुगल के समझना।

३० प्र०—पुद्गल परावर्तन किसको कहते है ?

उ०—अनन्त काल चक्रका एक पुद्गल परावर्तन होता है।

३१ प्र०—मनुष्य जीव ने ससार में भटकते-भटकते कितने पुद्गल परा ातंन क्रिये होगे ?

उ०—अनन्ता।

पाठ—१८

सम्यक्त्व

१. प्र०—समकित का अर्थ क्या है ?

उ०—समकित का अर्थ सच्ची मान्यता यानि तत्व को अच्छी तरह समझकर उस पर श्रद्धा रखते हुए कुदेव, कुगुरु, और कुधर्म को छोड सुदेव, सुगुरु, और सुधर्म पर श्रद्धा रखना।

२. प्र०—कुदेव किसको कहते है ?

उ०—जो देव क्रोधी हिंसक होवे, हिसाकारी शस्त्र रखे। जिनमे विषय वाछना है और जो देव एक का भला और दूसरे का बुरा करने को तैयार है व गाना, बजाना, नाटक चेटक में मोहित रहते हैं

उनको कुदेव कहते है ।

३. प्र०—कुदेव को देव माने, उनको क्या कहना चाहिए ?

उ०—नही, मिथ्या दृष्टि (झूटी मान्यता) वाले ।

४. प्र०—सुदेव किसको कहते है ?

उ०—जो रागद्वेष रहित है, क्षमा और दया के सागर है, पूर्णज्ञानी है, जिनके बचनो मे पहले कुछ कहा, पीछे कुछ कहा ऐसा नही है । जिनकी वाणी मे प्राणी मात्र की भलाई है वही सत्य सुदेव है, देवो भी देव है, तीन लोक के पूजनीक है, भवसागर से तारने वाले है, कर्म रूप भाव शत्रुओ को हनने वाले होने से अरिहन्त है ?

५. प्र०—सुदेव को देव माने, उनको क्या कहना चाहिये ?

उ०—हा, समकित यानि सच्ची मान्यता वाले ।

६. प्र०—देव चाहे जैसे हो किन्तु श्रद्धा से भजने वाले को क्या समकिती नही कहना ?

उ०—नही, जो काच और हीरा की परीक्षा नही कर सकता उसको जोहरी कैसे कहना । जो सोने और पीतल की परीक्षा नही कर सकता उसे सर्राफ कैसे कहना । वैसे ही जो सुदेव कुदेव की परीक्षा नही कर सकता उसे समकिती कैसे कहना ।

७. प्र०—कुदेवो को भोले लोग परमेश्वर सपझकर मानते है, पूजते है, तो क्या उनको कुछ हानी होती है ?

उ०—हा, हानी अवश्य होती है, जैसे कोई मूर्ख जहर के प्याले को अमृत समझकर पी लेवे तो क्या नाश नही होगा । इसी तरह कुदेव को सुदेव समझने वाला अपने आत्मिक गुण का नाश

करता है क्योकि जिसको वह भजता है वैसा ही होना चाहता है। जो देव क्रूर हिंसक कपटी कामी लोभी या अन्यायी होवे, उसको भजने वाले मे यही गुण आवेंगे। जैसे देव वैसे पूजारी इसलिए साश्वत सुख के अभिलाषी जीवो को ऐसे कुदेवो को कदापि नही मानना चाहिए।

८. प्र०—कुगुरु किसको कहते हैं ?

उ०—जो स्त्री, पुत्र आदि गृहवास रूप जेल मे पडे हैं, जो पैसे के गुलाम हैं जिनको भक्ष्याभक्ष का विचार नही है, विषय लुब्ध हैं, जो सर्व वस्तु के अभिलाषी है, मिथ्या उपदेश के करने वाले है।

९. प्र०—क्या कुगुरु अपन को तार सकते है ?

उ०—जो स्वय ही डूबा रहता है, वह दुसरो को कैसे तार सकता है।

१०. प्र०—पुगुरु कैसे होते हैं ?

उ०—जिन्होने हिसा, झूठ' चोरी स्त्री संग व सर्व प्रकार से परिग्रह को छोड कर पच महाव्रत धारण किये हैं यानि ऊपर के दूपणो का आप सेवन करते नही, दूसरो से कराते नही, करने वालो को भला भी समझते नही और भिक्षाचारी से निर्दोप आहार, पानी लाकर अपना गुजारा चलाते हैं। जिनमें समभाव है और सत्य-धर्म उपदेश के करने वाले है वही सद्गुरु है। उनके मानने वाले समकिती कहलाते है। ऐसा सद्गुरु स्वय ससार सागर तिरते है और दूसरो को भी तिराते है।

११. प्र०—कुधर्म किसको कहते है ?

उ०—जो धर्म कुदेव व कुगुरुओं का चलया हुआ हो। जिस धर्म के चलाने वाले खुद ही अज्ञान होने से आत्मा, पुनर्जन्म, पुण्य, पाप, स्वर्ग, नर्क आदि कुछ नही मानते, एकान्तवादी हो, जिनके धर्म का सिद्धान्त पूर्वापर (परस्पर) विरूद्ध हो, जो धर्म नीति या न्याय से भी विरुद्ध हो, जिसमे पशु वध आदि हिसा का उपदेश हो, जिस धर्म मे त्याग, वैराग्य ब्रह्मचर्य आदि उत्तम तत्वो का अभाव हो, ऐसे धर्म को कुधर्म कहते है। इसको मानने वालो को मिथ्यात्वी कहते है।

१२. प्र०—सुधर्म किसको कहते है ?

उ०—जो धर्म सर्वज्ञ का बतलाया हुआ हो, जिसमे प्राणीमात्र का हित उपदेश हो, जो नीति या न्याय से युक्त हो, जिसमे तत्व निर्णय यथार्थ हो, कोई युक्ति से खण्डन नही हो सकता हो, जिस धर्म मे मन और इन्द्रियो को काबू मे रखने के लिये और आत्मा के गुणज्ञानादि प्रगट होने के लिये उत्तमोत्तम उपाय बतलाये हो, उसको सुधर्म कहते है और उसको मानने वाले समकिती कहलाते है।

१३. प्र०—सुदेव रागद्वेष रहित है तो उनके मानने वाले तिरजावे और नही मानने वाले नही तिरे। यह पक्षपात क्यो होना है ?

उ०—सुदेव जगत् के जीवो के कल्याण के लिये और ससार सागर से उनको तारने के लिये धर्म की प्ररूपना करते है चाहे जो मनुष्य धर्म रूप नाव

विशुद्ध-इन सबसे अलग शुद्ध क्षायिक सम्यक्त्वी (४ गुण स्थान)

(सम्यक्त्व मोहनीय)
शुद्ध
क्षयोपशमिक सम्यक्त्वी
अविरत सम्यग्दृष्टि गुण स्थान

अर्ध शुद्ध → मिश्र मोह• मिश्र गुण स्थान

अशुद्ध → मिथ्यात्व मोह•
मिथ्यात्व गुणस्थान
मिथ्यात्वी (स्वादिसान्त)।
अनन्तानुबंधी चौक का
उदय।

सास्वादान
गुणस्थान
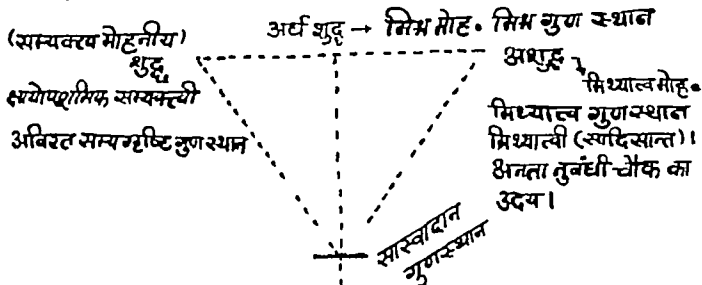
औपशमिक सम्यक्त्वी

सम्यक्त्वी जीव उपशमभाव मे शान्त
प्रशान्त रहता है।

दर्शन मोहनीय के ३ पुंज
बनाकर आगे फेंकता है

चारित्र मोहनीय
के अनंतानुबंधी चौक
का उपशम करता है

३ अनिवृत्तिकरण
अंतर करण

पहले कभी नहीं किया ऐसे
परिणाम होते हैं

२ अपूर्व करण

१ यथा प्रवृत्ति करण

भव्य तथा अभव्य दोनो जीव यहाँ
तक आते हैं। भव्य आगे बढ़ता है
अभव्य लौट आता है।

पल्योपम के असं भाग कम एक
क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपम की स्थिति

मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति ७० क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपम
अनादि कालीन – मिथ्यात्वी जीव
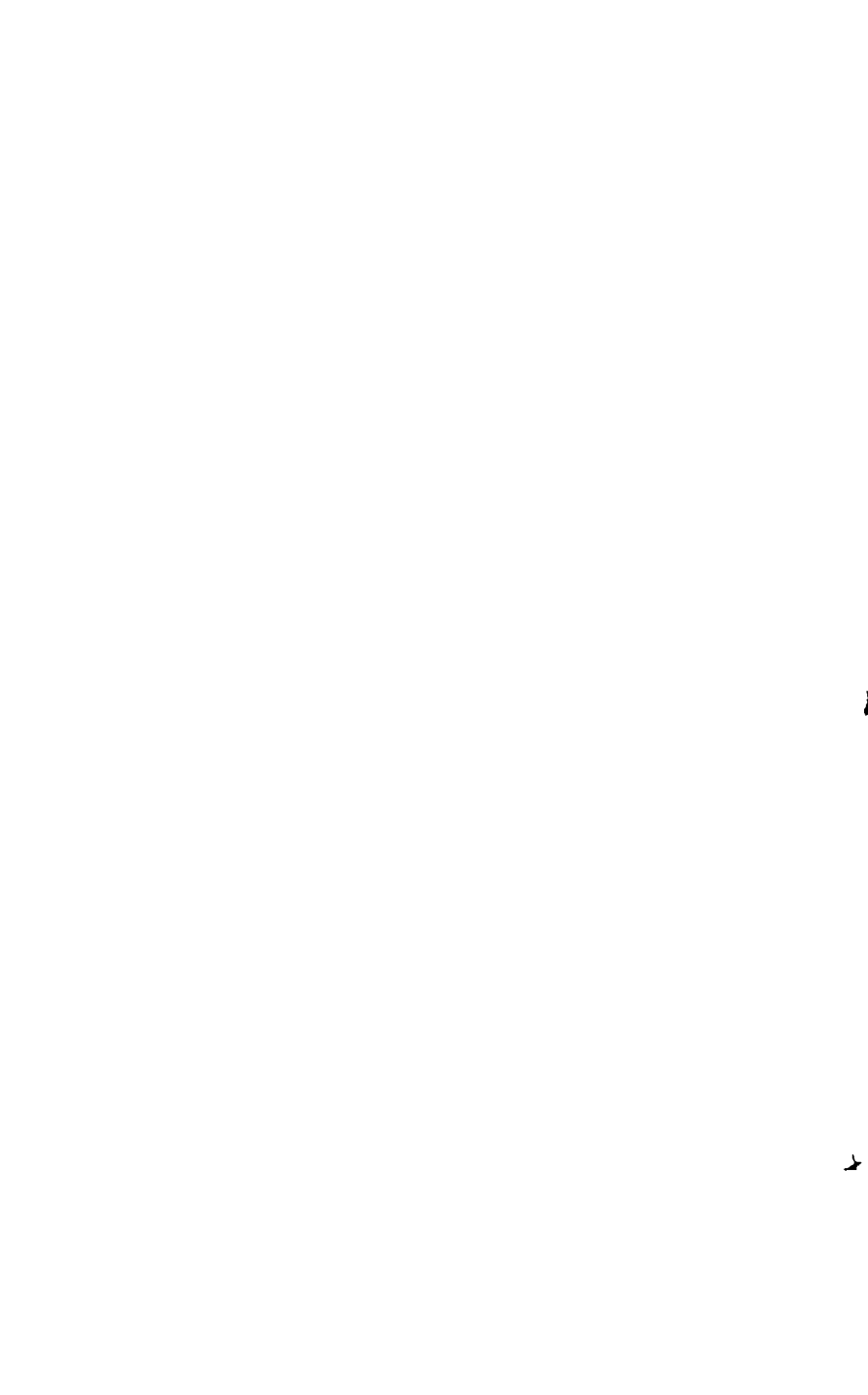
का अवलम्बन लेकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। धर्मरूप नाव मे बैठने के लिये सब किसी को बैठने का समान हक है। ब्राह्मण ही उसमे बैठने योग्य है और चाडल नही है ऐसा पक्षपात सर्व जीवो के स्वामी श्री बीतराग देव के बनाये हुए धर्मरूप नाव मे नही है। चाडाल के वहा जन्म पाये हुये घोर पापिष्ट जीव इस नाव का अवलम्वन लेकर ससार समुद्र तिर गये, तिरते है, और तिरेंगे।

१४ प्र०—इस धर्मरूपी नाव को कौन चलाते हैं ?

उ०—सद्गुरु महाराज नाव के नाविक है पाखड या मिथ्यात्वरूप तूफान से और मोहरूपी वायु से नावकी रक्षा कर उसमे बैठे हुए जीवो को सही सलामत किनारे पर पहुचाते है किसी को स्वर्ग मे किसी को मोक्ष मे ले जाते है।

१५. प्र०—समकिती की प्राप्ति से जीव को क्या लाभ है ?

उ०—समकिति जीव ससार समुद्र तिर कर मोक्ष के अनन्त सुख प्राप्त करने मे समर्थ होते है धर्मरूप नाव मे बैठते है। ससार समुद्र के दुःख रूप मोजें उनको दुःख नही दे सकते वे जल्दी या देरी मे अवश्य मोक्ष मे जाते है।

१६ प्र०—समकिति जीव अधिक से अधिक कितने भव मे मोक्ष जा सकते है ?

उ०—पन्द्रह भव में, यदि मोह मिथ्यात्व रूप वायु के जोर से समकित रूप दीपक बुझ जाय तो वह मनुष्य ससार रूप समुद्र मे गिर पडता है और

ज्यादा से ज्यादा अर्द्ध पुद्गल परावर्तन मे मोक्ष जा सकता हैं।

१७. प्र०—समकिती जीव मरके कहां उत्पन्न होते हैं ?

उ०—मोक्ष मे, वैमानिक देवो मे, कर्म भूमि के मनुष्यों मे किन्तु समकित की प्राप्ति के पहिले आयुष्य कर्म का बध हो जाय तो चार ही गति में उत्पन्न हो सकते है।

१८. प्र०—मनुष्य समकिती है या नही, यह कैसे मालूम हो सकता है ?

उ०—समकित आत्मा का गुण होने से अरूपी है निश्चय से तो ज्ञानी ही जान सकते है। तो भी जिसमे निम्नलिखित ५ लक्षण देखने मे आते है वे समकिती है ऐसा अनुमान से कह सकते है।

१ शम (शत्रु मित्र पर समभव)।
२. सवेग (वैराग्य भाव या मोक्ष अभिलाषी)।
३. निर्वेद (विषय पर अरुचि)।
४. अनुकम्पा (दु खी जीवो पर दया करना)।
५. आस्था (जिन बचनों पर सम्पूर्ण श्रद्धा रखे)।

पाठ-१९

अधोलोक में भवनपति देव

१. प्र०—देवो की मुख्य जाति कितनी है और कौन-कौन

सी हैं ?

उ०—चार, भुवनपति, वाणाव्यतर, ज्योतिषी और वैमानिक देव ।

२. प्र०—लोक के तीनो विभाग में से किस भाग में देव रहते है ?

उ०—तीनो ही लोक में देव रहते है ।

३ प्र०—लोक के किस-किस विभाग में कौन-कौन जाति के देव रहते हैं ?

उ०—अधोलोक भुवनपनि देव, तीर्छा लोक में वाणव्यन्तर और ज्योतिषी देव और उर्ध्वलोक में वैमानिक देव रहते हैं ।

४ प्र०—भुवनपति देव कितनी जाति के हैं ?

उ०—दस जाति के, १ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुवर्णकुमार, ४ विज्जुकुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वोप कुमार ७ उदधिकुमार, ८ दिशाकुमार ९ पवनकुमार १० स्थनितकुमार ।

५ प्र०—भुवनपति दव अधलोक में कहा-कहा रहते हैं ?

उ०—पहिली रत्नप्रभा नरक में १३ पाथडे (छात को कहते हैं) और १२ आन्तरे (छान और जमीन के वीच की जगह) हैं इन वारह आन्तरो में से पहिला और छेला यानि नीचे का यह दोनो खाली है वीच के १० ही आन्तरो में दस ही जाति के भुवनपति देव अलग-अलग रहते हैं ।

६. प्र०—भुवनपति देव और नरक के नेरिये क्या साथ-साथ ही रहते हैं ?

उ०—नही, भुवनपति देव तो पाथडे के ऊपर के आन्तरो

में रहते हैं, और नारकी के जीव पाथडे (छात) की पोलार में रहते है ।

७. प्र०—प्रत्येक पाथडे की लम्बाई चौडाई और मोटाई कितनी और उसका कैसा आकार है ?

उ०—लम्बाई चौडाई एक राज की यानि असख्याता जोजन की और मोटाई तीन हजार जोजन की है और आकार घट्टी के पाट जैसा है ।

८. प्र०—पाथडे के बीच मे पोलार कितनी है ?

उ०—एक हजार जोजन की ।

९ प्र०—भवनपति को भवनवासी देव क्यो कहते है ?

उ०—भवन (मकान) में रहने वाले देव है ।

१० प्र०—भुवनपतियो के भवन कितने है ?

उ०—सात किरोड बहतर लाख ।

११ प्र०—दस जाति के भवनपति देवों मे सबसे ज्यादा बलवान और ऋद्धिवान कौन है ?

उ०—असुर कुमार ।

१२ प्र०—भुवनपतियो मे इन्द्र कितने है ?

उ०—बीस, प्रत्येक जाति मे उत्तर का एक व दक्षिण का एक इस प्रकार दो-दो इन्द्र है ।

१३. प्र०—जीव के ५६३ भेद में भुवनपति के कितने भेद है ?

उ०—पचास, १० भुवनपति १५ परमाधामी ये मिलकर २५ भेद हुए २५ अपर्याप्ता व प्रर्याप्ता तिलकर ५० भेद हुए ।

१४ प्र०—परमाधामी देव भुवनपति के दस जाती मे से किस जाति मे है ?

उ०—असुर कुमार की जाति मे ।
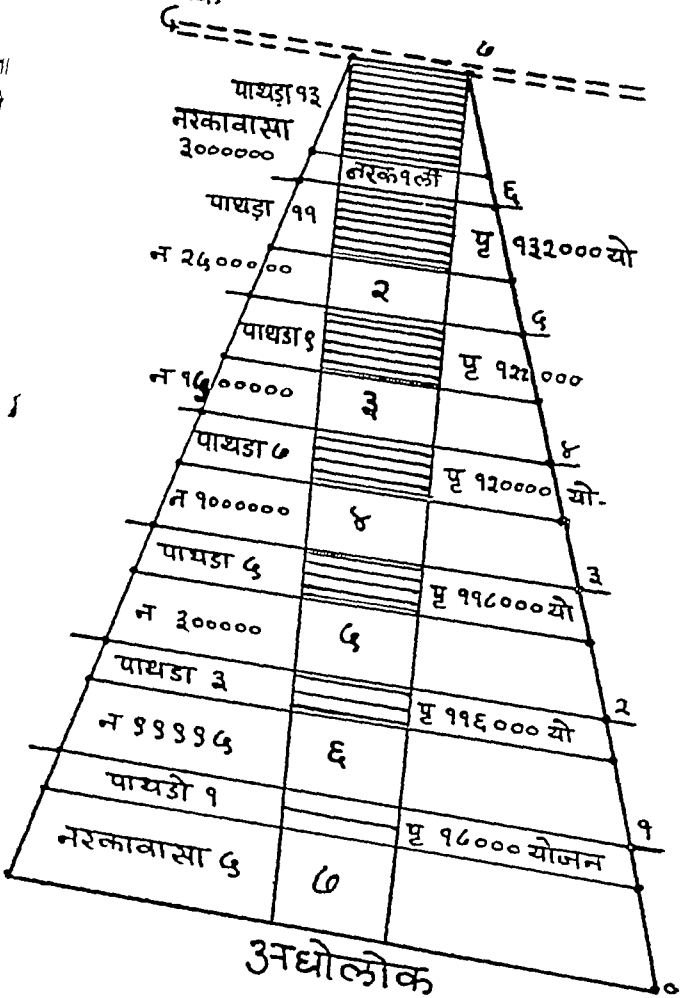
उ०—सिद्ध व संसारी दोनो अनन्त हैं ?

४. प्र०—क्या सिद्ध और संसारी दोनों बराबर हैं ?
उ०—नही, सिद्ध से ससारी अनन्त गुणा अधिक है।
(अनन्त-अनन्त मे भी अनन्त भेद है।)

५ प्र०—सिद्ध और ससारी जीवो मे घट बढ होती है ?
उ०—हा, वे ससारी जीव जैसे-जैसे कर्म बधन से मुक्त होते जाते है वैसे-वैसे सिद्ध होते जाते है। इससे ससारी जीवो की सख्या घटती है।

६. प्र०—सिद्ध के जीव कभी ससारी होगे या नही ?
उ०—कभी नही।

७. प्र०—क्या ससारी जीव सभी सिद्ध हो जायेगे ?
उ०—नही, ससारी जीवो मे भव्य अभव्य ऐसे दो भेद हैं जिसमें अभव्य जीवो को मोक्ष कभी मिलेगी ही नही और भव्व जीवो मे से जो जीव कर्म क्षय करेगे वही मोक्ष पावेंगे।

८. प्र०—भव्य अभव्य का अर्थ क्या ?
उ०—भव्य का अर्थ सिद्ध होने की योग्यता वाले और अभव्य का अर्थ सिद्ध होने के अयोग्य। जैसे मिट्टी रेती मे स्वभाव ही से भेद हैं मिट्टी का तो घडा बन सकता है किन्तु रेत का नही। इसी तरह भव्य अभव्य मे स्वभाव से ही भेद है। भवी जीव कर्म से मुक्त हो सकते है और अभवी नही।

९. प्र०—भव्य जीवो मे जो सिद्ध होने की योग्यता है तो क्या सभी भव्य भव्य जीव मोक्ष में चले जायेगे और अभव्य जीव यहां ही अकेले ही रह जावेंगे।
उ०—नही, कभी ऐसा नही होगा। राजा होने की

योग्यता वाले सभी राजा हो जाना चाहिये। ऐसा नियम नही है। जैसे मिट्टी से घडा बनता है किन्तु पृथ्वी की सम्पूर्ण मिट्टी के घडे नही बन सकते घडे उन्ही मिट्टी के बनेंगे जिस मिट्टी को कुम्हार चाक आदि का सयोग मिलेगा वही मिट्टी घडे रूप हो सकती है इसी तरह जो भव्य जीवो को सुदेव सुगुरु, सुधर्म का सयोग मिल जाता है वे ही जीव सम्यक्ज्ञान, सम्यक्दर्शन, सम्यक्-चारित्र से कर्मबन्धन को तोड मुक्त हो सकते हैं किन्तु सभी नही।

११ प्र०—लोक मे भव्य जीव ज्यादा हैं या अभव्य ?

उ०—अभव्य जीव से भव्य जीव अनन्त गुणा अधिक है।

१२ प्र०—अभव्य जीव भी क्या जैन धर्म प्राप्त करते है ?

उ०—अभव्य जीव भी श्रावक या साधु का व्रत धारण करते है सूत्र सिद्धान्त पढते है और अनेक प्रकार की माया (बाहिर) की क्रिया करते है। तब भी उनको सम्यकज्ञान, दर्शन, चारित्र की प्राप्ती होती ही नही इसी कारण से ज्ञानी की दृष्टि में वे अज्ञानी या मिथ्यात्वी हैं।

१३ प्र०— अभव्य जीव बाहर की करणी करते है तो क्या उसका फल उनको मिलता है ?

उ०—हा अच्छी करणी का अच्छा और बुरी करणी का बुरा फल मिले विना नही रहता अभव्य जीव साधु के बाहर की क्रिया करके जो पुण्यफल उपार्जन, करते है उससे नव ग्रीवक तक जा सकते है।

पाठ-२१

निर्जरा तत्व

१. प्र०—संसार के जीव जन्म जरा मृत्यु या रोगादिक दुःख किस कारण से पाते हैं ?
उ०—किये हुए कर्मों के उदय से ।

२. प्र०—कोई भी जीव सभी दुखो से कब छूट सकता है ?
उ०—कर्म बन्धनों से सर्वथा मुक्त हो जाने पर ।

३. प्र०—जीव कर्मों से कैसे छुट सकता है ?
उ०—नये आते हुए कर्मों को रोकने से और अगले कर्मों का क्षय करने से जीव कर्मों से छूट सकता है ।

४. प्र०—कर्म कहां से आते हैं, और आते हुए कर्म को कैसे रोक सकते हैं और अगले रहे हुए कर्म को कैसे क्षय कर सकते हे ?
उ०—आश्रव रूपी द्वारो से कर्म आते हैं और सवर रूप कपाट (किवाड) से उनके रोक सकते हैं और निर्जरा से अगले कर्मों को क्षय कर सकते हे ।

५. प्र०—निर्जरा किसे कहते हैं ?
उ०—आत्म प्रदेश पर रहे हुए कर्म मैल को बारह प्रकार की तपश्चर्या कर देश से कर्म का दूर होना इसी का नाम निर्जरा तत्व है ।

६ प्र०—निर्जरा के मुख्य भेद कितने है ?
उ०—दो; सकाम (मन सहित) और अकाम (मन बिना) ।

७. प्र०—सकाम निर्जरा किसको कहते हैं ?

उ०—विवेक पूर्वक पोरसी, अर्द्ध पोरसी, उपवास आदि तपश्चर्या करना और कष्ट को समभाव से सहन करना ।

८ प्र०—अकाम निर्जरा किसे कहते है ?

उ०—परवशपणे विषमभाव से कष्ट सहना ।

९ प्र०—इन दोनो में कौनसी निर्जरा श्रेष्ठ है ?

उ०—सकाम निर्जरा, क्योंकि इसी से कर्म वृन्द टूटते है।

१०. प्र०—क्या करने से कर्मों की निर्जरा होती है ?

उ०—तपस्या करने से ।

११. प्र०—तपस्या के मुख्य कितने भेद है ?

उ०—दो, वाह्य (वाहर की) आभ्यन्तर (अन्दर की याने गुप्त) ।

१२. प्र०—इन दोनो में श्रेष्ठ तप कौन सा है ?

उ०—आभ्यन्तर ।

१३ प्र०—वाह्य तप के कितने भेद है और कौन-कौन से है ?

उ०—छ. । १ अनशन–अहार का त्याग करना । २. उणोदरी–भूख से कम भोजन करना । ३. भिक्षाचरी–भिक्षा जाते समय अपिग्रह धारण करना । ४. रस परित्याग–मिष्ट रसादि का त्याग । ५ काय क्लेश–शीत, उष्णा लोचादिक कष्टो का सहन करना । ६. प्रति सहलेणा–अग उपाग को नियम मे रखना ।

१५ प्र०—आभ्यन्तर–तप के कितने भेद हैं ?

उ०—छ. । १. प्रयाश्चित किये हुए पापो का पश्चाताप करना तथा उन पापो को गुरु के पास प्रगट कर

दंड लेना । २. विनय—गुरु आदि बडे जनों की विनय करना । ३. वैयावृत्य—दस प्रकार की वैयावच्च करना । ४. स्वाध्याय—शास्त्रो का अध्ययन या पर्यटन करना । ५. ध्यान—धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान मे आत्मा को जोडना । ६. कायोत्सग—काउसग्ग यानि शरीर की ममता को त्याग कर दृढ़ता से ध्यान मे आरूढ रहना ।

पाठ–२२

उर्ध्वलोक में वैमानिक देव

१. प्र०—जीव के ५६३ भेद मे से देवताओ के कितने भेद है ?

उ०—१९८ (भुवनपति के ५०, वाणाव्यतर के ५२, ज्योतिषी के २० और वैमानिक के ७६) ।

२. प्र०—वैमानिक देवो के ७६ भेद किस तरह से है ?

उ०—वैमानिक देव की ३८ जाति है । जिसमे १२ देव लोक के, ३ किल्विषी, ९ लोकांतिक, ९ ग्रीवेयक और ५ अनुत्तर विमान यह ३८ है जिनके अपर्याप्त और पर्याप्त मिलकर ७६ भेद हुए ।

३. प्र०—१२ देवलोक के नाम क्या है ?

उ०—१ सुधर्म, २ ईशान, ३ सनतकुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्मलोक, ६ लांतक, ७ महाशुक्र, ८ सहस्रार,

९ आणात, १० प्राणत, ११ आरण, और १२ अच्युत ।

४. प्र०—तीनो किल्विषी के नाम क्या है ?

उ०—१. तीन पलिया २. तीन सागरिया और ३. तेरह सागरीया ।

५ प्र०—नव लोकातिक के नाम क्या है ?

उ०—१ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ अरुण, ५ गर्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्यावाव, ८ मरूत्, ९ अरिट्ठ ।

६ प्र०—नवग्रीवेयक के नाम क्या है ?

उ०—१ भद्दे, २ सुभद्दे, ३ सुजाए, ४ सुमाणा से, ५ सुदसणे, ६ प्रियदसणे, ७ आमोहे, ८ सुपडिवद्धे, जसोधरे ।

७. प्र०—पाच अनुत्तर विमान के नाम क्या है ?

उ०—१ विजय, २ विजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराजित और सर्वार्थ सिद्ध ।

८. प्र०—क्या अपन इस शरीर से देवलोक में जा सकते है या नही ?

उ०—इस शरीर से तो नही किन्तु शुभ करणी से पुण्योपार्जन कर देवलोक में उत्पन्न हो सकते है ।

९ प्र०—वैमानिक देव किस लोक में रहते है ?

उ०—उर्ध्वलोक में शनिश्चर के विमान से डेढ राज (असख्याता जोजन) ऊपर पहिला और दूसरा देवलोक आसपास दोनो मिलकर पूर्ण चन्द्रमा जैसे गोल है ।

१०. प्र०—तीसरा और चौथा देवलोक कहा है ?

उ०—पहले और दूसरे देवलोक से असंख्याता जोजन ऊपर आस-पास गोल चन्द्रमा के आकार में हैं।

११. प्र०—पांचवां छठ्ठा, सातवां आठवां देवलोक कहां है ?

उ०—तीसरे चौथे से असख्याता जोजन ऊपर एक पर एक घडे के बेवडे जैसा पांचवा छठ्ठा सातवा और आठवां देवलोक है।

१२. प्र०—९, १०, ११, १२, देवलोक कहां है ?

उ०—आठवें क ऊपर नवमा, दसमा आस-पास और ग्यारहवा, बारहवां आस-पास है।

१३. प्र०—प्रत्येक देवलोक कितने बडे है ?

उ०—असख्याता जोजन के लम्बे चौडे हैं।

१४. प्र०—पहले दूसरे तीसरे और चौथे देवलोक में विमान की सख्या कितनी है ?

उ०—पहले मे ३२ लाख, दूसरे मे २८ लाख, तीसरे मे १२ लाख, और चौथे मे ८ लाख।

१५. प्र०—पांचवें, छट्ठे सातवें आठवे देवलोक मे विमानों की सख्या कितनी है ?

उ०—५ वें मे ४ लाख, ६ ठे मे ५० हजार सातवें में ४० हजार, और आठवे मे ६ हजार हैं।

१६. प्र०—९ और १० में कितने, ११ और १२ में कितने विमान है ?

उ०—९ और १० में ४ सौ, ११ १२ मे ३ सौ है।

१७. प्र०—यहां प्रत्येक विमान मे कितने देव रहते है ?

उ०—प्रत्येक विमान में असख्याता देव रहते है।

१८. प्र०—यहां से कोई देव सीधा ऊचा चढ़े तो बीच में कितने और कौन-कौन से देवलोक आवेंगे ?
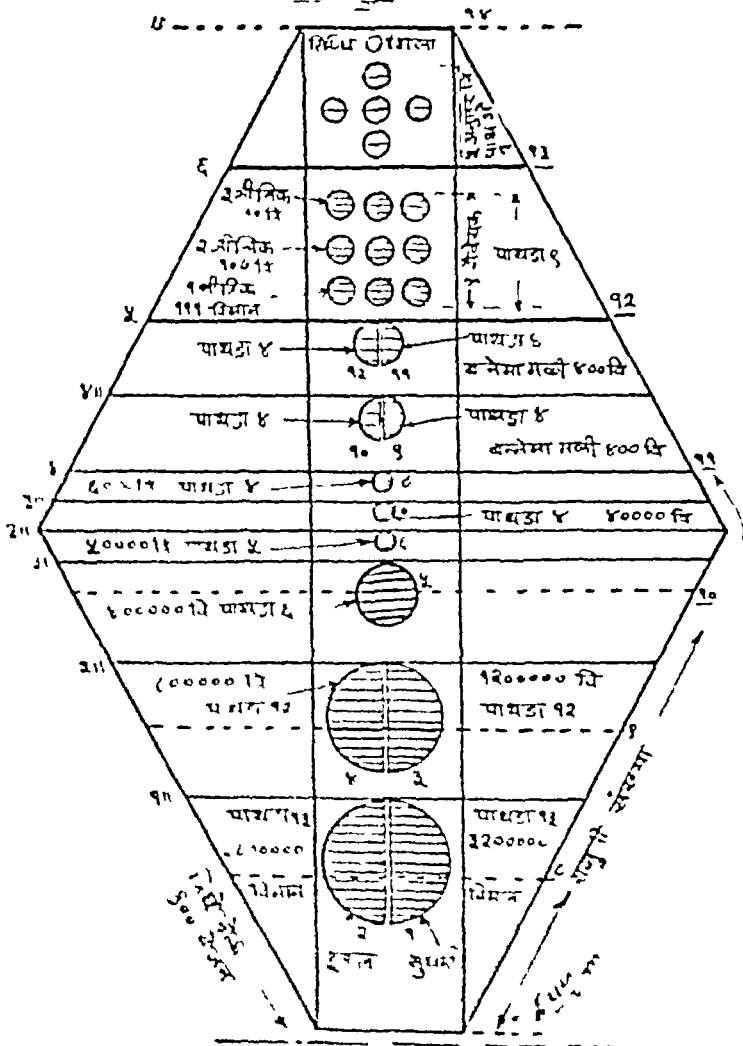
उड्ढ लोय – उर्ध्व लोक
पायडा ४
पायडा ४
पायडा १२
पायडा १२
उर्ध्वलोक

उ०—पहला, तीसरा, पाचवा, छट्ठा, सातवा, आठवा, नवमा, और इग्यारवा। इस तरह से आठ देव-लोक आवेंगे।

१९ प्र०—इस तिर्छा लोक के उत्तर तरफ के आधा भाग मे से कोई देवता पर चढे तो कोन-कौन से देव लोक आवेगे ?

उ०—दूसरा, चोथा, पाचवा, छट्ठा, सातवा, आठवा, दसवा और बारहवा।

२०. प्र०—वैमानिक देवो मे आयु ऋद्धि सिद्धि कम ज्यादा होती है या बराबर ?

उ०—कम ज्यादा, एक-एक से ज्यादा-ज्यादा आयु ऋद्धि सिद्धि होती जाती है।

२१. प्र०—तीन पलीया किल्विषी देव कहा रहते है ?

उ०—तीन पलीया, देवो के विमान पहला दूसरा देवलोक के नीचे के भाग मे।

२२. प्र०—तीन सागरिया किल्विषी देव कहा रहते है ?

उ०—तीसरे चोथे देवलोक के पास नीचे के भाग मे।

२३. प्र०—१३ सागरिया किल्विषी देव कहा रहते है ?

उ०—छट्ठे देवलोक के पास नीचे के भाग मे।

२४ प्र०—किल्विषी देवताओ मे प्राय कैसे जीव उत्पन्न होते है ?

उ०—जिनेश्वर की वाणी के उत्थापक उत्सूत्र (यानि सूत्र विरुद्ध जैसे भगवान की वाणी म हणो ! म हणो ! यानि सब जीवो की दया पालो ऐसी है परन्तु विरुद्ध परूपणा करने वाले कहते है कि हिंसा बिना धर्म होता ही नही) ऐसे जिन आज्ञा के विरोधक जीव

किल्विषी मे जाते है ।

२५. प्र०—किल्विषी जीवो का मान सनमान कैसा होता है ?

उ०—जैसे यहा ढेढ भगी का मान सनमान है वैसा ही वहा उनका भी है नजदीक देवताओ की सभा मे बिना बुलाये जाते है, बैठते हैं, उनकी भाषा किसी को अच्छी लगती नही, कभी बीच मे बोल जावे तो 'मभाष देवा' ऐसा कहकर रोक देते हैं।

२६. प्र०—नवलोकातिक देव कहा रहते हैं ?

उ०—पाचवे ब्रह्मदेव लोक मे ।

२७. प्र०—उनका मान सनमान कैसा होता है ?

उ०—उनका मान सनमान बहुत अच्छा है, लोकान्तिक देव प्रायः समकित सत्य को, अगीकार करने वाले होते हैं । होने वाले तीर्थंकर देव को जब दीक्षा लेने का समय आता है, तब यह देव उनसे अरज करते हैं कि हे भगवान ! आप दीक्षा धारण करो और जगजीवो के कल्याण के लिये धर्म की स्थापना करो ।

२८ प्र०—नवग्रीवेयक कहां है ?

उ०—इग्यारवां व बारहवा देवलोक से असख्यात जोजन ऊपर नवग्रीवेयक की तीन त्रीक है ।

२९. प्र०—वहा प्रत्येक त्रीक मे कितने विमान हैं ?

उ०—प्रथम त्रीक मे भद्दे, सुभद्दे, सुजाये, यह देव लोक मे १११ विमान है, सुमाण से, सुदसणे और प्रिय-दसणे यह दूसरी त्रीक मे १०७ विमान है । अमोहे सुपडिवद्धे, जसोधरे इस तीसरी त्रीक मे १०० विमान है ।

३०. प्र०—पाच अनुत्तर विमान कहा है ?
 उ०—नव ग्रीवेयक से असख्याता जोजन ऊपर।

३१ प्र०—विमानो को अनुत्तर क्यो कहते है ?
 उ०—अनुत्तर का अर्थ प्रधान अथवा श्रेष्ठ इन विमानो मे रहने वाले सब समकिति है, प्रथम चार विमानो के देव जघन्य १ भव मे उत्कृष्ट ३ भव मे मोक्ष जाते है। उनको सब मे अधिक सुख है।

३२. प्र०—विमानिक देवो में इन्द्र कितने है ?
 उ०—बारह देवलोक मे १० इन्द्र है। पहिले के आठ मे एक एक इन्द्र नवमा दसवा में एक और ग्यारवा बारहवा में एक इन्द्र होता है।

३३. प्र०—नवग्रीवेयक और पाच अनुत्तर विमान मे कितने इन्द्र है ?
 उ०—वहा रहने वाले सब स्वतन्त्र है। प्रत्येक देव खुद को इन्द्र समझते है। इससे वे सब अहमेन्द्र गिने जाते है।

३४ प्र०—वहा देवी होती है या नही ?
 उ०—नही, उन देवो को विषय भोग की मलीन इच्छा होती ही नही है।

३५ प्र०—कौनसे देवलोक तक देवी उत्पन्न होती है ?
 उ०—दूसरे देवलोक तक।

पाठ-- २३

दंडक

१. प्र०—सब ससारी जीवो के गति आश्रिय कितने भेद है ?
   उ०—चार, नारकी, तिर्यञ्च, मानुष्य और देवता ।

२. प्र०—सब ससारी जीवों के जाति आश्रय किनने भेद है ?
   उ०—पाच, एकेन्द्रिय से पचेन्द्रिय तक ।

३ प्र०—सब ससारी जीवो के काय आश्रय कितने भेद है ?
   उ०—छ, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय ।

४. प्र०—सब ससारी जीवो के दण्डक आश्रिय कितने भेद है ?
   उ०—चौबीस भेद है ।

५. प्र०—दडक का अर्थ क्या है ?
   उ०—जीवो के कर्म दण्ड भोगने के ठिकाने ।

६. प्र०—चौबीस दण्डक के नाम क्या है ?
   उ०—सात नारकी का एक दडक, दस भुवनपति के दस दडक, पाच स्थावर के पाच दडक, तीन विकलेन्द्रिय के तीन दडक, यह सब मिल १९ हुए बीसवा तिर्यंच पचेन्द्रिय, का २१ वा मानुष्य का, २२ वा वाणाव्यतर देवता का, २३ वा ज्योतिषी देव का और २४ वा वैमानिक देव का दण्डक है ।

७. प्र०—२४ दडक मे से नारकी के कितने है ?
   उ०—सातो ही नरक का पहला दडक है ।

८. प्र०—तिर्यंच के कितने और कौन-कौन से दण्डक है ?

उ०—९, पाच स्थावर के, ३ विकलेन्द्रिय के और एक तिर्यंच पचेन्द्रिय का।

९ प्र०—मनुष्य का कौनसा और कितने दडक है ?

उ०—एक, इकीसवा दडक है।

१०. प्र०—देवता के कितने और कौन-कौन से दडक है ?

उ०—१३, दश भुवनपति के, १ वाणाव्यतर का, एक ज्योतिषी का और एक वैमानिक देव का।

११. प्र०—छट्ठा दडक किसका है ?

उ०—अग्निकुमार देवता का।

१२ प्र०—वनस्पति काय का दडक कौनसा है ?

उ०—१६वा वनस्पति काय का।

१३. प्र०—नमक के जीवो का दडक कौनसा है ?

उ०—१२वा पृथ्वीकाय के दण्डक में है।

१४. प्र०—जल के जीवो का दडक कौनसा है ?

उ०—१३वा, अपकाय का।

१५ प्र०—अग्नि के जीवो का दडक कौनसा है ?

उ०—१४वा अग्नि काय का।

१६ प्र०—हवा के जीव कौन से दडक मे है ?

उ०—१५वा वायुकाय के दडक मे है।

१७ प्र०—शख, सीप, लट आदि का दडक कौनसा है ?

उ०—सतरवा, बेइन्द्रिय के दडक मे है।

१८ प्र०—जू, लीख, चाचर, खटमल कौनसे दडक मे है ?

उ०—१८वा, विकलेन्द्रिय होने से तेइन्द्रिय के दडक मे है।

१९ प्र०—मक्खी, मच्छर, डांस, बिच्छू आदि कौन से दडक मे है ?

उ०—१९वा चउरिन्द्रिय के दडक में है।

पाठ--२३

दंडक

१. प्र०—सब ससारी जीवो के गति आश्रिय कितने भेद है ?
उ०—चार, नारकी, तिर्यञ्च, मानुष्य और देवता ।

२. प्र०—सब ससारी जीवो के जाति आश्रय कितने भेद है ?
उ०—पाच, एकेन्द्रिय से पचेन्द्रिय तक ।

३ प्र०—सब संसारी जीवो के काय आश्रय कितने भेद है ?
उ०—छ, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय ।

४. प्र०—सब ससारी जीवो के दण्डक आश्रिय कितने भेद है ?
उ०—चौबीस भेद हैं ।

५. प्र०—दडक का अर्थ क्या है ?
उ०—जीवों के कर्म दण्ड भोगने के ठिकाने ।

६. प्र०—चौबीस दण्डक के नाम क्या है ?
उ०—सात नारकी का एक दडक, दस भुवनपति के दस दडक, पाच स्थावर के पाच दडक, तीन विकलेन्द्रिय के तीन दडक, यह सब मिल १९ हुए बीसवा तिर्यंच पचेन्द्रिय, का २१ वा मानुष्य का, २२ वा वाणाव्यतर देवता का, २३ वा ज्योतिषी देव का और २४ वा वैमानिक देव का दण्डक है ।

७. प्र०—२४ दडक मे से नारकी के कितने है ?
उ०—सातो ही नरक का पहला दडक है ।

८. प्र०—तिर्यंच के कितने और कौन-कौन से दण्डक है ?

उ०—६, पाच स्थावर के, ३ विकलेन्द्रिय के और एक तिर्यंच पचेन्द्रिय का ।

९ प्र०—मनुष्य का कौनसा और कितने दडक है ?

उ०—एक, इकीसवा दडक है ।

१०. प्र०—देवता के कितने और कौन-कौन से दडक है ?

उ०—१३, दश भुवनपति के, १ वाणाव्यतर का, एक ज्योतिषी का और एक वैमानिक देव का ।

११. प्र०—छट्ठा दडक किसका है ?

उ०—अग्निकुमार देवता का ।

१२. प्र०—वनस्पति काय का दडक कौनसा है ?

उ०—१६वा वनस्पति काय का ।

१३. प्र०—नमक के जीवो का दडक कौनसा है ?

उ०—१२वा पृथ्वीकाय के दण्डक में है ।

१४. प्र०—जल के जीवो का दडक कौनसा है ?

उ०—१३वा, अपकाय का ।

१५ प्र०—अग्नि के जीवो का दडक कौनसा है ?

उ०—१४वा अग्नि काय का ।

१६ प्र०—हवा के जीव कौन से दडक मे है ?

उ०—१५वा वायुकाय के दडक मे है ।

१७ प्र०—शख, सीप, लट आदि का दडक कौनसा है ?

उ०—सतरवा, बेइन्द्रिय के दडक मे है ।

१८ प्र०—जू , लीख, चाचर, खटमल कौनसे दडक मे है ?

उ०—१८वा, विकलेन्द्रिय होने से तेईन्द्रिय के दडक मे है ।

१९ प्र०—मक्खी, मच्छर, डास, बिच्छू आदि कौन से दडक मे है ?

उ०—१९वा चउइन्द्रिय के दडक में है ।

२०. प्र०—गाय भैस कुत्ते आदि का दंडक कौनसा है ?
उ०—१६वा तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के दडक मे ।

२१. प्र०—सिद्ध भगवान का दडक कौनसा है ?
उ०—वे दडक मे नही है, क्योकि उनको कर्म नहीं होने से कर्म, दड भोगना नही पडता है।

२२. प्र०—सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि किस दडक मे है ?
उ०—२३वा ज्योतिषियो के दडक मे।

२३. प्र०—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस आदि किस दडक मे है ?
उ०—२२वा वाणव्यतरो के दडक मे।

२४. प्र०—परमाधामी देवो का कौनसा दडक है ?
उ०—दूसरा असुर कुमार का ।

२५. प्र०—पाच जाति मे से प्रत्येक के कितने दंडक है ?
उ०—एकेन्द्रिय मे ५, बेइन्द्रिय १, तेइन्द्रिय १, चौइन्द्रिय मे १ और पचेन्द्रिय मे १६।

२६. प्र०—छ काय मे से प्रत्येक के कितने दडक है ?
उ०—पृथ्वीकाय का १२वां, अपकाय का १३वा, तेउकाय का १४वां, वायुकाय का १५वां, वनस्पतिकाय का १६वां, त्रसकाय के शेष १९ दडक है।

पाठ-२४

बंध-तत्व

१. प्र०—बंध तत्व किसे कहते हैं ?

उ०—आत्म प्रदेश के साथ पुद्गलो का बाधना बधतत्व कहलाता है ।

२. प्र०—आत्मा के प्रदेश कितने और शरीर मे कहा-कहा है ?

उ०—आत्मा के असख्यात प्रदेश है और वह सारे शरीर मे व्याप्त है ।

३ प्र०—कर्म पुद्गलो का बध आत्मा के कितने प्रदेश पर और कहा-कहा होता है ?

उ०—जैसे दूध मे डाली हुई शक्कर सारे दूध मे मिल जाति है, और तपाये हुए लोहे के गोले मे सब जगह अग्नि फैल जाति है उसी तरह से कर्म-पुद्गल भी आत्मा के प्रदेशो के साथ मिल जाते है ।

४. प्र०—आत्मा कर्म पुद्गलो को किस तरह ग्रहण करता है ?

उ०—मन, वचन, काया के शुभ योगो से शुभ कर्म (पुण्य) और मन, वचन, काया के अशुभ (पाप) योगो से अशुभ पुद्गलो का बध होता है यानि मन वचन, काया और कर्म इन चार साधनो से ही आत्मा कर्म ग्रहण करता है और क्रोधादि कषायो से इसमे रस पडता है ।

५ प्र०—बधन कितने प्रकार के है ?

उ०—४, प्रकृति बध, स्थिति बध, अनुभाग बध और प्रदेश बध ।

६. प्र०—प्रकृति बध का अर्थ क्या है ?

उ०—प्रकृति का अर्थ कर्म स्वभाव यानि कोई कर्म आत्मा के ज्ञान गुण को रोकने वाला होता है और कोई कर्म दर्शन गुण को रोकने वाला होता

है। किसी कर्म का गुण शाता व अशाता देने का होता है। जैसे किसी औषधियुक्त लड्डू का स्वभाव (गुण) वायु हरण करने का होता है और किसी का पित्त रोग मिटाने का होता है, किसी लड्डू के खाने से कफ मिटता है और कोई से शरीर पुष्ट होता है। जैसे लड्डू का स्वभाव है इसी तरह कर्मों का भी स्वभाव है।

७ प्र०—स्थिति बध का अर्थ क्या है?

उ०—जैसे ऊपर बताये लड्डू मे वात, पित्त, कफ हरण का जो गुण है वे कुछ मुद्दत तक रहता है। किसी लड्डू मे १५ दिन, किसी मे १ मास और किसी मे बर्ष भर तक वात, पित, कफ रोकने का गुण रहता है उसी तरह दो समय से सित्तर क्रोडा क्रोडी सागरोपम की स्थिति से जीव कर्म बाधते है। उसको स्थिति बध कहते है।

८. प्र०—अनुभाग किसको कहते है?

उ०—जैसे दवाइयों वे लडडू मे से कोई तो खारा होता है, कोई मीठा तथा तीखा भी होता है। इसी तरह कर्मों के उदय आने से किसी कर्म का फल जीव को मीठा लगता है व किसी कर्म का खारा लगता है किसी कर्मों से ज्यादा दुख और कम सुख होता है, और किसी कर्मों से सुख ज्यादा और दुख कम होता है, इस तरह से जीवो के जो सुख दुख देखने मे आते है उसे रस यानि अनुभाग बध कहते है।

, प्र०—प्रदेश बध किसे कहते है?

उ०—उपरोक्त लड्डू मे से किसी मे द्रव्य का परिमाण थोडा और किसी मे अधिक होता है। इसी तरह किसी बध मे कर्म वर्गणा के पुद्गलो के अनन्त प्रदेशी स्कधो का परिणाम थोडा होवे और किसी मे ज्यादा।

१०. प्र०—बध जीव को हितकारी है या अहितकारी है?

उ०—अहितकारी यानि त्यागने योग्य।

११ प्र०—कर्म बधन से हम कैसे बच सकते हैं?

उ०—राग द्वेष को छोडने से, विषय कषाय का त्याग करने से, सर्व जीवो को अपनी आत्मा समान गिनने से और विवेक तथा यत्न पूर्वक हर एक कार्य करने से जीव पाप कर्म के बधन से बच सकता है।

पाठ–२५

मोक्ष तत्व

१. प्र०—जन्म, जरा, मृत्यु और रोगादिक दुख जो हम पाते है, उसका क्या कारण है?

उ०—किये हुए कर्मो के उदय से अपने को यह दुख भोगने पड़ते हैं।

२ प्र०—इन सभी दुखो से हम कैसे छूट सकते है?

उ०—जहा तक दुखो का मूल कारण रूप कर्म है,

वहाँ तक दुख भी है । यदि किसी उपाय से हम इन कर्मों के बधनो से छूट जाय तो सब दुःखो से भी छूट सकते है ।

३. प्र०—कर्म बधन से सर्वथा मुक्त हो जाना अर्थात् सर्व दु.खो से छूट जाना उसका नाम क्या है ?

उ०—मुक्ति या मोक्ष ।

४. प्र०—मोक्ष प्राप्ति के लिये यानि कर्म बधन से छूटने के लिये कौन कौन से उपाय है ?

उ०—चार उपायो से, मोक्ष प्राप्त हो सकता है ।

सम्यक्ज्ञान—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, सवर, निर्जरा, बध और मोक्ष इन नव तत्वो का स्वरूप यथा तथ्य (जैसा है वैसाहो) समझना इसी को सम्यक्ज्ञान कहते है ।

सम्यक्दर्शन—वीतराग के वचनो मे पूर्ण श्रद्धा रखना ।

सम्यक्चारित्र—मोक्ष मार्ग मे उपयोग पूर्वक चलना चाहिये, आश्रवद्वार से आते हुए कर्मों को सवर रूप किवाड से रोकना चाहिये । मन, बचन, काय के योगो का निरोध करके प्राणाति पात आदि १८ प्रकार के पापो से निवृत होना चाहिये ।

सम्यक्तप—पूर्व सचित कर्मों को तपद्वारा क्षय करना चाहिये ।

५. प्र०—चारो गति मे से कौनसी गति मे आकर जीव मोक्ष प्राप्त कर सकता है ?

उ०—मनुष्य गति मे ।

६. प्र०—मोक्ष गामी जीव अर्थात् चर्म शरीरी मनुष्य जब

सर्व कर्मों से मुक्त हो जाता है तब कहा जाता है ?

उ०—जैसे किसी तुम्बे को सण मिट्टी आदि वजन के आठ लेप लगे होवे तो उस वजन से वह तुम्बा हमेशा पानी मे ही डूबा रहता है यदि वह लेप तुम्बे पर से दूर हो जाय तो तुरन्त ही वह तुम्बा पानी के ऊपरी भाग पर स्वाभाविक रीति से आ जाता है। वैसे ही आठ कर्मों के लेप से लिप्त होकर ससार समुद्र में डूबे हुए जीव जब सब कर्मों से मुक्त होते है तब स्वाभाविक रीति से वो लोक के मस्तक पर यानि मोक्ष मे पहुँच जाते हैं। और अलोक के नीचे स्थिर हो रहते है।

७. प्र०—मोक्ष पाये हुए आत्मा कहा विराजमान होते है ?

उ०—सर्वार्थ सिद्ध विमान की ध्वजा से २१ जोजन उपर ऊर्ध्वलोक का अन्त आता है और वहा से ऊर्ध्वअलोक शुरू होता है, अलोक में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय द्रव्य का अभाव होने से जीव या पुद्गल द्रव्य की गति या स्थिति वहा पर नही हो सकती हैं जिससे सिद्ध भगवान लोक के आखिरी चमन्ति तक पहुच कर वहा ही स्थिर होते है।

८ प्र०—सिद्ध भगवान के और अलोक के वीच में कितना अन्तर है ?

उ०—धूप व छाया के वीच मे जैसे अन्तर नही होता है ठीक उसी तरह सिद्ध भगवान और अलोक के वीच मे अन्तर नही है।

९. प्र०—सिद्ध भगवान के शरीर है या नही ?

उ०—नही, सिद्ध भगवान अशरीरी है, वे पुद्गलो के यानि जड वस्तु के सग रहित होकर केवल आत्म स्वरूप मे लीन हो चौदह राजलोक का नाटक देखते हुए अनन्त सुख की लहर मे विराजमान है।

१० प्र०—वहा पर खाना, पीना, पहनना, ओढना, गाना, बजाना, मान, सन्मान आदि कुछ भी नही है तो फिर सुख किस प्रकार का है ?

उ०—खान पान आदि मे अपन सुख मानते हैं परन्तु वास्तव मे वे पदार्थ सुख स्वरूप नही है। क्योकि जिस वस्तु मे सुख देने का स्वभाव होता है, वह हमेशा सुखदायक ही होना चाहिये। मगर अमुक समय तक सुख तक देने के बाद वही वस्तु दुख मे परिणमे उसको सुखदाता कैसे कही जाय। जैसे कि खीर का स्वाद मीठा है और उसको खाने से अपने को सुख अनुभव होता है, किन्तु वही खीर पेट भर खा लेने के बाद मे उसके ऊपर जब रूचि उतर जाती है उस वक्त यदि कोई मनुष्य बलात्कार से अपने को खीर पिलाते ही रहे तो वही खीर दुःख का और क्वचित मृत्यु का कारण रूप भी हो जाती है, पाचो इन्द्रियो के विषय भोग की भी यही दशा है।

११ प्र०—तब सच्चा सुख किसको कहा जाय ?

उ०—जिस सुख का अन्त दुख रूप न होवे जो हमेशा ही सुखरूप रहे वही सच्चा सुख है।

१२. प्र०—मोक्ष मे जो अनन्त सुख है वह उनको किस चीज से मिलते हे ? याने उनके पास सुख प्राप्त करने

के लिये कौन-कौन से साधन हैं ?

उ०—यह वात वहुत समझने योग्य है, सुख का आधार वाह्य साधन पर नही है किन्तु मन की परिस्थिति पर है, कई दफा नव काकरी जैसे निर्माल्य साधन से रक मनुष्य को जो सुख अनुभव होता है वह सुख राज्य की विभूति होने पर भी राजा को अनुभूत नही होता। सुख यह आत्मा का ही गुण है वह वाहर से प्राप्त होता ही नही, जड वस्तु ही चेतना को सुख देती है यह मान्यता गलत है। खीर चाहे जितनी अच्छी बनी हो परन्तु अपनी जिह्वा मे उसका स्वाद जानने को गुण यदि नही होता तो वह अपने को सुख कैसे दे सकती। पुद्गल के अनन्त गुणो में से एक अथवा अधिक गुणा को जानकर वह दूसरे पदार्थ की अपेक्षा अपनी मानसिक प्रकृति को विशेष अनुकूल होने से जीव उसको सुख मानने लग जाता है। परन्तु दूसरे पल मे ही उसकी अपेक्षा विशेष मनोज्ञ दूसरी चीज यदि मिल जाय तो पहिले की चीज दुःख रूप हो जाती है, जो रेजी के कपडे व ज़ुआर के रूखे सूखे टुकडे से एक भिक्षुक सुख समझता है वही चीज एक राजा को दुःख रूप मालूम होती है साराश यह है कि जड वस्तु के ऊपर सुख दुःख का आधार नही है मगर अपनी खुद की मान्यता के ऊपर है।

१३ प्र०—सिद्ध भगवान को क्या सुख है और वह किस तरह होता है ?

उ०—सुख का आधार ज्ञान के उपर है इस दृश्य मान जगत मे जितने पदार्थ है, उनमे शब्द, रूप, गंध रस और स्पर्श यह मुख्य पाच गुण होते हैं। उन गुणो की परीक्षा के लिये अपने पास श्रोतेन्द्रिय आदि पाच इन्द्रिया है। शब्दादिक विषयो का इन्द्रियो के द्वारा आत्मा को ज्ञान होता है, तव पुद्गलाभि नदी आत्मा उन विषयो को सुख मानता है। वह सुख भी ज्ञान के ही अन्तर्गत है। रसेन्द्रिय द्वारा खीर का स्वाद जान लेने पर उसके सुख का अनुभव होता है। किसी ने आपको भला आदमी कहा आपने उसे समझा तव सुख की प्राप्ति हुई। विना ज्ञान के सुख का अनुभव नही होता है इससे समझना चाहिये कि स्वाद वगैरः के स्वल्प ज्ञान से ही अपने को सुख मिलता है। तव ऐसे-ऐसे अन्यान्य अनन्त गुणा १४ राज लोको मे वर्तमान तमाम आत्माओ एव सर्व द्रव्यो के अतीत भविष्यत और वर्तमान काल के भावो को जो जान रहे है। उसका सुख, कितना अगाध होगा उनका अनन्त ज्ञान दर्शन गुण का ही आभारी है। सिवाय इसके आत्मा को जो स्वाभाविक अनन्त सुख है वह अपनी कल्पना मे भी आस के वैसा नही है वह सुख अनुपमेय और अनुभव गोचर है, जैसे किसी ने जन्म से ही घृत खाया नही उसको घी का स्वाद कैसा है केवल शब्द मात्र से ही समझ मे नही आ सकता परन्तु जिसने स्वय घी खाया है उसी को मालूम हो

सकता है। इसी तरह सिद्ध के सुखो का केवल शब्द से ज्ञान नही हो सकता उनको तो केवली ही जान सकते है।

१४. प्र०—सिद्ध भगवान जिस क्षेत्र मे विराजमान होते है वह क्षेत्र क्या कहलाता है?

उ०—सिद्ध क्षेत्र।

१५. प्र०—सिद्ध क्षेत्र कैसा है?

उ०—४५ लाख जोजन का लम्बा चौडा (गोलाकार) और एक गाउ का छट्टा भाग (३३३ धनुष्य और ३२ अगुल) जितनी उनकी मोटाई है।

१६. प्र०—इतने ही क्षेत्र मे सिद्ध होने का क्या कारण है?

उ०—मनुष्य क्षेत्र यानि अढाई द्वीप ४५ लाख जोजन का है। मनुष्यगति मे से सिद्ध गति होती है, ढाई द्वीप मे कोई जगह ऐसी नही जहा अनन्त सिद्ध नही हुए हो जिस जगह मोक्षागामी जीव शरीर से मुक्त होते है उसकी बराबर सीधी लकीर मे एक समय मात्र मे वे जीव सीधे ऊपर चढ लोक के मस्तक पर सिद्ध क्षेत्र मे पहुच वहा स्थिर होते हैं।

१७. प्र०—इतने छोटे क्षेत्र मे अनन्त सिद्ध कैसे समा सकते है?

उ०—जहा एक सिद्ध हो वहा अनन्त सिद्ध रह सकते है, जैसे एक कमरे मे एक दीपक का प्रकाश भी समा सकता है और सौ का भी समा सकता है। इसी तरह आत्मा अरूपी व ज्ञान स्वरूपी, द्रव्य होने से एक ही स्थान में अनन्ता सिद्ध रह सकते हैं।

१८. प्र०—सिद्ध शिला और सिद्ध क्षेत्र एक ही है क्या?

उ०—नही, सिद्ध शिला सिद्ध क्षेत्र के बराबर नीचे है, परन्तु उन दोनो के बीच एक जोजन मे एक गउ (कोस) का छट्टा भाग जितना कम अन्तर है।

१९. प्र०—३३३ धनुष्य और ३२ अगुल की सिद्ध क्षेत्र की मोटाई होने का क्या कारण है ?

उ०—सिद्ध भगवान की उत्कृष्ट अवगाहणा उतनी ही होने के कारण।

२०. प्र०—सिद्ध के शरीर नही तब अवगाहणा कैसी ?

उ०—शरीर नही परन्तु आत्मप्रदेश का घन, चरम शरीर का दो तिहाई भाग जितना भाग बधा हुआ है और ज्यादा से ज्यादा ५०० धनुष्य की अवगाहणा वाले मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकते है इसलिये उनके दो तिहाई भाग जितनी उत्कृष्ट अवगाहणा है।

२१ प्र०—जघन्य कितनी अवगाहणा वाले सिद्ध होते है ?

उ०—दो हाथ की।
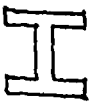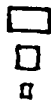
२२. प्र०—सिद्ध भगवान की जघन्य अवगाहणा कितनी होती है ?

उ०—एक हाथ और आठ अगुल की।

२३. प्र०—कैसे मनुष्य व कितनी वय वाले मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकते है ?

उ०—जघन्य नौ वर्ष और उत्कृष्ट क्रोड पूर्व की आयु वाले और वज्र ऋषभ नाराच सघयण धारक कर्म भूमि के मनुष्य मे से जिनको केवलज्ञान प्राप्त होता है वो ही मोक्ष मे जाता है।

सास्त्र भगवती सूत्र शतक २४ ३६ शो २४ के अनुसार संघयण का वर्णन

संघयण		गति उत्कृष्ट ऊंची	नीची
वज्र ऋषभ नाराच		अनुत्तर विमान	७ वी नरक
ऋषभ नाराच		नवग्रैवेयक	६ वी नरक
नाराच		१२ देवलोक	५ वी नरक
अर्ध नाराच		८ देवलोक	४ वी नरक
कालिका		६ देवलोक	३ वी नरक
स्पार्टक		४ देवलोक	२ वी नरक

पाठ—२६

सामान्य प्रश्नोत्तर

१. प्र०—धर्म किसे कहते है ?
   उ०—जो दुर्गति मे जाते हुए जीव को बचाता है।
२. प्र०—धर्म का मूल क्या है ?
   उ०—विनय।
३. प्र०—विनय का अर्थ क्या है ?
   उ०—विशिष्ट नीति (न्याय)।
४. प्र०—पाप का मूल क्या है ?
   उ०—लोभ।
५ प्र०—रोग का मूल क्या है ?
   उ०—स्वादिष्ट वस्तु खाने का कुव्यसन।
६ प्र०—दुःख का मूल क्या है ?
   उ०—राग (स्नेह)।
७. प्र०—दुःख किसे कहते है ?
   उ०—परतन्त्रता।
८ प्र०—सुख किसे कहते है ?
   उ०—सज्ञान स्वतन्त्रता।
९ प्र०—सुख का निदान क्या है ?
   उ०—सतोष।
१० प्र०—सतोष का अर्थ क्या है ?
   उ०—इच्छाओ को रोकना।
११ प्र०—ससार मे जागृत कौन है ?

उ०—विवेकी, समदृष्टि ।

१२. प्र०—ससार मे सुप्त कौन है ?

उ०—अविवेकी, मिथ्या दृष्टि ।

१३. प्र०—ससार में मदिरा कौनसी है ?

उ०—मोह ।

१४ प्र०—ससार मे अमृत कौनसा है ?

उ०—अनुभवियो का हितोपदेश ।

१५. प्र०—ससार मे अग्नि कौनसी है ?

उ०—ईर्षा ।

१६. प्र०—गुरु कौन हो सकता है ?

उ०—जो आत्मा के हितार्थ उपदेश देता है ।

१७. प्र०—हित का अर्थ क्या है ?

उ०—कर्म दुःख से मुक्त होना ।

१८. प्र०—शिष्य किसे कहते है ?

उ०—जो गुरु की आज्ञा धारक और भक्तिकारक हो ।

१९ प्र०—दरिद्री कौन है ?

उ०—अधिक तृष्णावान् मनुष्य ।

२०. प्र०—श्रीमत कौन है ?

उ०—सर्वथा सतोषी ।

२१. प्र०—मूर्ख कौन है ?

उ०—जो अमूल्य भव व्यर्थ गमाता है ।

२२. प्र०—चतुर कौन है ?

उ०—जो जन्म सफल करता है ।

२३. प्र०—शत्रु कौन है ?

उ०—मनोविकार ।

२४. प्र०—मित्र कौन है ?

उ०—आत्म बोध।

२५ प्र०—नेत्र कौनसे ?

उ०—सद्विद्या।

२६ प्र०—अनित्य क्या है ?

उ०—पौद्‌गलिक सर्व वस्तुएँ।

२७. प्र०—अचल क्या है ?

उ०—परमात्म स्वरूप।

२८ प्र०—जगत का दास कौन है ?

उ०—जो आशा का दास है।

२९ प्र०—सब ससार किसका दास है ?

उ०—आशा जिसकी दासी है।

३०. प्र०—जगत मे गिरने का रास्ता कौनसा है ?

उ०—सात व्यसन की सेवकाई।

३१ प्र०—सात व्यसन कौनसे है ?

उ०—जूआ, मासहार, मद्यपान, वैश्यागमन, शिकार, चोरी, पर स्त्री सेवन।

३२. प्र०—क्या जानना मुश्किल है ?

उ०—स्वदोष तथा स्वस्वरूप।

३३. प्र०—बहरा कौन है ?

उ०—जो हित बोध नही सुनता है।

३४. प्र०—गूंगा कौन है ?

उ०—जिसे समय पर उचित बोलना न आवे।

३५ प्र०—अधा कौन है ?

उ०—विषय में आसक्त (कामी)।

३६ प्र०—पशु कौन है ?

उ०—अविवेकी।

३७. प्र०—शूरवीर कौन है ?
उ०—मन को जीतने वाला ।

३८. प्र०—जड का धर्म क्या है ?
उ०—सडना, गिरना, रूपान्तर होना ।

३९. प्र०—चैतन्य का धर्म क्या है ?
उ०—अविनाशीपना ।

४०. प्र०—जीव किसे कहते हैं ?
उ०—जो प्राण से जीवित है ।

४१ प्र०—अजीव किसे कहते है ?
उ०—चैतन्य रहित जड ।

४२. प्र०—पुण्य किसे कहते हैं ?
उ०—जिन कर्मों का परिणाम इष्ट हो ।

४३. प्र०—पाप किसे कहते है ?
उ०—जिन कर्मों का परिणाम अनिष्ट हो ।

४४. प्र०—मोक्ष किसे कहते हैं ?
उ०—सर्व कर्मो से मुक्त होना ।

४५. प्र०—ससार किसे कहते है ?
उ०—जहाँ जन्म, मरन के चक्र चला करते हैं ।

४६. प्र०—सम्मति कितने प्रकार की है ?
उ०—दो, आसुरी, दैवी ।

४७. प्र०—ससार का बीज क्या है ?
उ०—राग और द्वेष ।

४८. प्र०—मनुष्य को क्या करना चाहिए ?
उ०—समझ कर अपना कर्तव्य ।

४९. प्र०—मनुष्य को क्या न करना चाहिए ?
उ०—अकर्तव्य ।

५० प्र०—मनुष्य को किम राह पर चलना चाहिए ?
उ०—जिम राह से महापुरुष गये है ।

५१. प्र०—मनुष्य को किस राह पर न जाना चाहिये ?
उ०—जिस राह पर जाने की परमात्मा की काज्ञा न हो ।

५२. प्र०—जीव मात्र के कितने शरीर हैं ?
उ०—दो सुक्ष्म और एक स्थूल, यो तीन ।

५३. प्र०—ज्ञान किसे कहते हे ?
उ०—यथार्थ जाजने को ।

५४ प्र०—अज्ञान किसे कहते हे ?
उ०—विपरीत समझने को ।

५५. प्र०—चाडाल कौन है ?
उ०—विश्वासघाती, कृतघ्नी, मिथ्या साक्षी देने वाला, प्रचण्ड क्रोधी ये चार कर्म चाडाल और पाचवा जाति चाडाल ।

५६ प्र०—साधु कौन है ?
उ०—जो आत्म-कार्य साधता है ।

५७. प्र०—चतुर कौन है ?
उ०—जो अवसर पहचानता है ।

५८. प्र०—विद्वान कौन हे ?
उ०—जो विद्या पढकर तदनुमार वर्ताव रखता है ।

५९. प्र०—पडित कौन हे ?
उ०—जो स्वाश्रय द्वारा श्रेय माधता हे ।

६० प्र०—पढा हुआ कौन हे ?
उ०—जो ससार मे न भुलाता हे ।

६१. प्र०—अकल का शत्रु कौन हे ?
उ०—जो अपना रहस्य दुश्मन को वताता है ।

६२ प्र०—अक्ल का वारदान कौन है?
उ०—जो मूर्ख होकर पडित बनता है।

६३ प्र०—व्यापारी कौन है?
उ०—जो न्यायानुसार व्यापार मे कुशल हो।

६४. प्र०—नृपति कौन है?
उ०—जो मनुष्यो का न्याय पूर्वक पालन करता है।

६५. प्र०—क्षत्री कौन है।
उ०—जो नाश होते मनुष्य की रक्षा करता है।

६६ प्र०—ब्राह्मण कौन है।
उ०—जो आत्म-तत्व (ब्रह्म) पहिचानता है।

६७. प्र०—मनुष्य कौन है?
उ०—जिसमे मनुष्यत्व हो।

६८. प्र०—मनुष्य शरीर मे पशु कौन है?
उ०—जिसे सारासार और हिताहित का विचार ज्ञान न हो।

६९. प्र०—देव कौन है?
उ०—जिसमे दिव्य गुण भरे हों।

७० प्र०—शास्त्र का अर्थ क्या है?
उ०—जिससे शिक्षा मिलती हो।

७१ प्र०—सिद्धान्त का अर्थ क्या है?
उ०—जिसका अर्थ सिद्ध, (पूर्ण) हो।

७२. प्र०—सूत्र किसे कहते हैं?
उ०—जिसमे मूल कम और भावार्थ अधिक हो जिसमे अक्षर कम, और अर्थ अधिक निकलता हो

७३ प्र०—महत्ता का मूल क्या है?
उ०—किसी से कुछ न मागना।

७४. प्र०—अस्थिर वस्तु कोनसी है ?
उ०—धन, यौवन, आयुष्य ।
७५ प्र०—शल्य की तरह दुखदाई कौन है ?
उ०—गुप्त कृत पाप कर्म ।
७६ प्र०—उत्तम दान कोनसा है ?
उ०—अभयदान और ज्ञानदान ।
७७ प्र०—आदरने योग्य क्या है ?
उ०—सद्गुरु के वचन ।
७८. प्र०—पवित्र कौन है ?
उ०—निष्कपटी अन्तःकरण वाला ।
७९. प्र०—अपना श्रेय करने वाला कौन है ?
उ०—अपन ही है ।
८०. प्र०—अपना अनिष्ट करने वाला कौन है ?
उ०—अपन ही है ।
८१ प्र०—अपन अपना अनिष्ट कैसे करते है ?
उ०—अज्ञानता के कारण ।
८२. प्र०—क्या त्यागना मुश्किल है ?
उ०—दुष्ट आशा ।
८३. प्र०—ससार का गुलाम कौन है ?
उ०—जो आशा का गुलाम हो ।
८४. प्र०—परम आपद का स्थान कोनसा है ?
उ०—अविवेक ।
८५. प्र०—निर्भयता कब प्रकट होती है ?
उ०—अविद्या जब नाश होती है ।
८६. प्र०—सच्चा खजाना कोनसा है ?
उ०—सद्विद्या ।

८७ प्र०—सद्विद्या क्या फल देती है ?
उ०—पर आधीनता का निवारण करती है।

८८. प्र०—सच्चा लाभ कौनसा है ?
उ०—आत्म स्वरूप की पहिचान ।

८९ प्र०—विश्व को किसने जीता है ?
उ०—जिसने मन को जीत लिया है।

९०. प्र०—अभय का स्थान कौनसा है ?
उ०—यथार्थ वैराग्य।

९१. प्र०—समस्त ससार मे उन्नत कौन है ?
उ०—निस्पृही मानव (निराशी)।

९२. प्र०—दु ख कितने प्रकार के है ?
उ०—दो, मानसिक और शारीरिक।

९३ प्र०—मन कैसे जीता जा सकता है ?
उ०—वैराग्यमय अभ्यास से ।

९४ प्र०—धर्म का स्वरूप क्या है ?
उ०—परम सत्य ।

९५ प्र०—धर्म वृक्ष का फल क्या है ?
उ०—मोक्ष (निर्वाण)।

९६. प्र०—मोक्ष का प्रथम चरण कौनसा है ?
उ०—सच्चे शास्त्र का श्रवण।

९७. प्र०—मोक्ष का बीज क्या है ?
उ०—सम्यक् ज्ञान (सच्चा ज्ञान)।

९८ प्र०—मोक्ष फल का रस क्या है ?
उ०—परमानन्द ।

९९. प्र०—परमानन्द स्वरूप किसका है ?
उ०—अपनी आत्मा का ।

पाठ-२७

सामान्य प्रश्नोत्तर

१. प्र०—जीव के बंधन कितने है ?
उ०—दो, राग और द्वेष ।

२. प्र०—जीव कितनी तरह से दंडित होता है ?
उ०—तीन तरह से, मन, वचन और काया से ।

३ प्र०—कषाय कितने है ?
उ०—चार, क्रोध, मान, माया, लोभ ।

४ प्र०—शल्य कितने हैं ?
उ०—तीन, माया, नियाण, मिथ्यात्व ।

५ प्र०—गुप्ति कितनी है ?
उ०—तीन, मन, वचन, काया ।

६ प्र०—विकथा कितनी है ?
उ०—चार, स्त्री, भात, राज और देश ।

७. प्र०—ध्यान कितने है ?
उ०—चार, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान ।

८. प्र०—ध्यान के कितने भेद है ?
उ०—चार भेद है, पदस्थ, पिंडस्थ, रूपस्थ, रूपातीत ।

९ प्र०—लेश्या कितनी है ?
उ०—छ , कृष्ण, नील, कापोत, तेजू, पद्म, और शुक्ल ।

१०. प्र०—भय कितने है ?
उ०—सात, इहलोक, परलोक मृत्यु, अपयश, अकस्मात्, आदान, आजिविका ।

११. प्र०—नय कितने है ?

उ०—सात, नैगम, सग्रह, व्यवहार ऋजुसूत्र, शब्द समभिरुढ, एवभूत ।

१२. प्र०—निक्षेपा कितने है ?

उ०—चार, नाम, स्थापन, द्रव्य, भाव ।

१३. प्र०—ज्ञान कितने है ?

उ०—पाच, मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव, केवलज्ञान ।

१४ प्र०—अज्ञान कितने है ?

उ०—तीन, मति, श्रुत विभग ज्ञान ।

१५ प्र०—दृष्टि कितनी है, और कौन-कौन सी है ?

उ०—तीन, समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, समभिथ्यदृष्टि, (मिश्रदृष्टि) ।

१६ प्र०—शास्त्र देखने मे कितनी दृष्टि हो और कौनसी हो ?

उ०—पचीस, चार प्रमाण, चार निक्षेपा, सात नय, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, निश्चय व्यवहार, विशेष, अविशेष कार्य, कारण ।

१७ प्र०—चार प्रमाण कौन से है ?

उ०—प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमा ।

१८. प्र०—आत्मा के कितने भेद है ?

उ०—तीन तथा आठ ।

१९ प्र०—आत्मा के तीन भेद कौन-कौन से है ?

उ०—बहिरात्मा, अन्तरामा, और परमात्मा ।

२० प्र०—आत्मा के आठ भेद कौन कौन से है ?

उ०—द्रव्यात्मा, कषायात्मा, योगात्मा, उपयोगात्मा, ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा, चरित्रात्मा और वीर्यात्मा ।

२१. प्र०—योग कितने है ?

उ०—तीन, छ और पन्द्रह्।

२२ प्र०—तीन योग कौन-कौन से हैं ?

उ०—मनयोग, वचनयोग, कायायोग।

२३. प्र०—पन्द्रह योग कौन से हैं ?

उ०—सत्यमन, असत्यमन, मिश्रमन, व्यवहारमन, सत्यभाषा, असत्यभाषा, मिश्रभाषा, व्यवहारभाषा, औदारिक, वैक्रिय, आहारिक, ये तीन और इन मिश्र तथा कार्मण योग।

२४ प्र०—छ योग कौन से है ?

उ०—कर्म योग, ज्ञान योग, मन्त्र योग, भक्ति योग, हठ योग, और राजयोग।

२५ प्र०—आचार कितने है ?

उ०—चार, ज्ञानाचार, दर्शनाचार, तपाचार और वीर्याचार।

२६ प्र०—राशि कितनी हैं ?

उ०—दो, जीव और अजीव, या व्यवहार और अव्यवहार।

२७. प्र०—रस कितने है ?

उ०—नौ, शृंगार, वीर, करुणा, हास्य, रौद्र, भयानक अद्भुत विभत्स और शान्त।

२८ प्र०—भावना कितनी है ?

उ०—बारह् और चार।

२९ प्र०—बारह् भावना कौन-कौन सी हैं ?

उ०—अनित्य भावना, अशरण भावना, ससार भावना, एकत्व भावना, अन्यत्व भावना, अशुचि भावना, आश्रव भावना, सवर भावना, निर्जरा भावना,

लोक भावना, बोधि भावना, और धर्म भावना।

३०. प्र०—चार भावना कौन-कौन सी है ?

उ०—मैत्री, करूणा, प्रमोद, माध्यस्थ ।

३१ प्र०—समवाय कितनी है ?

उ०—पाच, काल, स्वभाव, नियत, पूर्वकर्म, उद्यम ।

३२. प्र०—पाप कितने है ?

उ०—प्राणातिपात आदि अठारह ।

३३. प्र०—कर्म के कितने भेद है ?

उ०—आठ, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अतराय ।

३४. प्र०—प्राणा कितने है ?

उ०—दस, पाच इन्द्रिय, मन, बचन, काया, श्वासोश्वास, और आयुष्य ।

३५. प्र०—सूत्र कितने प्रकार के हैं ?

उ०—सात, विधि, उपदेश, आदेश, वर्णन, भय, उत्सर्ग अपवाद ।

३६. प्र०—प्रमाद कितने है ?

उ०—पाच, मद, विषय, कषाय, निंदा, विकथा ।

३७. प्र०—तत्व कितने हैं ?

उ०—नौ, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बध, मोक्ष ।

३८. प्र०—द्रव्य कितने है ?

उ०—छः, धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, आकास्ति काय, जीवास्ति काय, कालास्ति काय और पौद्गलास्ति काय ।

३९. प्र०—भाव कितने हैं ?

उ०—प्रथम तीन, दूसरे तीन।

४० प्र०—तीन कौन-कौन से है ?

उ०—उत्तम, मध्यम, कनिष्ट, तथा क्षायक भाव, क्षयोप, शम भाव, और उपशम भाव।

४१ प्र०—दोष कितने है ?

उ०—तीन, अति व्याप्ति, अव्याप्ति, असभव।

४२. प्र०—प्रर्याप्ति कितनी है ?

उ०—छ, आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोश्वास, भाषा, और मन।

पाठ—२८

महावीर प्रभु सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

१. प्र०—चौवीसवें तीर्थंकर कौन हुए हैं ?

उ०—महावीर स्वामी।

२. प्र०—वे कौन से देवलोक से चल कर आये थे ?

उ०—दसवें प्राणत देवलोक मे।

३ प्र०—कौन से गाव और किस के यहा जन्म हुवा ?

उ०—महान कुण्ड गाव मे, ऋषभदत्त ब्राह्मण का जो देवानन्दा के उदर मे।

४. प्र०—कौनसी तिथि को ?

उ०—आसाढ शुक्ला ६।

५ प्र०—वहा कितने समय तक रहे ?

उ०—साड़े बयासी अहो रात्री ।

६. प्र०—उनका हरण कौनसी तिथि को हुआ ? और उन्हे कहा रक्खा ?

उ०—भादवा वदी १३ को, क्षत्रीकुड नगर मे सिद्धार्थ राजा की स्त्री त्रिसला देवी की कुक्ष मे रक्खा।

७. प्र०—उनका जन्म कौनसी तिथि को हुआ ?

उ०—चैत्र शुक्ला १३ ।

८ प्र०—गृहस्थावस्था मे कितने वर्ष रहे ?

उ०—तीस वर्ष ।

६. प्र०—उनके भाई का नाम क्या है ?

उ०—नदी वर्धन ।

१०. प्र०—उनकी स्त्री का नाम क्या है ?

उ०—यशोदा ।

११. प्र०—उनकी बालिका का नाम क्या है ?

उ०—प्रिय दर्शन ।

१२. प्र०—उनकी वहिन का नाम क्या है ?

उ०—सुदर्शना ।

१३. प्र०—उनके जवाई का नाम क्या है ?

उ०—जमाली ।

१४. प्र०—उन्हे गृहस्थाश्रम मे कितने ज्ञान थे ?

उ०—तीन, मति, श्रुत, अवधि ।

१५ प्र०—दिक्षा ली उस समय कितने ज्ञान थे ?

उ०—चार, मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव ।

१६ प्र०—दिक्षा किस तिथि को ली ?

उ०—कार्तिक शुक्ला दशमी ।

१७. प्र०—दिक्षा लेने के पश्चाप कैवल्य ज्ञान कब प्रकट हुआ ?

उ०—बारह वर्ष छ. मास, और पद्रह दिन बाद ।

१८ प्र०—केवली होकर कितने वर्ष विचरे ?

उ०—उन्तीस वर्ष छ मास ।

१९ प्र०—उनका आयुष्य कितना है ?

उ०—बहोत्तर वर्ष ।

२०. प्र०—उनके कितने गणधर हुए ?

उ०—ग्यारह ।

२१. प्र०—उनके कितने साधु हुए ?

उ०—चौदह हजार ।

२२. प्र०—उनकी अर्या कितनी हुई ?

उ०—छत्तीस हजार ।

२३. प्र०—उनके श्रावक कितने हुए ?

उ०—एक लाख उनसठ हजार ।

२४ प्र०—उनके श्राविका कितनी हुई ?

उ०—तीन लाख अठारह हजार ।

२५ प्र०—चौदह पूर्व के ज्ञान वाले कितने साधु थे ?

उ०—तीन सौ ।

२६ प्र०—अवधि ज्ञान वाले कितने हुए ?

उ०—तेरह सौ ।

२७ प्र०—मनपर्यव ज्ञानी कितने हुए ?

उ०—पाच सौ ।

२८ प्र०—वैक्रयलब्धिधारी कितने हुए ?

उ०—सात सौ ।

२९. प्र०—केवलज्ञानी साधु कितने हुए ?

उ०—सात सौ ।

३० प्र०—उनकी कितनी आर्या मोक्ष पधारी ?

उ०—चौदह सौ ।

३१. प्र०—अनुत्तर विमान मे कितने साधु गये ?

उ०—आठ सौ ।

३२ प्र०—प्रभु को केवल्यज्ञान कब हुआ ?

उ०—बैसाख सुदी दसम को ।

३३. प्र०—केवल्यज्ञान प्रगट हुए बाद उन्होंने पहिला काम कौनसा किया ?

उ०—चार तीर्थ की स्थापना की ।

३४. प्र०—चार तीर्थ कौन-कौन से है ?

उ०—साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ।

३५ प्र०—वे प्रभु मोक्ष कब गये ?

उ०—कार्तिक बदी ३० ।

३६. प्र०—उनके गणधर के नाम क्या है ?

उ०—इद्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, विगतभूति, सुधर्मास्वामी, मण्डिपुत्रजी, मोरीपुत्रजी, अकम्पितजी, अचलजी, मेतारजजी, प्रभासजी ।

३७. प्र०—उनके (प्रत्येक के) कितने-कितने शिष्य थे ?

उ०—प्रथम पाच के, पाच सौ, दो के साढे तीन सौ, और अन्त के चारो के तीन-तीन सौ शिष्य थे ।

३८ प्र०—महावीर स्वामी के मोक्ष पधारने पर केवल्यज्ञान किसे प्रगट हुआ, और गादी पर कौन बैठा ।

उ०—गौतम स्वामी को केवल्यज्ञान प्रकट हुआ, और सुधर्मास्वामी उनके पाट विराजे ।

३९ प्र०—महावीर स्वामी के पश्चात गौतम स्वामी और सुधर्मास्वामी कब मोक्ष गये ?

उ०—गौतमस्वामी बारह वर्ष बाद, और सुधर्मास्वामी

बीस वर्ष बाद मोक्ष गये।

४० प्र०—सुधर्मास्वामी के पश्चात कौन पाट विराजे और वे कितने ज्ञानी थे।

उ०—उनके पाट जम्बू स्वामी बैठे थे, और वे केवलज्ञानी थे।

४१ प्र०—महावीर स्वामी के कितने वर्ष बाद जम्बूस्वामी मोक्ष पधारे ?

उ०—चोसठ वर्ष पश्चात्।

४२. प्र०—उनके बाद कौन केवलज्ञानी हुवे ?

उ०—किसी को भी केवलज्ञान नहीं हुआ। चरम केवली श्री जम्बूस्वामी थे। (उनके पश्चात भरत-क्षेत्र से केवलज्ञान विच्छेद गया)।

४३. प्र०—जम्बूस्वामी के पश्चात कौन आचार्य हुए और वे कितने वर्ष बाद स्वर्ग पधारे।

उ०—जम्बूस्वामी के पश्चात् उनकी गादी प्रभवस्वामी को मिली, वे महावीर स्वामी के ७५ वर्ष बाद स्वर्ग गये, उनके पाट श्री सभवस्वामी हुए वे महावीर स्वामी से ९८ वर्ष बाद स्वर्ग गये। उनके पीछे यशोभद्र पाट पर विराजे थे, वे महावीर स्वामी के १४८ वर्ष बाद स्वर्ग गए। उनके दो शिष्य थे सभूतिविजय और भद्रबाहु, सभूतिविजय, महावीर स्वामी से १५६ वर्ष बाद और भद्रबाहु १७० वर्ष बाद स्वर्ग गए।

४४ प्र०—भद्रबाहु स्वामी को कितना ज्ञान था ?

उ०—चौदह पूर्व का ज्ञान था, उनके पश्चात कोई चौदह पूर्व के ज्ञान वाले साधु न हुए।

४५. प्र०—भद्रबाहु के शिष्य कौन हुए, और कितने ज्ञानी थे ?
उ०—स्थूलीभद्र जी थे, और वे दस पूर्व के ज्ञानी थे, उनके पश्चात् पूर्व का ज्ञान धीरे-धीरे कम होता गया ।

४६. प्र०—जैन सूत्र सिद्धान्त किसने लिखे ?
उ०—देवीर्धगणि क्षमाश्रम ने।

४७. प्र०—वे महावीर स्वामी के कितने पाट बाद हुए ?
उ०—सतावीसवें पाट पर बैठे ।

४८. प्र०—पुस्तके किस ग्राम मे लिखी ?
उ०—वल्लभीपुर मे (वला मे) ।

४९. प्र०—महावीर स्वामी से कितने वर्ष बाद पुस्तकें लिखी गई ?
उ०—९८० वर्ष पश्चात् ।

५०. प्र०—सूत्र किसने सगठित किये ?
उ०—सुधर्मा स्वामी गणधर ने ।

५१. प्र०—महावीर स्वामी ने बेले कितने किये ?
उ०—दो सौ उन्तीस ।

५२. प्र०—तेले कितने किये ?
उ०—बारह ।

५३ प्र०—उपवास कितने किये ?
उ०—पद्रह पद्रह दिन के अर्धमास क्षमण १२, डेढ मासी दो, दो मासी ६, ढाई मासी–२, तीन मासी २, चार मासी ९, छ मासी २।

५४. प्र०—साढे बारह वर्ष और पद्रह दिन मे कितनी नीद ली ?
उ०—दो घडी।

५५ प्र०—मोक्ष गये तब कौनसा नक्षत्र था ?

उ०—स्वाति ।

५६. प्र०—महावीर स्वामी के च्यवन, हरण, जन्म और केवलज्ञान प्रकट होते समय कौन-कौन से नक्षत्र थे?

उ०—इन पाचो अवसर पर उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र था।

५७. प्र०—उन्होने दिक्षा कितने जनो के साथ ली थी?

उ०—अकेले ने ही ।

५८ प्र०—साढे बारह वर्ष और पद्रह दिन मे उन्होने भोजन कितने दिन किया ?

उ०—तीन सो उन्चास दिन ।

५९. प्र०—उन्होने एक-एक उपवास कितने किये ?

उ०—उन्होने एक-एक उपवास किया ही नही कम से कम एक साथ दो उपवास किये ।

पाठ-२९

देव गुरु धर्म सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

१ प्र०—देव किसे कहते है ?

उ०—अठारह दोष रहित हो ।

२. प्र०—अठारह दोष कौन कौनसे है ?

उ०—दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, निंदा, काम, मिथ्यात्व, अज्ञान, निद्रा, अविरत्ति, राग, द्वेष ।

३. प्र०—देव के शरीर होते है या नही ?
उ०—शरीर रहित और सहित भी देव होते हैं।
४. प्र०—शरीर सहित देव कौन है ?
उ०—जिन्होने चार घनघाती कर्म नष्ट किये है ।
५. प्र०—घनघाती कर्म कौन से हैं ?
उ०—ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, मोहनीय, अतरायकर्म।
६ प्र०—जब घनघाती कर्मो का नाश होता है तब कौनसा ज्ञान प्रकट होता है ?
उ०—केवल्य ज्ञान ।
७. प्र०—ऐसे केवल्यज्ञानी कितने प्रकार के होते है ?
उ०—दो, सामान्य केवली, तीर्थंकर केवली ।
८. प्र०—सामान्य केवली का अर्थ क्या है ?
उ०—चाहे जो हलु कर्मी मनुष्य सदबोद्ध सुनकर आत्मस्वरूप को पहिचान परम पुरुषार्थ द्वारा केवल्यज्ञान प्राप्त करते है, उन्हे मामान्य केवली कहते है।
९. प्र०—अन्य मनुष्य की अपेक्षा केवलज्ञान प्राप्त होने वाले मुमुक्षु मे किसी बात की सच्चो आवश्यकता है।
उ०—हा, उनका शरीर, वर्जऋषभ नाराच सघयण वाला, तथा पूर्ण आयुष्य को पाने वाला अवश्य होता है ।
१० प्र०—तीर्थकर केवली की पहचान क्या है ?
उ०—जगत के उद्धारक इन महापुरुषो का जन्म अमुक समय मे ही होता है, और दुसरे मनुष्यो की अपेक्षा इनका अपुर्व सामर्थ्य अपूर्व तेज, अपूर्व ज्ञान, अपूर्व शक्ति और अपूर्व प्रभाव होता है ।
११. प्र०—उन्हे सयम की दिक्षा कौन देता है ?

उ०—उन्हें गुरु की अपेक्षा नहीं रहती इसलिये वे स्वयं दिक्षा ग्रहण करते हैं।

१२ प्र०—दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात वे किस प्रवृत्ति में लगते है ?

उ०—पूर्व कृत संचित कर्मों को दग्ध करने के लिये तपश्चर्या करते है, हमेशा निर्जन प्रदेश में रहते है, और आत्मा ध्यान ध्याते है, जब तक केवलज्ञान प्रकट न हो वहां तक किसी को उपदेश की तरह उपदेश नहीं देते।

१३ प्र०—उनके कितने लक्षण होते है ?

उ०—एक हजार आठ।

१४. प्र०—केवलज्ञान प्रकट होनेपर पहिले वे क्या करते है ?

उ०—साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, इन चार तीर्थों की स्थापना करते है, और इसीलिये वे तीर्थंकर कहलाते है।

१५ प्र०—तीर्थंकर मुख्य कितने धर्म का प्रतिपादन करते है।

उ०—(गृहस्थ) आगार धर्म, और (त्यागी) अणगार धर्म इन दो का।

१६ प्र०—उनके मुख्य और प्रभाविक शिष्यों का नाम क्या होता है ?

उ०—गणधर।

१७ प्र०—इन तीर्थंकर महाराज के दूसरे नाम कहो ?

उ०—अरिहंतदेव, जिनेश्वर, परमात्म, प्रभु ऐसे अनेक गुण संपन्न नाम है।

१८. प्र०—अरिहंत के गुण कितने है ?

उ०—गुण तो अनन्त है, परन्तु मुख्य रूप से बारह गुण

गिनते हैं।

१९. प्र०—प्रभु अशरीरी कब होते है ?

उ०—आयुष्य, नाम, गोत्र, वेदनीय इन चारो कर्मों का (जो प्रारब्धं से है) नाश होता है, तव तीनो शरीर से मुक्त हो परम धाम प्राप्त करते है और अशरीरी बनते है।

२०. प्र०—अशरीरी केवली प्रभु किस नाम से पहिचाने जाते है ?

उ०—सिद्ध परमात्मा के नाम से ?

२१ प्र०—उनका आकार होता है या नही ?

उ०—नही, वे निराकार, निरजन, अरूपी और परम-ज्ञान मय होते है।

२२. प्र०—सिद्ध प्रभु जगत से क्या व्यवहार रखते है ?

उ०—उहे कुछ कार्य करना शेष नही रहा, इसलिये वे कुछ भी व्यवहार नही रखते।

२३ प्र०—सिद्ध प्रभु किसी भी समय इस संसार मे आवे या नही ?

उ०—उनका जन्म मृत्यु नाश हो गया है इसलिये वे इस ससार मे भी नही आ सकते।

२४. प्र०—इस ससार का कर्त्ता कौन है ?

उ०—दुनिया आदि रहीत है, इसलिये इसका कर्त्ता कोई नही है।

२५. प्र०—यह दुनिया किस तरह बनी ?

उ०—जो वस्तु अनादि होती है, यह किस तरह बनी वह प्रश्न ही नही हो सकता।

२६. प्र०—किसी ने नही बनाई यह आप किस आधार से

कहते है ?

उ०—किसी समय की बनी हुई वस्तु हो तो उसका किसी समय नाश भी होता है, परन्तु इस दुनिया का नाश नही होता, इसलिये यह प्राकृतिक बिना बनाई अनादि काल मे है ऐसा सिद्ध होता है।

२७. प्र०—दुनिया की दिन प्रति दिन हानि, वृद्धि दृष्टि गत होती है, असख्य प्राणी, जन्म लेते है और मरते है। असख्य भव्य पदार्थ नष्ट हो जाते है तो भी नाश नही होता किस तरह कहते हो ?

उ०—दुनिया की प्रत्येक वस्तु का रूपान्तर होता है, सिर्फ स्थूल दृष्टि से हानि वृद्धि दिखती है परन्तु सचमुच मे एक परमाणु का रासायनिक प्रयोग से भी नाश नही होता, और न नया उत्पन्न होता है, इसलिये दुनिया परमाणु रूप से नित्य और कार्य रूप से अनित्य है।

२८ प्र०—कर्त्ता जो ईश्वर नही तो जीवों को सुख दुःख देने वाला कौन है ?

उ०—प्राणी मात्र अपने कर्मानुसार सुख दुःख भोगता है, इसमें वीत रागी परमात्मा को बीच मे आने की आवश्यकता नही रहती।

२९ प्र०—कर्म जड है या चैतन्य है ?

उ०—कर्म जड है।

३०. प्र०—जो जड है वे प्राणी को सुख दुःख कैसे दे सकते है, इस प्राणी ने इतना पाप पुण्य किया इसलिये इसे इतना सुख दुःख मिलना चाहिये, ऐसा ज्ञान, उस जड को कैसे हो जाता है ?

उ०—जिस प्रकार विष खाने से शरीर मे पीडा दुःख हो ऐसा गुण विष मे है, और पौष्टिक खुराक खाने से शरीर मे शाति सुख हो यह पौष्टिक खुराक का गुण है इसी तरह प्रत्येक पदार्थ मे शुभ अशुभ असर करने का गुण है, विष या अमृत को सुख दुःख प्राप्त करने का ज्ञान नही तो भी उनका जैसा स्वभाव है वैसा असर वे उस वस्तु को काम मे लाने वाले प्राणी के साथ करते है ।

३१. प्र०—जिस तरह विष या अमृत के खाने या उपभोग मे लाने से वे असर करते है, उसी तरह क्या कर्म असर करते है ? कर्म क्या वैसी वस्तु है ?

उ०—जिस प्रकार विष या अमृत से सुख दुख होता है उसी तरह कर्म से सुख दुख होता है विष और अमृत जिस प्रकार शुभा शुभ परमाणु पुद्गल का समूह है इसी तरह कर्म भी शुभा शुभ परमाणु का समूह है सिर्फ विष और अमृत स्थूल है और कर्म पुद्गल सूक्ष्म है ।

३२. प्र०—विष या अमृतादि पदार्थ जिस तरह शरीर के अमुक भाग भाग मे से प्रवेश करते है, उसी तरह कर्म कैसे प्रवेश करते है ?

उ०—प्राणी मात्र जैसे विचार, इच्छा अध्यावसाय, मन के सकल्प अथवा आवश्यकताए रखते है, वैसे परमाणु पुद्गलो के समूह मन द्वारा ग्रहण करते है और वे पुद्गलो के समूह राग द्वेष वाली आत्मा के साथ क्षीरनीर के समान मिल जाते है तब

और उन से प्रतिकूल रहते मे क्या हानि है ?

उ०—जीव जैसे भावना या क्रिया करता है, उसका उसे अदृश्य फल मिलता है, परमात्मा का स्मरण, कीर्तन, ध्यान, भजन, ये उत्तम भावनाए और उच्च क्रियाए है। उन पर पवित्र का ध्यान धरने वाला स्वय पवित्र हो जाय ऐसा उन प्रभु मे अलौकिक गुण है। और उन प्रभु से प्रतिकूल रहने वाला अपनी अनिष्ट भावनाओ, और क्रियाओ से अपने स्वत: का अज्ञानता, के कारण अनिष्ट कर लेता है।

३९. प्र०—परमात्मा हमारा भला करेगा, इस आशा से मनुष्य उनका स्मरण या स्तुति करते है तो उन्हे फल मिलता है या नही ?

उ०—परमात्मा का नाम ही मगल रूप है इसलिये जितने प्रेम और शुद्ध मन से उनका स्मरण करें उतना लाभ अवश्य प्राप्त होता है।

४०. प्र०—कोई मनुष्य अपना व्यवहार न सुधारे, और सिर्फ परमात्मा का स्मरण ही करता रहे तो उसका भला हो सकता है या नही ?

उ०—प्रभु का स्मरण करने वाला जो, अपना व्यवहार खराब रक्खेगा, तो उसे स्मरण करना ही न रुचेगा, श्रेय की इच्छा रखने वालों को स्मरण के साथ अपना व्यवहार भी सुधारना चाहिये।

४१. प्र०—गुरु किसे कहते है ?

उ०—आत्मस्वरूप को पहिचान उसके कल्याणार्थ यथार्थ मार्ग पहिचान कर उस राह पर चलते है और

दूसरों को चलाते हैं उन्हें गुरु कहते हैं।

४२ प्र०—जिस मार्ग से वे चलते हैं वह आत्मकल्याण का सच्चा मार्ग है या झूठा, यह कैसे समझ सकते हैं?

उ०—जो महात्मा आत्मा के कल्याणार्थ सच्चे मार्ग में चलते हैं यह उनके स्वभाव, प्रकृति, आचार, विचार पर से समझा जाता है।

४३ प्र०—आत्म कल्याण का सच्चा मार्ग कैसा होगा?

उ०—भवसागर से पार पाने के लिये वीतराग प्रभु ने जिस मार्ग का प्रतिपादन किया है वही मार्ग सच्चा है।

४४ प्र०—उन मोक्ष मार्ग में जाने वाले महात्माओं के व्रत नियम कैसे हैं?

उ०—अहिंसा आदि पांच महाव्रत, पांच सुमति और तीन गुप्ती का पालन करना बाह्य और अभ्यन्तर दोनों प्रकार के परिग्रह, मोह, माया से दूर रहना यति के क्षमा आदि दस गुणों का धारण करना, विषय कषाय से विरक्त रहना और हमेशा अपने तथा दूसरों के हित होने का प्रयत्न करना।

४५ प्र०—गुरु अपने शिष्य को तार कर मोक्ष तक ले जा सकते हैं?

उ०—सद्गुरु तो तिरने की राह दिखाते हैं और पहि-चाना समझा देते हैं रस्ता बताते और शंका निवारण कर देते हैं जिससे यह प्रत्येक शिष्य का [illegible] हो जाता है। किसी भी समय गुरु शिष्य को मोक्ष पहुंचा देते हैं यह नहीं हो सकता।

४६ प्र०—हितोपदेश रूपी गुरु की सेवा करने से क्या फल

प्राप्त होता है ?

उ०—सदगुरु अपूर्व समझ कराके अपनी अनादि की अज्ञान दशा टालने के निमित्त बनते हैं। इनके परिचय से अपनी भ्राति टलती है। मान गलता है, मिथ्यात्व का नाश होता है और अत मे आत्मकल्याण के सुख प्राप्त कर सकते है।

४७. प्र०—धर्म किसे कहते है ?

उ०—दुर्गति मे जाते हुए जीव को बचाले उसे धर्म कहते है।

४८. प्र०—ऐसे धर्म का लक्षण क्या है ?

उ०—अहिसा।

४९. प्र०—धर्म की नीव क्या और स्वरूप क्या है ?

उ०—न्याय धर्म की नीव और सत्य धर्म का स्वरूप है।

५०. प्र०—धर्म का व्यवहारिक अर्थ क्या है ?

उ०—कर्तव्य (फर्ज)।

५१ प्र०—धर्म का अर्थ कर्तव्य कैसे हुआ ?

उ०—कर्तव्य अर्थात करने योग्य काम और करने योग्य कार्य, यही मनुष्यमात्र का धर्म है।

५२. प्र०—करने योग्य कार्य सबका एक-सा या भिन्न होता है ?

उ०—अधिकार पर से प्रत्येक के कर्तव्य थोडे बहुत अश मे भिन्न-भिन्न होते है।

५३. प्र०—भिन्न-भिन्न कतव्यो के थोडे बहुत दाखले देकर समझाओ ?

उ०—गुरु के साथ शिष्य का, शिष्य के साथ गुरु का, राजा के साथ प्रजा का और प्रजा के साथ राजा

का इसी तरह पिता पुत्र का परस्पर, पति-पत्नी का परस्पर ऐसे ही मित्र भाई, उपकारी, शरणागत, अनुयायी अपने से हलकी जाति के प्राणी, अपने से उच्च जाति के प्राणी, इसी तरह एक दूसरे के भिन्न-भिन्न कर्तव्य होते हैं।

५४. प्र०—गुरु के साथ शिष्य का क्या कर्तव्य है ?
उ०—गुरु की भक्ति करना और उनके कथनानुसार व्यवहार करना।

५५ प्र०—शिष्य के साथ गुरु का क्या कर्तव्य है ?
उ०—शिष्य की योग्यतानुसार उसे ज्ञान सिखाना और हित राह दिखाना।

५६ प्र०—प्रजा के साथ राजा का क्या कर्तव्य है ?
उ०—प्रजा शांति में रहे ऐसे प्रयत्न करना, सदा सुलह शांति व्याप्त रहे इसलिये कायदे बनाकर न्याय पूर्वक प्रजा का पालन करना और जिस तरह प्रजा की आबादी बढ़े वैसा करना।

५७ प्र०—राजा के साथ प्रजा का क्या कर्तव्य है ?
उ०—ऐसे न्यायी निपुण नृप की आज्ञा शिरोधार्य कर उस की उन्नति चाहना और उनके हमेशा कृतज्ञ रहना।

५८ प्र०—पुत्र के साथ माता पिता का क्या कर्तव्य है ?
उ०—पुत्र को बाल्यपन से ही शुभ संस्कार में लगाना, बुरों से वंचित रखना विद्याभ्यास कराना और चरित्र में श्रेष्ठ पुरुषों की तरह जीवन व्यतीत कर सके ऐसे गुणवान बनाने का प्रयत्न करना।

५९ प्र०—माता पिता के साथ पुत्र का क्या कर्तव्य है ?

उ०—उनकी सेवा करना, उनके अत्यन्त उपकार को कभी न भूलना, अपनी योग्यता प्रकटित होने पर उनका भार उतार कर धर्म ध्यान और शाति मे जीवन व्यतीत करें ऐसी सहूलियत कर देना।

६०. प्र०—पति पत्नी का परस्पर क्या कर्तव्य है ?

उ०—परस्पर प्रेम रखना, एक दूसरे की भूल सुधारना, अन्योन्य हित चाहना, मान करना, मदद देना, आपत्ति मे सहायक होना, दु:ख मे भाग लेना, स्वार्थ न साधना और भविष्य की प्रजा के हृदय मे उत्तम सस्कार के बीजारोपण करना।

६१. प्र०—मित्र के साथ क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन से माया-कपट न करना, हितचिंतक बनना खराब राह पर जाता हो तो सत्तराह पर लगाना, दु.ख मे दुखी होना और भेद भाव न रखना।

६२. प्र०—उपकारी के साथ क्या कर्त्तव्य है ?

उ०—उपकारी योग्य सत्कार करना और जहा तक बन सके उनके उपकार का बदला चुकाने की भरसक कोशिश करना।

६३. प्र०—शरणागत के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—सानुकुलतानुसार सहायता करना, उनकी याचना पर लक्ष्य देना परन्तु लापरवाह न होना।

६४. प्र०—अनुयायियो के साथ क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन्हे सुधारना, सुखी करना, सत्तराह लगाना, और उनका जीवन सुख से व्यतीत हो ऐसा प्रयत्न करना।

६५ प्र०—अपने से उच्च पुरुषो के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन पर पूज्य भाव रखना, उनकी उच्च योग्यता का अनुकरण करना और उनके उत्तम गुण देखकर प्रमुदित होना परन्तु ईर्षा न करना।

६६ प्र०—अपने से हलके प्राणियों के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—उनपर दया करना, उनके दोष और अपूर्णता देख आकुल न होने या घृणा न करते उन्हें दोष मुक्त करने का प्रयास करना और अपने से बन उतना उनका भला चाहना और करना।

६७ प्र०—गृहस्थाश्रम के साथ करना धर्म कैसे कहा जाता है ?

उ०—धर्म के दो विभाग हैं। एक गृहस्थाश्रम का धर्म और दूसरा त्यागाश्रम का धर्म। गृहस्थ को गृहस्थाश्रम के नियमों का पालन करना ही उनका धर्म है।

६८ प्र०—धर्म का दूसरा अर्थ क्या है ?

उ०—स्वभाव।

६९ प्र०—धर्म का अर्थ स्वभाव कैसे किया ?

उ०—चेतन और अचेतन प्रत्येक पुद्गल के भिन्न भिन्न स्वभाव हैं वे उनके धर्म हैं।

७० प्र०—सब पुद्गलों का सामान्य धर्म क्या है ?

उ०—मिलना, भिन्न होना, रूपान्तर होना, नये बने होना, सूक्ष्म स्थूलता धारण कर वर्ण, गंध, रस, स्पर्श का पलटाना यही धर्म (स्वभाव) पुद्गल का है।

७१ प्र०—चेतन का धर्म क्या है ?

उ०—सदा ज्ञानवान, सच्चिदानन्द स्वरूप में लीन,

उ०—उनकी सेवा करना, उनके अत्यन्त उपकार को कभी न भूलना, अपनी योग्यता प्रकटित होने पर उनका भार उतार कर धर्म ध्यान और शाति मे जीवन व्यतीत करें ऐसी सहूलियत कर देना।

६०. प्र०—पति पत्नी का परस्पर क्या कर्तव्य है ?

उ०—परस्पर प्रेम रखना, एक दूसरे की भूल सुधारना, अन्योन्य हित चाहना, मान करना, मदद देना, आपत्ति मे सहायक होना, दुःख मे भाग लेना, स्वार्थ न साधना और भविष्य की प्रजा के हृदय मे उत्तम संस्कार के बीजारोपण करना।

६१. प्र०—मित्र के साथ क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन से माया-कपट न करना, हितचिंतक बनना खराब राह पर जाता हो तो सत्तराह पर लगाना, दुःख मे दुखी होना और भेद भाव न रखना।

६२. प्र०—उपकारी के साथ क्या कर्त्तव्य है ?

उ०—उपकारी योग्य सत्कार करना और जहा तक बन सके उनके उपकार का बदला चुकाने की भरसक कोशिश करना।

६३ प्र०—शरणागत के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—सानुकुलतानुसार सहायता करना, उनकी याचना पर लक्ष्य देना परन्तु लापरवाह न होना।

६४. प्र०—अनुयायियो के साथ क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन्हें सुधारना, सुखी करना, सत्तराह लगाना, और उनका जीवन सुख से व्यतीत हो ऐसा प्रयत्न करना।

६५ प्र०—अपने से उच्च पुरुषो के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन पर पूज्य भाव रखना, उनकी उच्चता योग्यता का अनुकरण करना और उनके उत्तम गुण देखकर प्रमुदित होना परन्तु ईर्षा न करना।

६६ प्र०—अपने से हलके प्राणियो के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—उनपर दया करना, उनके दोष और अपूर्णता देख आकुल न होने या घृणा न करते उन्हे दोष मुक्त करने का प्रयास करना और अपने से बने उतना उनका भला चाहना और करना।

८७. प्र०—गृहस्थाश्रम के कार्य करना धर्म कैसे कहा जाता है ?

उ०—धर्म के दो विभाग है। एक गृहस्थाश्रम का धर्म और दूसरा त्यागाश्रम का धर्म। गृहस्थ को गृहस्थाश्रम के नियमो का पालन करना ही उनका धर्म है।

६८ प्र०—धर्म का दूसरा अर्थ क्या है ?

उ०—स्वभाव।

६६. प्र०—धर्म का अर्थ स्वभाव कैसे किया ?

उ०—चेतन और अचेतन प्रत्येक पुद्गल के भिन्न भिन्न स्वभाव है वे उनके धर्म हैं।

७७ प्र०—सब पुद्गलो का सामान्य धर्म क्या है ?

उ०—मिलना, भिन्न होना, रूपान्तर होना, नये जूने होना, सूक्ष्म स्थूलपना धारण कर वर्ण, गध, रस, स्पर्श का पलटाना यही धर्म (स्वभाव) पुद्गल का है।

७१ प्र०—चेतन का धर्म क्या है ?

उ०—सदा स्वउपयोगी, सच्चिदानन्द स्वरूप मे लीन,

परमज्ञान मे रमन यही शुद्ध चेतन का धर्म (स्वभाव) है ।

७२. प्र०—चेतन मे शुद्ध और अशुद्ध यह क्या है ?

उ०—चेतन जब तक जड (शरीर और कर्मों के) साथ है तब तक अशुद्ध है और जब कर्मों से बिलकुल मुक्त हो जाता है तब शुद्ध समझा जाता है ।

७३. प्र०—जड के साथी चेतन अपने ही धर्म का पालन करते है या अन्य धर्म का ?

उ०—जड के साथ अति सम्बन्ध होने से जड का धर्म अपने मे स्थित कर लेता है जिससे जड के विकारो से अपने मे विकार और जड के सडन, गलन, पलन मे अपना सडन, गलन, पलन समझता है और अनेक अकार्य करता है ये सब उसके स्वतः के धर्म विरुद्धध है । परन्तु जब जड और चेतन के धर्म जान समझकर पर भाव को त्याग स्वभाव मे रहने का प्रयत्न करता है, तब कर्मों की निर्जरा होती है, और उस समय वह अपने धर्म का सेवन कर रहा है ऐसा समझा जाता है ।

७४ प्र०—गृहस्थाश्रम धर्म का पालक कब समझा जाता है ?

उ०—विवेक पूर्वक अहिंसादि पांच अणुव्रतो का पालन करता हुआ सेवा धर्म की चाह रखता है, दुखी को विश्राम भूत होता है, सत्य प्रिय बनता है, और परोपकार से प्रेम रख निर्दोष जीवन व्यतीत करता है, वह गृहस्थधर्म का मालक समझा जाता है ।

७५ प्र०—सक्षिप्त मे देव गुरु और धर्म का अर्थ क्या है ?

उ०—सब कर्मों से विमुक्त, आत्म, स्वरूप प्रकट कर अनन्त सुख के भोक्ता, हुए वे देव, अरिहत और सिद्ध ये दो वीतराग के प्रतिपादन किये हुए मार्ग पर चलने वाले आत्म कल्याण के साधने और अन्य को सधाने वाले आचार्य उपाध्याय और साधु, साध्वी ये तीन गुरु और आत्म कल्याण साधने की जो सर्वोत्तम क्रिया है कि जिस क्रिया से दोषो का समूल नाश होता है और आत्मा की स्वतन्त्रता प्रकट होती है उन क्रिया का नाम धर्म की क्रिया है।

पाठ–३०

समयक ज्ञान

१. प्र०—मोक्ष प्राप्त करने के मुख्य साधन कितने हैं ?
उ०—चार, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्दर्शन सम्यक्चारित्र और विशुद्धतप ।

२ प्र०—ज्ञान का अर्थ क्या है ?
उ०—किसी भी वस्तु को उसके नाम, गुण, जाति, क्रिया और स्वरूप से विशेष समझना ।

३. प्र०—ज्ञान के कितने भेद हैं ?
उ०—पाच, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यंव-ज्ञान, केवलज्ञान ।

४. प्र०—इन पांचो के संक्षिप्त भेद कितने हैं ?
उ०—दो प्रत्यक्ष और परोक्ष ।

५ प्र०—परोक्ष ज्ञान कितने है ?
उ०—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान ।

६. प्र०—मतिज्ञान का अर्थ क्या ?
उ०—इन्द्रियो तथा मन के द्वारा मति से जानना वह मतिज्ञान है ।

७. प्र०—मतिज्ञान का दुसरा नाम क्या है ?
उ०—आभिनिवोधिक ।

८. प्र०—मतिज्ञान के कितने भेद है ?
उ०—दो; श्रुत निश्चत, अश्रुत निश्चित ।

९. प्र०—श्रुत निश्चत के कितने भेद है ?
उ०—चार, अवग्रह, ईहा, अपाय, धारणा ।

१०. प्र०—अवग्रह अर्थात् क्या ?
उ०—किसी भी वस्तु की सामान्यता (अनिमितता) समझना ।

११. प्र०—अवग्रह के कितने भेद हैं ?
उ०—दो, व्यजनावग्रह, अर्थावग्रह ।

१२. प्र०—व्यजनावग्रह का अर्थ क्या है ?
उ०—किसी पदार्थ का इन्द्रियो के साथ सम्बन्ध होना ।

१३. प्र०—अर्थावग्रह का क्या अर्थ है ?
उ०—वस्तु के भाव को सामान्य रीति से समझना ।

१४. प्र०—अर्थावग्रह के कितने भेद हैं ?
उ०—छः, पाच इन्द्री और छट्ठा मन, इन छः पदार्थों के अर्थ का अवग्रह अर्थात् बोध होता है ।

१५ प्र०—व्यंजनावग्रह के कितने भेद है ?

ऊ०—चार, श्रुत, घ्राण, रस, स्पर्श, ये चार (इन्द्रियां चाक्षु और मन इन दो का व्यजनावग्रह नही होता)।

१६ प्र०—ईहा का अर्थ क्या है ?

उ०—सामान्य रीति से जानी हुई वस्तु पर विशेष विचार करना।

१७ प्र०—अवाय का अर्थ क्या है ?

उ०—विचार किये पश्चात् उसका निश्चय करना

१८ प्र०—धारण का अर्थ क्या है ?

उ०—उस निश्चित की हुई को धारण करना।

१९ प्र०—ईहा, अवाय, और धारण के कितने भेद हैं ?

उ०—प्रत्येक के छ-छः भेद, पाच इन्द्री और छट्ठा मन, तीनो के मिलकर अठारह भेद होते हैं।

२० प्र०—श्रुत निमित के कुल कितने भेद हुए ?

उ०—अर्थावग्रह के छ, व्यजनावग्रह के चार, ईहा, अवाय, धारणा, के छ.-छ सब २८ भेद हुए।

२१ प्र०—श्रुत निश्चित का अर्थ क्या है ?

उ०—श्रुत अर्थात् सुनकर उसके अर्थ का विचार करना।

२२. प्र०—अश्रुत निश्चित अर्थात् क्या ?

उ०—स्वत. की बुद्धी फैलना।

२३. प्र०—अश्रुत निश्चत के कितने भेद हैं ?

उ०—उत्पातिया, विनिया, कम्मिया, परणामिया ये चार प्रकार की बुद्धि हैं।

२४. प्र०—औतपात की का अर्थ क्या ?

उ०—अपने स्वत. की सहज ही में बुद्धि उत्पन्न हो जाय (बीरबल बादशाह की तरह)।

२५ प्र०—वैनयिकी का अर्थ क्या ?

उ०—गुरु प्रभृति का विनय करते बुद्धि प्राप्त हो।

२६. प्र०—कार्मिकी अर्थात् क्या ?

उ०—अभ्यास करते-करते बुद्धि उत्पन्न हो।

२७ प्र०—परिणामिकी अर्थात् क्या ?

उ०—ज्यों ज्यो वय की वृद्धि हो बुद्धि बढती जाय।

२८. प्र०—पूर्व भव का जिससे स्मरण हो जाय वह कौनसा ज्ञान है ?

उ०—जाति स्मरण ज्ञान।

२९ प्र०—यह ज्ञान पाच ज्ञान मे किस ज्ञान का भेद है ?

उ०—मति ज्ञान का।

३०. प्र०—श्रुत ज्ञान का अर्थ क्या ?

उ०—शब्द ज्ञान अथवा शास्त्र ज्ञान।

३१ प्र०—यह ज्ञान मतिज्ञान सिवाय किसी को होता है ?

उ०—नही, मतिज्ञान होता है, उसे श्रुय ज्ञान होता है और श्रुत ज्ञान हो उसे मतिज्ञान, श्रुत बिना मतिज्ञान नही हो सकता और मतिज्ञान बिना श्रुतज्ञान नही हो सकता।

३२. प्र०—श्रुतज्ञान कितने तरह का होता है ?

उ०—दो दो भाग करें ऐसे सात जाति का श्रुत ज्ञान होता है। (सब मिलकर १४ जाति का)।

३३. प्र०—इन चौदह जाति के नाम क्या है ?

उ०—अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, सज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, मिथ्याश्रुत, सादिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यवसितश्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगामिकश्रुत, अंग, प्रविष्ठ और अंग बाहिर मे

ज्ञान है वह सादि सपर्यवसित श्रुत ज्ञान है।

४४. प्र०—सादि सपर्यवसित श्रुत का (अर्थ क्या ?) शब्दार्थ क्या ?

उ०—आदि (आरम्भ) सहित अन्त तक।

४५. प्र०—अनादि अपर्यवसित श्रुत का अर्थ क्या ?

उ०—जिस का आदि और अन्त नही ऐसा श्रुत, जो द्रव्य से, कई पुरुष, क्षेत्र से महाविदेह क्षेत्र, काल से महाविदेह क्षेत्र मे प्रचलित काल तक।

४६ प्र०—गमिक श्रुत प्रर्थात् क्या ?

उ०—शास्त्रो मे समान, और अनुक्रम वाले अधिकार हो।

४७. प्र०—अगमिक श्रुत का अर्थ क्या ?

उ०—जिसके अधिकार भिन्न-भिन्न और असमान हो।

४८. प्र०—अग प्रविष्ठ श्रुत अर्थात् क्या ?

उ०—जो शास्त्र अग भूत हो।

४९. प्र० -वे अंग भूत शास्त्र कितने और कौन से है ?

उ०—बारह, आचारग, सुयगडाग, ठाणांग, समवायाग, विविहा पन्नति (भगवति) ज्ञाता, उपासक, दशाग, अतगढ, दशाग, अनुत्तरो व वाई, प्रश्न व्याकरण, विपाक और दृष्टिवाद।

५० प्र०—अग बाहिर अथात् क्या ?

उ०—अग से सम्बधित उपाग।

५१. प्र०—वे अग बाहिर के भेद कितने और कौन से है ?

उ०—दो, आवश्यक और आवश्यक से व्यतिरिक्त।

५२. प्र०—आवश्यक के कितने अध्ययन है और कौन से हैं ?

उ०—छ., सामायिक, चऊवीसथो, वदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, प्रत्याख्यान।

५३. प्र०—आवश्यक से व्यतिरिक्त के कितने भेद हैं और कौन से हैं ?
उ०—कालिक सूत्र और उत्कालिक सूत्र ।

५४ प्र०—कालिक सूत्र का अर्थ क्या ? और कितने हैं ?
उ०—अमुक समय ही पढना चाहिये, वे कालिक सूत्र तीस हैं ।

५५ प्र०—प्रत्कालिक सूत्र अर्थात् क्या ? और वे कितने हैं ?
उ०—असज्भाय और अकाल सिवाय चाहे जिस वक्त पढ सकें वे उन्तीस हैं ।

पाठ–२९

प्रत्यक्ष ज्ञान

१. प्र०—प्रत्यक्ष ज्ञान के भेद कितने और कौन से हैं ?
उ०—दो इन्द्रिय प्रत्यक्ष और नो इद्रिय प्रत्यक्ष ।

२. प्र०—इद्रिय प्रत्यक्ष के कितने भेद हैं ?
उ०—पाच, इद्रियो के पाच ।

३ प्र०—नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष के कितने भेद है ?
उ०—तीन, अवधिज्ञान मन पर्यवज्ञान और केवलज्ञान ।

४ प्र०—अवधिज्ञान अर्थात् क्या ?
उ०—इन्द्रियो की सहायता न लेकर परभारे अमुक सीमा तक आत्मा को मन के अवधान से ज्ञान उत्पन्न हो वह अवधि ज्ञान है ।

५. प्र०—अवधिज्ञान के कितने भेद हैं ?
उ०—दो, भव प्रत्ययिक और क्षयोपशम प्रत्ययिक।

६. प्र०—भव प्रत्ययिक अर्थात् क्या ?
उ०—देवता और नारकी के भव मे अवधिज्ञान होता है वह।

७. प्र०—क्षयोपशम प्रत्ययिक अर्थात् क्या ?
उ०—अवधिज्ञान को आवरण करने वाले कर्मों का विशुद्ध अध्यवसाय से क्षयोपशम हो जाय फिर मनुष्य और तिर्यंच को जो ज्ञान प्रकटे वह क्षयोपशम प्रत्ययिक अवधिज्ञान है।

८. प्र०—क्षयोपशम प्रत्ययिक के कितने भेद हैं और कौन से ?
उ०—अनुगामी, अनानुगामी, वर्धमान, हायमान, प्रतिपाती और अप्रतिपाती।

९ प्र०—अनुगामी का अर्थ क्या ?
उ०—नैत्र की तरह साथ ही रहे।

१०. प्र०—अनानुगामी अर्थात् क्या ?
उ०—जहा उत्पन्न हुआ हो उसी स्थान पर देख सके अन्य स्थान पर जाने से न देख सके।

११. प्र०—वर्धमान का अर्थ क्या ?
उ०—उत्पन्न होने पश्चात् विशुद्ध अध्यवसाय का सयोग होने से उसकी वृद्धि हो।

१२ प्र०—हायमान का अर्थ क्या ?
उ०—उत्पन्न होने पश्चात् अशुभ विचार आने से घटने लगे।

१३. प्र०—प्रतिपाती अर्थात् क्या ?
उ०—उत्पन्न होने पश्चात् जल्द ही वह ज्ञान लुप्त हो जाय।

१४. प्र०—अप्रतिपाती का अर्थ क्या ?

उ०—उत्पन्न होने पश्चात वह ज्ञान स्थिर रहे ।

१५ प्र०—अवधिज्ञानी द्रव्य से कितना देखता है ?

उ०—जघन्य द्रव्य का अनन्त वा भाग देख सकता है और उत्कृष्ट सब रूपी द्रव्य देख सकता है ।

१६ प्र०—अवधिज्ञानी क्षेत्री से कितना देख सकता है ?

उ०—जघन्य, अगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट सब लोक और अलोक मे लोक के जितने असख्य खन्ड है नही होवे तो देख सकता है ।

१७. प्र०—काल से अवधिज्ञानी कितना जान सकता है ?

उ०—जघन्य आविलिका के असख्यातवें भाग जितने काल को जान मकता है और उत्कृष्ट अतीत अनागत, असख्याति अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी के कालचक्र को जान सकता है ।

१८ प्र०—भाव मे अवधिज्ञानी कितना जान सकता है ?

उ०—जघन्य उत्कृप्ट अनत भाव जान सकता है ।

१९ प्र०—यथार्थ ज्ञान का नाम क्या है ?

उ०—सम्यकज्ञान ।

२०. प्र०—विपरीतज्ञान का नाम क्या है ?

उ०—मिथ्याज्ञान (अज्ञान) ।

२१ प्र०—सम्यकज्ञान वाले को दृष्टि कितनी होती है ?

उ०—एक सम्यक दृष्टि ।

२२. प्र०—मिथ्याज्ञान वाले को दृष्टि कौनसी होती है ?

उ०—मिथ्या दृष्टि ।

२३. प्र०—मिथ्यादृष्टि को मतिज्ञान प्राप्त हो तो उसे क्या कहते है ?

उ०—मितअज्ञान ।

२४. प्र०—मिथ्यादृष्टि को श्रुतज्ञान हो तो वह कैसा ज्ञान समझा जाता है ?

उ०—श्रुतअज्ञान ।

२५. प्र०—मिथ्यादृष्टि को अवधिज्ञान हो वह कैसा समझा जाता है ?

उ०—विभगज्ञान ।

२६. प्र०—मनःपर्यवज्ञान अर्थात् क्या ?

उ०—सज्ञी पचेद्रिय जीवो के मन को सब तरह से जान लेना ।

२७. प्र०—मन को जान लेना अर्थात् क्या ?

उ०—दूसरे मनुष्य के दिल मे रही हुई सब बात समझ लेना ।

२८. प्र०—मनःपर्यवज्ञान के कितने भेद है ? और कौन से ?

उ०—दो, ऋजुमति विपुलमति ।

२९. प्र०—ऋजुमति अर्थात् क्या ?

उ०—सामान्य रीति से ग्रहण करने की मति ।

३०. प्र०—विपुलमति का अर्थ क्या ?

उ०—विशेष रीति से ग्रहण करने की मति ।

३१ प्र०—ऋजुमति कितना देखता है,?

उ०—अनँत, प्रदेशी, अनत मन के भाव जनता है, देखता है।

३२ प्र०—विपुल मति कितना देखता है ?

उ०—वे भी उपरोक्त भाव देखते है परन्तु अधिक विशुद्धता से ।

३३. प्र०—मन.पर्यवज्ञान किसको उत्पन्न होता है ?

उ०—समदृष्टि आत्मार्थी साधु मुनिराज को।

३४. प्र०—अवधिज्ञान और मन पर्यवज्ञान प्रत्यक्षज्ञान किस तरह हैं ?

उ०—इन्द्रियो की बिना सहायता के मन से आत्मा को प्रत्यक्ष दिखाते है इसलिये प्रत्यक्ष हैं।

३५ प्र०—मति और श्रुत ज्ञान परोक्ष किस तरह है ?

उ०—इन्द्रियो की सहायता सिवाय मन नही जान सकता इसलिये आत्मा की अपेक्षा है।

३६ प्र०—छदमस्थ को उत्कृष्ट कितने ज्ञान प्राप्त होते हैं ?

उ०—चार, मति, श्रुत, अवधि, और मन.पर्यवज्ञान।

३७ प्र०—सर्वश्रेष्ठ परमज्ञान कौनसा है ?

उ०—केवल्यज्ञान।

३८. प्र०—केवल्य अर्थात् क्या ?

उ०—एक, शुद्ध, सम्पूर्ण, प्रत्यक्ष, असाधारण, अनत, अस्खलित, वह केवल्यज्ञान है।

३९. प्र०—यह ज्ञान उत्पन्न होता है तब क्या दिखाता है ?

उ०—रूप अरूपी, द्रव्य, क्षेत्र से लोकालोक, काल से भूत, भविष्य, वर्तमान भाव से सर्व गुण पर्याय हस्तामल कवत् देखे जाते हैं।

४०. प्र०—इस ज्ञान के भेद कितने है ?

उ०—यह ज्ञान अखण्ड आत्म प्रकाश के समान होने से इसके भेद नही है।

४१. प्र०—केवल्य के सिवाय चार ज्ञान किस भाव से आते है ?

उ०—क्षयोपशम भाव से।

४२. प्र०—केवल्यज्ञान किस भाव से आते हैं ?

उ०—क्षायकभाव से।

पाठ–३१

सम्यक दर्शन

१. प्र०—मोक्ष प्राप्त करने का दुसरा साधन कौन सा है ?
   उ०—सम्यक दर्शन ।

२. प्र०—दर्शन के कितने भेद है और कौन से है ?
   उ०—आठ, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवल्य-दर्शन, सम्यकदर्शन, मिथ्यादर्शन, समिथ्यादर्शन, स्वप्न दर्शन ।

३. प्र०—आठ दर्शन, कितने अर्थ मे शामिल है ?
   उ०—तीन अर्थ मे, (१) द्रव्य मे, (२) सम्यकत्व मे, (श्रद्धा) (३) सामान्यज्ञान मे ।

४. प्र०—मतिश्रुत ज्ञान वाले को कौनसा दर्शन होता है ?
   उ०—चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन ।

५. प्र०—अवधिज्ञानी को कौनसा दर्शन होता है ?
   उ०—अवधिदर्शन ।

६. प्र०—मनः पर्यवज्ञानी को कौन सा दर्शन होता है ?
   उ०—चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन ।

७. प्र०—केवल्यज्ञानी को कौनसा दर्शन होता है ?
   उ०—केवल्यदर्शन ।

८ प्र०—चक्षु दशन का अर्थ क्या ?
   उ०—चक्षु से देखना ।

९. प्र०—अचक्षु दर्शन का अर्थ क्या ?
   उ०—चक्षु सिवाय अन्य इन्द्रियो तथा मन से जो सामान्य-ज्ञान होता है वह अचक्षु दर्शन ।

१०. प्र०—अवधिदर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—इन्द्रियो की बिना ही सहायता के मन मे अमुक सीमा तक देखने का जो सामान्यज्ञान प्रकट हो वह अवधि दर्शन है ।

११. प्र०—केवल्य दर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—सम्पूर्ण सामान्य ज्ञान ।

१२. प्र०—मन पर्यवज्ञान है और मन पर्यव दर्शन क्यो नही ?
उ०—मन. पर्यवज्ञानी को सामान्य रीति से देखना नही पडता अतएव दर्शन नही है ।

१३. प्र०—सम्यक दर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—यथार्थ देखना ।

१४ प्र०—मिथ्या दर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—हो उससे प्रतिकूल देखना ।

१५ प्र०—समिथ्या दर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—कुछ सत्य और कुछ असत्य देखना ।

१६. प्र०—स्वप्न दर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—स्वप्न मे जो जो देखा जाता है, उसे अचक्षु दर्शन भी कहते हैं ।

१७. प्र०—देखना इस अर्थ मे कितने दर्शन होते है ?
उ०—एक, चक्षु दर्शन ।

१८. प्र०—श्रद्धा इस अर्थ मे कितने दर्शन होते है ?
उ०—तीन, सम्यक दर्शन, मिथ्या दर्शन, समिथ्या दर्शन ।

१९ प्र०—सामान्यज्ञान के अर्थ वाले कितने दर्शन है ?
उ०—तीन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन और केवल्य-दर्शन ।

२०. प्र०—सम्यकदर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान होता है ?

उ०—सयम्यक्ज्ञान ।

२१ प्र०—मिथ्यादर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान होना है ?

उ०—मिथ्यादर्शन ।

२२. प्र०—समिथ्या दर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान होता है ?

उ०—समिथ्याज्ञान ।

२३ प्र०—सम्यक्ज्ञानी हो वह कौन से देव, गुरु, धर्म को मानता है ?

उ०—राग, द्वेष रहित, सर्व कर्म से मुक्त, केवल्यज्ञानी, ऐसे पवित्र स्वरूपी को देव (प्रभु) मानता है और उन्ही वीतरागी देव के फरमाये हुए मार्ग पर ममत्व रहित विचरण करने वाले को गुरु और जिस राह से परम शाति मिले वह वीतराग के बताये हुए परम दयामय मार्ग को धर्म मानता है।

२४. प्र०—धर्म की नीव क्या है ?

उ०—सम्यक्त्व ।

२५. प्र०—सम्यक्त्व न हो तो जीव मोक्ष पा सकता है या नही ?

उ०—नही, बिना सम्यक्त्व के जीव मोक्ष नही पा सकता ।

२६ प्र०—सम्यक्त्व का सक्षिप्त अर्थ क्या ?

उ०—ज्ञान और सच्ची श्रद्धा।

२७ प्र०—सम्यक्त्व की पहिचान के कितने सकेत है, और कौन-कौन से है ?

उ०—६०, तीन शुद्धि, तीन लिंग, पाच लक्षण, पाच दूषण (अतिचार) से रहित, पाच भूषण चार सर्द-

हना, छ' स्थान, आठ आचार, आठ प्रभावक, दस रूचि, दस विनय ।

२८ प्र०—तीन शुद्धि कोनसी ?

उ०—मन, वचन, और काय शुद्धि ।

२९. प्र०—तीन लिंग कौन से है ?

उ०—(१) आगम श्रवण की रूची (२) धर्म कार्य करने मे प्रेम (३) गुरु भक्ति ।

३०. प्र०—पाच लक्षण कौन से ?

उ०—सम, (सम स्थिति) समवेग (मोक्षाभिलाषी) निर्वेद, (विषय पर अरूचि) अनुकम्पा, (दु खी पर करूणा), आस्था (विश्वास) ।

३१. प्र०—पाच दूषण कौन से ?

उ०—शका, काक्षा, वितिगच्छा (फल का सदेह) पाखड-प्रशशा, शाखड का परिचय ।

३२. प्र०—भूषण पाच कौन से ?

उ०—स्वधर्म मे अटल आगम शैली मे कुशल सत्यानुप्रेक्षी, तीर्थ की सेवा करने वाला, धर्म का उद्धारक ।

३३. प्र०—छ स्थान कौन से ?

उ०—जीव का अस्तित्व है, जीव शाश्वत है, पुन्य पाप का कर्त्ता है, भोक्ता है, मुक्ति है, उसका उपाय है, इन छ का स्वीकार करने वाला ।

३४ प्र०—चार सर्दहना कौन सी ?

उ०—परमार्थ का परिचय, तत्वज्ञानो की सेवा, श्रद्धा-भृष्ट सम्दर्शनो का त्याग, मिथ्यात्वो सगर्रजन ।

३५ प्र०—आठ आचार कौन से ?

उ०—नि. शंका नि कांक्षा, निवितिगच्छा, (फल मे निस्सदेह) अमूढ दृष्टि, उपबोध, समीप आने वाले को उपदेश कर्त्ता, स्थिरीकरण (धर्म से च्युत होने वाले को स्थिरकर्त्ता) धर्म वत्सल, प्रभाविक।

३६. प्र०—आठ प्रभावक कौन से ?

उ०—(१)प्रावचनी (प्रवचन की कुशलता से मार्ग प्रदीप्त करे) (२) कथा निपुण (धर्म कथाए कह कर दुर्बोधी को धर्म मे लगावे) (३) वादी (शास्त्रार्थ कर शासन दिपावे) (४) निमित्त (भापी भूत भविष्य के ज्ञान से मार्ग दीपावे) (५) तपस्वी (निस्पृहता से तपस्या कर मार्ग दि पावे) (६) विद्या सम्पन्न (रसायन यत्र, खगोल, भूगोल, भूतल, भूस्तर, इतिहास, न्याय, इत्यादि सीख जैन सिद्धात मे पुष्ट करे) (७) सिद्धि सम्पन्न (विविध प्रकार की सिद्धियो द्वारा जैन मार्ग को दि पावे) (८) कवि (काव्य शक्ति द्वारा सिद्धात को पुष्ट करने वाले ग्रथ रच धर्म को दिपावे)।

३७. प्र०—दस रूची कौनसी ?

उ०—निसर्ग रूचि, (स्वाभाविक) उपदेश रूचि, आज्ञा-रूचि, स्वरूचि, बीज रूचि, अभिगम रूचि, विस्तार रूचि, क्रिया रूचि, सक्षेप रूचि, धर्म रूचि।

३८. प्र०—दस विनय कौन से ?

उ०—आचार्य उपाध्याय, स्थवीर तपस्वी, ग्लानी, शिष्य, कुल, गण, सघ, स्वधर्मी इन दस का विनय करता है।

३९. प्र०—साधु या श्रावक मे सम्यक्तत्व न हो तो वे किस

गिनती में है ?

उ०—द्रव्य (नाममात्र) श्रावक या साधु गिने जाते हैं।

४०. प्र०—सम्यक दृष्टि की खास विशेषता क्या है ?

उ०—सम्यक दृष्टि सात स्थान का आयुष्य का नया बध नही बाधता है।

४१. प्र०—सात स्थान कौन से है ?

उ०—नारकी, तिर्यंच, स्त्री, नपुंसक, भवनपति, वाणा-व्यतर, ज्योतिषी, इन सात स्थान का आयुष्य नही बाधता है।

४२. प्र०—सम्यक्त्व प्राप्त होने पर मृत्यु तक कायम रहे तो वह जीव कितने भव कर मोक्ष प्राप्त कर लेता है ?

उ०—जघन्य तीन भाव और उत्कृष्ट पद्रह भव कर मोक्ष जाता है।

४३. प्र०—सम्यक्त्व आये पश्चात वापिस चली गई और मृत्यु तक न रही तो वह जीव कब मोक्ष पाता है ?

उ०—जघन्य दूसरे तीसरे भव और उत्कृष्ट अर्ध पुद्-गल परवर्तन मे मोक्ष पाता है।

पाठ–३२

चारित्र तप और वीर्य

१. प्र०—सम्यक्त्व के बाद कौनसा कर्तव्य है ?

उ०—चारित्र ।

२. प्र०—चारित्र अर्थात् क्या ?

उ०—आत्म कल्याण करने की शुद्धि क्रिया (व्यवहार) अर्थात् दुःख मुक्त होने का व्यवहार ।

३. प्र०—उसके कितने भेद है ?

उ०—दो देशविरति और सर्व विरति (व्रत) ।

४. प्र०—देशविरति के कितने व्रत है ?

उ०—बारह; पाच अणुव्रत, तीन गुण व्रप, चार शिक्षाव्रत ।

५. प्र०—अणुव्रत अर्थात् क्या ?

उ०—साधु के व्रत की अपेक्षा छोटे (मर्यादा वाले) ।

६. प्र०—गुणव्रत अर्थात् क्या ?

उ०—अणुव्रत को गुण (मदद) करने वाले ।

७. प्र०—शिक्षाव्रत अर्थात् क्या ?

उ०—धर्म शिक्षा के भवन समान या शिक्षा अर्थात् अणुव्रत रूप मदिर के शिखर समान ।

८. प्र०—देश विरति का प्रचलित नाम क्या है ?

उ०—श्रावक या श्रमणोपासक ।

९ प्र०—इसके सिवाय उन्हे और क्या पालना आवश्यक है ?

उ०—पाच सुमति और तीन गुप्ति ।

१० प्र०—पाच सुमति कौनसी ? और उनका अर्थ क्या ?

उ०—इर्या सुमति अर्थात् यत्न पूर्वक चलना, भाषा सुमिति अर्थात् यत्ना से बोलना, एषणा सुमति, अर्थात् यत्ना से बहिरना (अन्न पानी लेना) आयाण भड मत निमेवणीय सुमति अर्थात् अपने उपकरण प्रभृति यत्ना से लेना, रखना, उच्चार

आदि परिठावणिया सुमति अर्थात् डाल देने फेंक देने की की वस्तुए यत्न पूर्वक डाल देना, फेंक देना ।

११. प्र०—तीन गुप्ति कौनसी ? और उनका अर्थ क्या ?
उ०—मन, वचन और काया से पाप न करना और धर्म मे स्थिर करना ।

१२ प्र०—श्रावक के गुण कितने और कौन से है ?
उ०—इकवीस, १ अक्षुद्र, २ रूपवत, ३ सौम्य प्रकृति वाला, ४ लोक प्रिय, ५ अक्रुर, ६ पापभीरू, ७ शाठ्य रहित, ८ चतुर, ९ लज्जावत, १० दयालु, ११ मध्यस्थ परिणामी, १२ सुदृष्टि वाला, १३ गुणानुरागी, १४ शुभ पक्ष धारण करने वाला, १५ दीर्घ दृष्टिवन्त, १६ विशेपज्ञ, १७ अल्पराभी, १८ विवित, १९ कृतज्ञ, २० परहितकारी, २१ लब्ध लक्षी ।

१३. प्र०—उनके गुण कितने और कौन से हैं ?
उ०—सत्तावीम, १ दया, २ असत्य त्याग, ३ अस्तेय, ४ ब्रह्मचर्य, ५ अपरिग्रह, ६ अक्रधो, ७ निर्मान, ८ निष्कपट, ९ निर्लोभ, १० सहन शीलता, ११ निष्पक्षपात, १२ परोपकार, १३ तपश्चर्या, १४ प्रशातता- १५ जितेन्द्रियता, १६ परममुमुक्षुप्रति, १७ प्रसन्न दृष्टि, १८ सोम्य, १९ नम्रता, २० गुरु भक्ति, २१ विवेक, २२ वैराग्य रक्तना, २३ सत्यानु प्रेक्ष, २४ ज्ञानाभिलाष, २५ योग निष्टता, (नम, वचन और काया को नियम में रखना) २६ सयम मे रति, २७ विशुद्ध आचार ।

१४. प्र०—अध्ययन कराते है उन्हे क्या कहते हैं और उनके कितने गुण हैं ?

उ०—उपाध्याय कहते है और उनके २५ गुण हैं।

१५. प्र०—सम्प्रदाय का मुख्या क्या कहलाता है ?

उ०—आचार्य, और उनके गुण ३६ है।

१६. प्र०—साधुजी का धर्म कितने प्रकार का है ?

उ०—दस, क्षमा, निर्लोभ, निष्कपट, निर्मान, तपश्चर्या सत्य, सयम निर्मलपना, निष्कचन और ब्रह्मचर्य।

१७. प्र०—चारित्र्य का फल क्या है ?

उ०—आते हुए कर्मों को रोकना।

१८. प्र०—अशुभ कर्मों के नाश करने का उत्तम स्थान कौन सा ?

उ०—तपश्चर्या।

१९ प्र०—तपश्चर्या किसे कहते है ?

उ०—जिस क्रिया से आत्मा पवित्र, निर्मल, शुद्ध, निर्दोष बनती है।

२०. प्र०—तपश्चर्या करने मे मुख्य किसकी आवश्यकता है ?

उ०—वीर्य (पराक्रम) की।

२१ प्र०—वीर्य के कितने भेद हैं ?

उ०—तीन; बाल वीर्य, पडित वीर्य, बाल पडित वीर्य।

२२. प्र०—बाल वीर्य अर्थात् क्या और वह किसे होता है ?

उ०—व्रत प्रत्याख्यान करने का बल जो न प्रकट कर सके, ऐसे चौथे गुणस्थान तक के जीवो को होता है।

२३. प्र०—बाल पडित वीर्य अर्थात् क्या ?

उ०—व्रत प्रत्याख्यान देश से कर सके, ऐसे ५ वें गुण-

स्थान वाले जीव ।

२४. प्र०—पडित वीर्य अथात् क्या ?

उ०—सर्व विरती साधु, जो छट्टे गुणस्थान से १४ वें गुणस्थान तक के जीव है, वे पडित वीर्य के धनी है ।

पाठ-३३

जीव तत्व

१. प्र०—संसार मे मुख्य तत्व कितने हैं ?

उ०—दो, जीव तत्व अजीव तत्व ।

२. प्र०—जीव और अजीव के परस्पर सम्वन्ध के कितने तत्व गिने है ?

उ०—नौ, जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, सवर, निर्जरा, वध, मोक्ष ।

३. प्र०—जीव किसे कहते हैं ?

उ०—जो दस प्राणों द्वारा जीवित हैं ।

४. प्र०—दस प्राण कौन से है ?

उ०—पाच इन्द्रि, मनवल, वचनवल, कायवल, श्वासोवास और आयुष्य ।

५ प्र०—जीव का लक्षण क्या है ?

उ०—ज्ञानोपयोग लक्षण (सदास्व उपयोगी) चैतन्य लक्षण सुख दुख का समझने वाला, करने वाला, भुग-

तने वाला ।

६. प्र०—त्रस किसे कहते हे ?

उ०—जिन्हे त्रस हो (जो स्वय चल फिर सकते है) ।

७. प्र०—स्थावर किसे कहते हे ?

उ०—स्थिर रहते है (जो स्वय चल नही सकते) ।

८. प्र०—स्थावर के मुख्य भेद कितने और कौनसे है ?

उ०—दो, सूक्ष्म और बादर ।

९. प्र०—सूक्ष्म कौनसे और कितने हे ?

उ०—जो चर्म चक्षु से नही देखे जा सकते वे समस्त लोक मे भरे है और अनत हे ।

१०. प्र०—बादर जीव कौनसे है ?

उ०—चर्म चक्षु से जिनके शरीर का समूह देखा जाता है ।

११. प्र०—सूक्ष्म और बादर इन दोनो के कितने भेद हे ?

उ०—बाईस, पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु ये चार सूक्ष्म और चार बादर दोनो मिलाकर ८ हुए और वनस्पति के तीन भेद, सूक्ष्म, प्रत्येक, साधारण तीन मिल कर ११ जिनके अपर्याप्ता और पर्याप्ता मिलकर २२ भेद हुए ।

१२. प्र०—प्रत्येक और साधारण किसे कहते कहते हे ?

उ०—एक शरीर मे एक जीव होते है वे प्रत्येक और एक शरीर मे अनत जीव हो वे साधारण कहलाते हे (कद मूलादि) ।

१३. प्र०—पर्याप्ता और अपर्याप्ता किसे कहते हैं ?

उ०—प्रत्येक जीव जब आकर जन्म लेता है, तब उसे जितनी अर्याप्ती बाधनी होती है, न बाधता है वहा तक अपर्याप्ती गिना जाता है । और सब

बाध लेने पर पर्याप्ता गिना जाता है ।

१४. प्र०—पर्याप्ती कितनी और कौनसी है ?

उ०—छ., आहार, शरीर, इन्द्रि, श्वासोवास, भाषा और मन ।

१५. प्र०—स्थावर जीव के कितनी इन्द्रिया होतो हैं ?

उ०—काया, एक ही ।

१६. प्र०—त्रस के कितने भेद है ?

उ०—चार, वेइद्रि, तेइद्रि, चौरेन्द्रि ये तीन विकलेन्द्रि और चौथा पचेन्द्रि ।

१७. प्र०—विकलेन्द्रि के कितने भेद हैं ?

उ०—६, वेइन्द्रि, तेइन्द्रि, चौरेन्द्रि ये तीन जिनके पर्याप्ते और अपर्याप्ते मिल कर ६ भेद हुये ।

१८. प्र०—तिर्यंच के भेद कितने और कौन से है ?

उ०—मुख्य दो, सज्ञ और असज्ञी ।

१९. प्र०—सज्ञी असज्ञी किसे कहते है ?

उ०—गर्भज (मन वाले) सज्ञी और समुर्छम (विनमान वे) असज्ञी ।

२०. प्र०—असज्ञी और सज्ञी तिर्यंच के कितने भेद है ?

उ०—बीस, (१) जलचर (जल मे रहने वाले) (२) स्थलचर (जमीन पर रहने वाले अश्वादि) (३) उरपर (सर्पादिक छाती से चलने वाले) (४) भुजपर (भुजा से चलने वाले) (५) खेचर (आकाश मे चलने वाले) ये पाच सज्ञो और पाच असज्ञी इन दमो के पर्याप्ता और अपर्याप्ता मिलकर २० भेद हुए ।

२१. प्र०—मनुष्य के कितने भेद हैं ?

उ०—३०३, १५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि, ५६ अतर द्वीपा इन एक सौ के प्रर्याप्ते और अपर्याप्ता मिलकर २०२ गर्भज, १०१ समुर्च्छिम अपर्याप्ता मिलकर ३०३ भेद हुए ।

२२. प्र०—समुर्च्छिम के पर्याप्ते क्यों नही ?

उ०—ये जीव पर्याप्ते मे न आकर अपर्याप्ते मे ही मृत्यु हो जाते हैं इसीलिये उनके पर्याप्ते नही गिने ।

२३ प्र०— गर्मज और समुर्च्छिम मे क्या भेद है ?

उ०—स्त्री पुरुष के सयोग से जो उत्पन्न होते है वे गर्भज है, और इस सयोग से न उत्पन्न हो कर जो मनुष्यो के उच्चारादि मल मुत्र मे उत्पन्न होते है वे मनुष्य समुर्च्छिम गिने जाते है ।

२४. प्र०—समुर्च्छिम मनुष्य अपने को नजर आते है या नही ?

उ०—नही, वे इतने सूक्ष्म हैं कि चर्म चक्षुओ से नही देखे जाते है ।

२५ प्र०—तिर्यंच के मल मे कौनसे जीव उत्पन्न होते है ?

उ०—उसमे पचेन्द्रि जीव नही उपजते परन्तु वे इन्द्रियादिक जीव उत्पन्न होते है ।

२६. प्र०—मिट्टी तथा पानी के योग से कौन से जीव उत्पन्न होते है ?

उ०—वनस्पति के तथा बेइन्द्रि से पचेन्द्रि तक के जीव उत्पन्न होते है परन्तु वे समुर्च्छिम गिने जाते है।

२७. प्र०—कर्म भूमि किसे कहते है ?

उ०—काम धधे से निर्वाह करने वाले प्रदेश ।

२८. प्र०—अकर्म भूमि किसे कहते है ?

उ०— काम धधे बिना सिर्फ इच्छा बल से निर्वाह करने

वाले प्रदेश ।

२६ प्र०—कर्म भूमि के पद्रह क्षेत्र कौन से है ?

उ०—पाच भरत, पाच इभरत, पाच महाविदेह ।

३०. प्र०—तीस अकर्म भूमि के क्षेत्र कौन से है ?

उ०—पाच हेमवय, पाच एरणवय, पाच हरिवास, पाच रम्यकवास, पाच देवकुरु, पाच उत्तर कुरु ।

३१. प्र०—देवता के भेद सक्षेप मे कितने और विशेष मे कितने ?

उ०—सक्षेप मे १० और उत्कृष्ट १९८ ।

३२ प्र०—जघन्य और उत्कृष्ट कौन-कौन से हैं ?

उ०—(१) भवन पति १०, (२) परमाधामी १५, (३) वाणव्यतर १६, (४) जम्भिका १०, (५) ज्योतिषी १०, (६) किल्वीसी तीन (७) लोकातिक ९, (८) देवलोक १२, (९) ग्रेवेकी ९, (१०) अनुत्तर वैमानिक पाच सव मिलकर ९९ जाति के देव के पर्याप्ता और अपर्याप्ते मिलकर १९८ ।

३३ प्र०—सव जीव मूल स्वरूप मे समान है या छोटे वडे है ?

उ०—मूल स्वरूप मे समान है परन्तु कर्म रूपी उपाधि से वडे छोटे गिने जाते है ।

३४. प्र०—जीव का कोई घात करना चाहे तो हो सकता है या नही ?

उ०—नही, जीव अमर है । किसी दिन नही मरता है।

३५ प्र०—तव मर जाना क्या है ?

उ०—जीव का शरीर से पृथक होना ।

३६ प्र०—जीव नही मरता तो पाप कैसे लगता है ?

उ०—जीव की स्वीकृति की हुइ प्यारी से प्यारी काया

वस्तु को भिन्न कर दुःख उत्पन्न करने से पाप लगता है।

३७. प्र०—सब जीव समान है फिर एकन्द्रि को मारने से कम और मनुष्य को मारने से अधिक पाप क्यों लगता है ?

उ०—जो जीव अधिक उत्क्राति पाया हो, जगत मे विशेष उपयोगी हो जिसके पास अधिक आत्मिक ऋद्धि हो उसे मारने से उसकी ऋदि का वियोग कराने से अधिक पाप लगता है और जो जीव कम ऋदि-वाल, कम उपयोगी, और कम उत्क्रात होता है उस तरफ से कम पाप लगता है कम अधिक के प्रमाण से कम अधिक पाप लगता है।

३८. प्र०—जीव का उत्पन्न कर्त्ता कौन है ?

उ०—कर्त्ता कोई नही, अनादि है।

३९. प्र०—उत्पन्न किये बिना उनकी प्राप्ति कैसे होती है ?

उ०—किसी भी समय कोई वस्तु उत्पन्न हुई तो उसका विनाश भी किसी दिन होता है, परन्तु इस जीव का नाश नही होता यह अविनाशी है, इसलिये इसका उत्पन्न करने वाला कोई नही ऐसा सिद्ध होता है।

४०. प्र०—जिस तरह जड पदार्थ टूटता है फूटता है विखरता है और फिर एकत्र हो जाता है उसी तरह इस जीव की स्थिति होती है या नही।

४१. प्र०—जीव को कैसे पहचान सकते है ?

उ०—जो जीव अधिक बढती न पाये हैं वे जीव पृथ्वी पानी, अग्नि और वायु के शास्त्र वेत्ताओ के कथन

से मानना बाकी वनस्पति से सब जीव चलने फिरने सुख दुःख की इच्छाएं और संज्ञाओ से सहजही में पहचाने जाते हैं।

४२. प्र०—जीवो की पहिचान कर उनके साथ कैसा व्यवहार रखना चाहिए ?

उ०—अपने से हलकी जाति के सब जीवों पर दया रखना तथा अपने सामान के प्राणियों के साथ समान भाव रखना, और अधिक शक्ति वाले बडे उपकारी पुरुषों के साथ पूज्य भाव रखना।

४३. प्र०—अनन्त जीवो का स्वरूप किस रिति से जानते हैं ?

उ०—अपना जीव हैं वैसे ही बाकी सब जीव हैं इसलिये अपने जीव का स्वरूप बराबर समझ लेने से बाकी के सब जीवो का स्वरूप समझ आ जाता है।

४४. प्र०—सब जीवों के उत्पन्न होने की जीव योनि कितनी है ?

उ०—चौरासी लाख, ७ लाख पृथ्वी काय, ७ लाख अपकाय, ७ लाख तेऊकाय, ७ लाख वायुकाय, १० लाख प्रत्येक वनस्पति काय, १४ लाख साधारण वनस्पति काय, २ लाख बेंद्री, २ लाख तेंद्री, २ लाख चौरेंद्री, ४ लाख नारकी ४ लाख देवता, ४ लाख तिर्यंच, १४ लाख मनुष्य।

४५ प्र०—जीव योनि किसे कहते है ?

उ०—जीवो के उत्पन्न होने के भिन्न-भिन्न स्थान को।

४६ प्र०—जीव के समूह को क्या कहते है ?

उ०—जीवास्ति काय।

४७ प्र०—जीव का दूसरा नाम क्या है ?

उ०—प्राण, भूत, सत्व, विश्नु, आत्मा, प्रभृति अनेक

नामों से पहिचाना जाता है।

४८. प्र०—जीव कौन से भव से मोक्ष मे जा सकता हैं ?
उ०—मनुष्य भव से ।

४९. प्र० —कोई जीवित मनुष्य को दाग दे तो जले या नही ?
उ०—जीव दग्ध नही हो सकता, सिर्फ शरीर दग्ध होता है ।

५०. प्र०—जब शरीर जलने लगता है तब मैं जलता हूँ ऐसा क्यों कहता है ?
उ०—अनादि की अज्ञानता से निज स्वरूप को भूल कर और शरीरादि पर वस्तु मैं हू, वह मेरी है ऐसा मान, जड के विनाश से अपना विनाश हुआ समझ कर दु.खी होता है ।

५१. प्र०—जीव नही मरता तो शरीर मे से निकल कर कहां जाता होगा ?
उ०—जिन्दगी मे जैसे शुभा शुभ आचरण से जिस प्रकार शुभाशुभ कर्म का सचय करता है वैसे ही उत्पति योग्य स्थान मे जाकर उत्पन्न हो जाता है।

५२. प्र०—एक जीव के प्रदेश कितने है ?
उ०—असख्य ।

५३. प्र०—प्रदेश अलग-अलग हो जाते है या नही ?
उ०—नही, वह एक प्रदेश दूसरे प्रदेश से कभी भिन्न नही होता है ।

५४. प्र०—जीव अपना बडे से बडा बडा रूप धारण करे तो कितना हो सकता है ?
उ०—चौदह राज लोक (समस्त दुनियां मे) समावेश हो सके इतना बडा हो सकता है ।

५५. प्र०—जीव प्रत्येक कार्य स्वत: ही करता है या किसी के द्वारा करता है ?
उ०—सज्ञी जीव मन द्वारा और असज्ञी जीव मन जैसी शक्ति द्वारा इन्द्रियो से काम काज लेते हैं।

पाठ–३४

अजीव तत्व

१. प्र०—अजीव किसे कहते हैं ?
उ०—चैतन्य रहित जड लक्षण।

२. प्र०—इस के मुख्य भेद कितने है ?
उ०—दो, रूपी और अरूपी।

३. प्र०—रूपी अरूपी किसे कहते हैं ?
उ०—जिस द्रव्य में वर्ण, गध, रस स्पर्श हो वह रूपी और न हो वह अरूपी है।

४ प्र०—रूपी के मुख्य भेद कितने हैं ?
उ०—चार, पुद्गलास्तिकाय का स्कध, देश, प्रदेश और परमाणु।

५ प्र०—पुद्गलास्तिकाय का अर्थ क्या ?
उ०—(पूडन, गलन) मिलना, भिन्न होना जैसा जिसका स्वभाव है वह पुद्गल और उसका समूल है पुद्गलास्तिकाय।

६ प्र०—स्कध, देश, प्रदेश, और परमाणु किसे कहते हैं ?

उ०—जो द्रव्य पूर्व समग्र हो वह स्कंध कहलाता है, उसमे के किसी भाग की कल्पना करना देश, उसका परम सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग, प्रदेश, वह सूक्ष्म प्रदेश मुख्य द्रव्य से भिन्न हो जाय वह परमाणु कहलाता है ।

७. प्र०—वह परमाणु कितना सूक्ष्म होता है ? इसका विशेष स्पष्टी करण करो ?

उ०—अनंत सूक्ष्म परमाणु के मिलने से एक बादर परमाणु, अनत बादर परमाणु के मिलने से एक उष्ण परमाणु, आठ उष्ण परमाणु से एक शीत परमाणु, आठ शीत परमाणु से एक उर्धरेणु, आठ उर्धरेणु से एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणु से एक रथरेणु, आठ रथरेणु इतना उत्तरकुरु देव-कुरु, के मनुष्य का एक बाल होता है। वैसे आठ बाल=एक महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य के सिर का बाल, वैसे आठ बाल=भारत क्षेत्र के मनुष्य के सिर का एक बाल, वैसे आठ बाल=एक लीक आठ लीक=एक जूं, आठ जू=एक जीव का मध्य भाग। आठ जीव के मध्य भाग=एक अंगुल, बारह अंगुल=एक बेंत (बालिश्त), दो बालिस्त=१ हाथ, दो हाथ=एक कुक्षी, दो कुक्षी=एक धनुष, दो हजार धनुष=एक गाऊ, चार गाऊ=एक योजन ।

८. प्र०—अरूपी के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकास्तिकाय इन तीनो के स्कध देश प्रदेश यो नो और दसवा काल

यो दस भेद हुए ।

९. प्र०—धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय अर्थात् क्या ?

उ०—जीव और पुद्गल के चलने मे सहायक हो । जिस प्रकार मछली पानी मे तैर सकती है। जिस तरह उसे पानी मददगार है वैसे ही धर्मास्तिकाय के विना कोई भी व्यक्ति गति नही कर सकता और स्थिर रहने मे जो मददगार हैं वह अधर्मास्तिकाय का गुण है ।

१०. प्र०—काल के नन्हे से नन्हे भाग को क्या कहते हैं ?

उ०—समय ।

११. प्र०—समय कितना सूक्ष्म होता है वर्णन करो ?

उ०—आख मीचकर खोलने मे असख्याते समय व्यतीत हो जाते है उस असख्य समय को एक आवलिका कहते हैं। ऐसी २५६ आवलिका मे निगोद वाले जीव का एक भाव हो जाता है। ऐसे सात श्वासोश्वास से एक स्तोक होता है और सात स्तोक के वरावर एक लव ऐसे सततर लव का एक मुहूर्त होता है।

१२. प्र०—एक मुहूर्त मे कितनी आवलिका होती है ?

उ०—१,६७,७७,२१६ आवलिका ।

१३ प्र०—एक मुहूर्त मे निगोद वाले जीव के कितने भय होते है ?

उ०—६५,५३६ भव ।

१४. प्र०—एक अहोरात्रि मे कितने मुहूर्त होते है ?

उ०—३० मुहूत ।

१५. प्र०—एक पुद्गल परावर्तन का समय कब होता है ?

ऊ०—पद्रह अहोरात्रि=एक पक्ष। दो पक्ष=एक माह। बारह माह=एक वर्ष। पांच वर्ष=एक युग। ८४ लाख वर्ष=एक पूर्वांग। ८४ लाख पूर्वांग=एक पूर्व। असख्य पूर्व=एक पल्योपम। दस क्रोडा क्रोडी पल्योपम=एक सागरोपम। दस क्रोडा क्रोडी सागरोपम=एक अवसर्पिणी। ये दो मिलकर बीस क्रोडा क्रोडी सागरोपम का एक काल चक्र होता है। ऐसे अनन्त काल चक्र हो तो एक पुद्गल परवर्तन होता है।

१६. प्र०—अजिव के १४ भेद कौनसे हैं उनके विस्तार से कितने भेद है?

उ०—अरुपी के तीस और रूपी के पाच सौ तीस कुल ५६० भेद।

१७. प्र०—३० भेद अरूपी अजीव के किस प्रकार होते हैं? समझाओ।

उ०—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकात, आकस्तिकाय, (१) द्रव्य से एक क्षेत्र से लोक के अनुसार काल से अनादि अनन्त भाव से, वर्ण, गध, रस, स्पर्श मूर्ति रहित, (५) गुण से धर्मास्तिकाय चलने मे सहायता करने वाली अधर्मास्तिकाय, स्थिर रहने मे मदद देने वाली और अकास्तिकाय अवगाहन अर्थात् मार्ग देने वाली ये पद्रह भेद हुए। सोलवा काल द्रव्य से अनेक (१७) क्षेत्र से ढाई द्वीप के अनुसार (१८) काल से आदि अनन्त (१९) भाव से वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श रहित (२०) गुण से वर्तन लक्षण नये को पुराना करना और पुराने

को निकाम का कर देना ये बीस और जो दस अरूपी के पहिले कहे हैं मिल कर तीस भेद अजीव अरूपी के हुए।

१८. प्र०—रूपी अजीव के पाच सौ तीस भेद कौन से है समझाओ ?

उ०—प्रत्येक रूपी द्रव्य मे मुख्य गुण पच्चीस हैं। पाच वर्ण (काला, लाल, हरा, पीला, सफेद) दो गध (सुगध, दुर्गंध) पाच रस (तीक्ष्ण, कटु, कसाएला, खट्टा, मीठा) पाच सठाण (परिमडल, वट, त्रस, चौरस, आयत) आठ स्पर्श (खरदरा, कोमल, भारी, हलका, शीतल, उष्ण, स्नग्न्ध, रूक्ष) ये पच्चीस मुख्य भेद है, उनमे के एक एक वर्ण के बीस भेद होते है दो गध पाच रस आठ स्पर्श पाच सठाण। ऐसे पाच पाच वर्ण के सौ भेद हुए। एक एक गध के तेबीस भेद होते हैं (पाच वर्ण, पाच रस, आठ स्पर्श, पाच सठाण। ऐसे दोनो गध के ४६ भेद हुए। एक एक रस द्रव्य के बीस भेद होते है। पाच वर्ण' दो गध, पाच सठाण, आठ स्पश) ऐसे पाच रस के सौ भेद हुए। हर एक द्रव्य के सठाण के बीस भेद हैं पाच वर्ण, दो गध, पाच रस, आठ स्पर्श) यों पाच सठाण के सौ भेद हुए। हर एक द्रव्य के स्पर्श के तेईस भेद है (पाच वर्ण, पाच रस, दो गध, छ स्पश पाच सठाण) पहिले खरदरा और कोमल वर्जं देना फिर दो दो स्पर्श छोडते जाना आठ स्पर्श के १=४ भेद हुए वे सब मिल कर

५६० भेद अजीव रूपी के हुए ।

पाठ-३५

पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष

१. प्र०—पुन्य तत्व किसे कहते है ?
उ०—जिसके फल भोगते हुए मिष्ट हों और जिससे इच्छित वस्तु प्राप्त हो ।

२. प्र०—पुन्य कितने प्रकार से सचित होता है ?
उ०—नौ, अन्न, पानी, जगह, वस्त्र और इनके सिवाय कौन से भी योग्य साधन वे पाच और मन, वचन, काया को शुभ प्रवृत्ति जौर ९ वी नम्रता ।

३. प्र०—नव प्रकार के सचित पुण्य का फल कितनी प्रकार से भोगते है ।
उ०—बयालिस प्रकार से ।

४. प्र०—बयालीस प्रकार का सार समझाओ ?
उ०—गति, जाति, शरीर, इन्द्री, उपांग, सघयण, (दृढता) सठाण, वण, गध, रस, स्पर्श, बल, तेज, यश, सौभाग्य, सौन्दर्य, वैभव, कठ, लालित्य, इज्जत, शांति, शक्ति, प्रताप, इत्यादि उच्च और सुख दायक प्राप्त हों ।

५. प्र०—पाप किसे कहते है ?

उ०—जिसके फल भोगते हुए अनिष्ट और कटु हों।

६ प्र०—पाप कितनी प्रकार से सचित होता है ?

उ०—अठारह, प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया लोभ, राग, द्वेष, क्लेश, अभ्याख्यान, मैशुन्य, परपरिवाद, अरति, रति, माया, मोसा, मिथ्यात्व, दर्शन, शल्य।

७ प्र०—पाप के फल कितने प्रकार से भोगे जाते हैं ?

उ०—८२ प्रकार से।

८ प्र०—पाप के ८२ प्रकार कौन कौन से है ?

उ०—गति, जाति, इद्रिया, उपाग, सघण, सठाण, वर्ण, गध, रस, स्पर्श, अत्यन्त, हलके, खराब और अमनोग्य होते हैं, इनके सिवाय निर्बल. निस्तेज, अपयश, दुर्भाग्य, अस्थिर, दुस्वर, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, पाच अतराय (दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, की अतराय) पाच प्रकार की निद्रा (निद्रा निद्रा, प्रचला, प्रचला—प्रचला थिणद्वी) से लीप्त हो और चारित्र मोहनी की पच्चीस प्रकृतियो ढकी रहे।

९. प्र०—आश्रव किसे कहते है ?

उ०—आत्म रूप तालाब मे इद्रियादिक नालो से कर्म पाप रूप पानी आ प्रवाह हो।

१०. प्र०—आश्रव के कितने भेद हैं ?

उ०—सामान्य २० भेद है, मिथ्यात्व, अवृत, प्रमाद, कषाय, अशुभयोग, प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, पाच इन्द्रिया तथा मन वचन काया को वश न रखना हर एक कार्य मे अवि-

वेक चपलता करना ।

११. प्र०—सवर किसे कहते है ?

उ०—आत्मरूपी तालाब मे पाप रूप जक के प्रवाह को आता हुआ व्रत प्रत्याख्यानादि छिपा रूप द्वार से रोकले उसे सवर कहते है ।

१२. प्र०—संवर के कितने भेद है ?

उ०—सामान्य बीस, समकित, व्रत, प्रत्याख्यान, अप्रमाद, अकषाय, शुभयोग, दया, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह, पाच इन्द्रिया तथा मन, वचन, काया इन आठो को वश करना हर एक कार्य मे विवेक, अचपलता के बीस भेद हुए ।

१३. प्र०—निर्जरा किसे कहते है ?

उ०—आत्मा के प्रदेश से तपश्चर्या द्वारा कर्म अश से कर्म की निर्जरा होना अर्थात् जलकर दूर होना उसे निर्जरा कहते है ।

१४. प्र०—निर्जरा के कितने भेद हैं ?

उ०—दो, सकाम, अकाम ।

१५. प्र०—सकाम किसे कहते है ?

उ०—इच्छा पूर्व समझकर कर्म से दूर होना ।

१६. प्र०—अकाम किसे कहते है ?

उ०—इच्छा बिना, तिर्यंच की तरह कष्ट सहन करते कर्म की निर्जरा होना ।

१७. प्र०—बध तत्व किसे कहते कहते है ?

उ०—आत्मा प्रदेश और कर्म पुद्गल के दलक्षीर नीर की तरह तथा लोह, अग्नी की तरह एकत्र होना ।

१८. प्र०—बध के कितने भेद है ?

उ०—चार, प्रकृति बन्ध, स्थिति बध, अनुभाग बन्ध, प्रदेश बध ।

१९. प्र०—प्रकृति बध किसे कहते हैं ?

उ०—जो कर्म बाधे जाते हैं उनका फल सुख या दु:ख प्राप्त होने का स्वभाव या परिणाम ।

२० प्र०—स्थिति बध किसे कहते हे ?

उ०—जो कर्म जितने समय मे सचित हुआ है उतने ही समय तक भोगना उसे स्थिति बध कहते हैं।

२१. प्र०—अनुभाग बध किसे कहते हे ?

उ०—वह कर्म तीव्र या मद जैसो इच्छा से सचित हुआ हो ।

२२. प्र०—प्रदेश बध किसे कहते है ?

उ०—उस कर्म पुद्गल के जितने दल सचिल हुए हो उसे प्रदेश बन्ध कहते है ।

२३ प्र०—मोक्ष किसे कहते है ?

उ०—सर्व आत्मा के प्रदेश से सकल बधन का छूटना सकल दोषादि से मुक्त होना, सफल कार्य की सिद्धि होना उसे मोक्ष कहते हैं ।

२४. प्र०—मोक्ष जाने के कितने साधन हैं ?

उ०—चार, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप ।

२५ प्र०—मोक्ष जाने के कितने बोलो को अत्यन्त आवश्यकता है ?

उ०—मनुष्यत्व, वज्र, ऋष भनाराच, सघयण, परम शुल्क ध्यान, क्षायक सम्यक्त्व यथाख्यात, चारित्र, परम शुल्क लेश्या, पडित, वोर्य, केवलज्ञान, केवलदर्शन ।

पाठ–३६

नव तत्व सम्बन्धी विशेष प्रश्नोत्तर

१ प्र०—जीव शरीर के कौन से भाग मे रहता है ?
उ०—जीव शरीर के समस्त भाग मे जैसे तिल मे तेल और दूध मे घृत है।

२. प्र०—प्रत्येक जीव समान प्रदेश गण शक्ति ज्ञान और स्वभाव वाले होते है या भिन्न भिन्न ।
उ०—प्रत्येक जीव मूल स्वभाव मे तो सब तरह से समान होते है परन्तु उपाधि (कर्म) के कारण वक्ति ज्ञान गुण और स्वभाव मे एक दूसरे से कम अधिक देखे जाते है।

३ प्र०—जीव को कर्म कब से लगे है ?
उ०—अनादि काल से जीव और कर्म साथ ही है।

४. प्र०—स्थूल देह से जव जीव भिन्न होता है तब उसके साथ क्या-क्या रहता है ?
उ०—तेजस और कार्मासा ये दो शरीर और शुभा शुभ कर्म सामग्री।

५. प्र०—मुक्त हुए जीव को कर्म लगे या नही ?
उ०—मुक्त जीवो को कर्म नही लगते।

६. प्र०—वर्म किसको लगते है जीव को या कर्म को ?
उ०—कर्म सहित जीव है और उसे ही कर्म लगते है।

७ प्र०—अनादि काल से रहने वाली कितनी वस्तुए है ?
उ०—अनत जीव परमेश्वर और जगत (पुद्गल समूह)।

८. प्र०—इन तीनो में से किसी का किसी समय नाश

होता है या नही ?

उ०—नही, इन तीनो में से किसी का नाश नही होता।

९. प्र०—जीव मात्र सुख चाहते हैं वह सुख कहा है ?

उ०—सुख जीव के पास ही है ।

१०. प्र०—अपने ही पास हो तो फिर अन्य जगह क्यों ढु ढता फिरता है ?

उ०—अपनी अज्ञानता के कारण ।

११. प्र०—जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र ?

उ०—जब तक कर्म से विमुक्त न हो वहा तक परतन्त्र और विमुक्त होने पर जीव स्वतन्त्र है।

१२. प्र०—सुख कितने प्रकार का है ?

उ०—दो, आत्मिक सुख और पौद्गलिक सुख ।

१३ प्र०—पौद्गलिक सुख के कितने भेद हैं ?

उ०—दो, शारीरिक, मानसिक ।

१४. प्र०—दु ख के कितने भेद है ?

उ०—दो, शारीरिक, मानसिक ।

१५ प्र०—एक जीव के पास कर्म रूपी कितने परमाणु पुद्गल होते हैं ?

उ०—अनन्त ।

१६. प्र०—जिस समय कर्म बन्धे या छूटें तब एक समय में कितने परमाणु पुद्गल होते हैं ?

उ०—अनन्त ।

१७. प्र०—जीव जब स्थूल शरीर से निकल कर मोक्ष में जाता है तब उसकी गति टेढी तीर्छी रहती है या सीधी ?

उ०—सीधी तनिक भी टेढी नही ।

१८. प्र०— किसी जीव को मजबूत काच या लोहे की कोठी मे बन्द कर दे तो भी जीव निकल सकेगा ?

उ०—हा, स्थूल शरीर को छोड कर उसका निकलना सरल है।

१६. प्र०— दूसरी गति मे जाते हुए जीव को कोई रोकने वाला या ठहराने वाला कोई स्थान मध्य मे आता है या नही ?

उ०—नही जीव और उसके साथ रही हुई उपाधि सब इतनी अधिक सूक्ष्म रहती है कि उसे दृढ से दृढ वज्र की भीत से भी निकल जाने मे कोई कठि-नाई नही होती है।

२०. प्र०— एक परमाणु मे वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श कितने होते है ?

उ०—चाहे जिस जाति का एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस और दो स्पर्श रहते है।

२१. प्र०—शुभाशुभ कर्मों मे वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श कितने होते है ?

उ०—कर्मों के समूह मे पाच वर्ण, दो गन्ध पाँच रस और चार स्पर्श रहते है।

२२. प्र०—आठ स्पर्श मे से चार स्पर्श कौन से नही होते ?

उ०—भारी, हलका, दृढ और कोमल ये चार नही होते और बाकी के चार होते है।

२३. प्र०— ऐसे चार स्पर्श वाले पुद्गल दूसरे कौन से है ?

उ०—शुभाशुभ कर्म, मन, वचन और कार्मण शरीर के पुद्गल चो स्पर्शी (चार स्पर्श वाले) होते है।

२४ प्र०—जीव जब कर्म बधन करता है तब पुद्गल कहा

से ग्रहण करता है ?

उ०—अपने अत्यन्त समीप रहे हुए पुद्गलो को ग्रहण करता है ।

२५ प्र०—किसी भी रग का एक परमाणु हो उस मे कुछ मिले सिवाय फेरफार हो सके या नही ?

उ०—हा, उस की वृद्धि, हानि, होती है वैसे ही वर्ण, गध, रस, बदलते भी हैं ।

२६. प्र०—परमाणु जैसे सूक्ष्म द्रव्य मे कुछ मिला या निकल गया, हानि हुई या वृद्धि, स्वरूप बदछना कैसे बन सकता है ?

उ०—परमाणु का ऐसा ही स्वभाव है ।

२७. प्र०—पानी के परमाणु पृथ्वी के रूप मे और पृथ्वी के परमाणु पानी के रूप मे होते हैं या नही ?

उ०—हा, पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति इन सब के परमाणु एक दूमरे रूप मे बदलते है परन्तु जल के या पृथ्वी के परमाणु जल या पृथ्वी रूप में ही रहे ऐसा नही हो सकता ।

२८. प्र०—पृथ्व्यादि परमाणु जल रूप और जल के पृथ्व्यादि रूप में हो जाते है इसे दृष्टात देकर समझाओ ?

उ०—आक्सीजन और हैड्रोजन नामक दो वायु एकत्र करने से उन का पानी हो जाता है पानी वृक्ष के मूल मे खीचने से मूल द्वारा वृक्ष मे प्रवेश हो वृक्ष रूप हो जाता है, वृक्ष सुख कर जीर्ण हो जाता है तब पृथ्वी मे मिल जाता है उसी पृथ्वी के परमाणु अन्य प्रयोग होने पर अन्य रूप मे हो जाते हैं ।

२६. प्र०—एव जाति के वर्ण, गध, रस के परमाणु पुद्गल अन्य वर्ण गध रस के रूप मे हो जाते है, दृष्टांत से समझाओ ?

उ०—कालेरग की मिट्टी के प्रदेश पर नीम, गुलाब जुई, प्रभृति वृक्ष के बीज अपने स्वरूप को प्रकट करने वास्ते अपने से ही वर्ण, गध, रस के परमाणु को खीचेगा और गुलाब, व जुई अपने अनुकूल परमाणुओं को ही खीचेंगे और उस काली मिट्टी के परमाणुओ को अपने अपने रूप मे परिणित करेंगे, काली दिखती हुई मिट्टी को गुलाब का बीज, गुलाब के रूप मे बदल सकता है।

३०. प्र०—वड का जीर्ण बीज जमीन मे रोपने से उसे वड वृक्ष के रूप मे कौन बनाता है ?

उ०—उस वड के बीज मे ऐसी शक्ति होती है कि उसी मिट्टी, पानी, प्रकाश, गर्मी ऐसी वस्तुओ का सुयोग प्राप्त होने पर वह विकास पाता है और समीप के पुद्गलो को खीच अपने रूप मे परिणित कर वड वृक्ष के रूप मे बनाता है। इसी तरह प्रत्येक वृक्ष अनुकूल सयोग प्राप्त होने पर उत्पन्न होकर बढते हैं और प्रतिकूल सयोग पा नाश होजा ते है।

३१. प्र०—धर्म, पुण्य, पाप इनमे क्या अन्तर है ?

उ०—जीव के साथ बधने वाले शुभ कर्म पुन्य और अशुभ कर्म पाप तथा जीव से कर्म की निर्जरा होना (छूट जाना) धर्म गिना जाता है।

३२. प्र०—किसी जीव के पास सिर्फ पाप कर्म या सिर्फ

पुन्य कर्म ही हो सकते हैं या नही ?

उ०—नही, अधिक या कम परन्तु पाप कर्म और पुन्य कर्म, दोनो रहते है ।

पाठ–३७

गुण स्थानक

१ प्र०—जीव के गुण की एक-एक से उन्नत सीढियो के स्थान को क्या कहते हैं ?

उ०—गुण स्थानक ।

२ प्र०—गुण स्थान का विशेषार्थ दृष्टात देकर समझाओ ?

उ०—जैसे किसी खास स्थान पर जाने मे रास्ते मे स्थान या स्टेशन पर से होकर जाना होता है तथा किसी मजिल पर जाना हो तो सोपान की पक्तियो पर से उसी मजिल पर जाना पडता है उसी तरह जीव को मुक्ति रूप अचल स्थान पर पहुचने मे जो-जो गुण स्थानक पसार करने पडते है वे गुण-स्थान कहलाते है ।

३. प्र०—गुण स्थानक कितने और कौन से है ?

उ०—चौदह, १ मिथ्यात्व, २ साश्वादान, ३ मिश्र, ४. अविरति सम्यक दृष्टि, ५ देशविरति, ६ प्रमत सजति, ७. अप्रमत सजति ८ निवृत्ति वादर, ९. अनिवृति वादर, १० सूक्ष्म समपराय, ११. उप-शात मोह, १२ क्षीण मोह, १३. सयोग केवली,

१४ अयोगी केवली ।

४. प्र०—मिथ्यात्व अर्थात् क्या ?

उ०—दृष्टि का विपर्यास (खोटापन) ।

५. प्र०—मिथ्यात्व को दृष्टात से अधिक स्फुट करके समझाओ ।

उ०—जैसे धतुरे के बीज खाने वाला सफेद वस्तु को पीली देखता है वैसे ही मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय से प्राणी जगत का वास्तविक स्वरूप आत्मा का हित, सुख का मार्ग, शाति का आगार नही देख सकता सद्धर्म सदगुरु, सत्य देव, मिथ्यात्व के दबाव से नही पहचान सकता ओर देह को ही आत्मा समझता है ।

६. प्र०—जीव को मिथ्यात्व कब से लगा होगा ?

उ०—अनादि काल से जीव मिथ्यात्व गुणस्थानक मे हुआ है ।

७. प्र०—मिथ्यात्व मे ऐसा कौनसा गुण है जिससे मिथ्यात्व गुण स्थानक कहलाता है ।

उ०—मिथ्यात्व मे रहने से गुप्त सर्व ज्ञान मे से अक्षर के अनत वे भाग जितना ज्ञान प्रकट रहता है इसलिये उसे गुण स्थानक कहते हैं ।

८. प्र०—जीव को इतना भी प्रकट ज्ञान न रहे तो ?

उ०—ज्ञान का गुण तनिक प्रकट न हो तो जीव का नाश हो अजीव हो जाय, परन्तु ऐसा कभी नही हो सकता ।

९. प्र०—मिथ्यात्व मुख्य कितने प्रकार का है ?

उ०—पाच, अभिग्राहिक, अनभिग्राहिक, अभिनिवेसिक,

सशयिक, अणाभोगिक ।

१०. प्र०—अभिग्रहिक अर्थात् क्या ?

उ०—प्रत्येक असत्य (मिथ्या बात को) को विना विचार ग्रहण कर रखने की मूढता ।

११ प्र०—अनभिग्रहिम अर्थात् क्या ?

उ०—किसी बात का निर्णय किये विना साच, झूठ, की स्वीकृति करे ।

१२. प्र०—अभिनिवेसिक अर्थात् क्या ?

उ०—समझ बूझ कर अपना दुराग्रह रक्खे छोड़े नहीं ।

१३ प्र०—सशयिक अर्थात् क्या ?

उ०—प्रत्येक सच बात मे भी शका रक्खे ।

१४ प्र०—अणाभोगिक अर्थात् क्या ?

उ०—वे भानावस्था, जिस में किसी बात की कुछ खबर न रहे ।

१५ प्र०—इन पाचो मिथ्यात्व में से अविक खराव मिथ्यात्व कौनसा और कुछ ठीक कौन सा ?

उ०—अभिनिवेसिक अधिक खराव है क्योकि जान बूझ कर खाली दुराग्रह करता है इसलिये यह दुसाध्य बीमारी के सदृश है और अनभिग्राहिक ठीक है कारण कि उसमे नम्रता के गुण है और खोटे के साथ अच्छे को भी स्वीकारता है इससे उसमें मार्गानुसारी पना प्राप्त होना है ।

१६ प्र०—मार्गानुसारी अर्थात् क्या ?

उ०—अनादि काल से ससार मे परिभ्रमण करते हुए जीव को मोक्ष के मार्ग तरफ लगना ।

१७. प्र०—इन पाचो के सिवाय मिथ्यात्व का समावेश कौन

से मिथ्यात्व मे होता है ?

उ०—अभिग्रहिक मे ।

१८ प्र०—दूसरे गुण स्थानक का नाम क्या ?

उ०—साश्वादान सम्यक्त्व ।

१९ प्र०—साश्वादान का अर्थ क्या ?

उ०—आश्वादान सहित वह साश्वादान ।

२० प्र०—आश्वादान का अर्थ क्या ?

उ०—ऊपर के गुण स्थानक को त्यागते ही इस गुण स्थान मे जीव छै आवलिका जितना समय रहता है अर्थात् ऊपर के स्थान से नीचे के स्थान में आते हुए मध्य के समय मे पूर्व के गुण का स्वाद रहता है वह ।

२१. प्र०—साश्वादान एक भव मे कितने समय आता है ?

उ०—पाच वक्त ।

२२. प्र०—एक समय जिन्हे साश्वादान आता है उसका फल क्या ?

उ०—कृष्ण पक्षी था यह शुल्क पक्षी हुआ, असख्य ऋण मिट कर स्वल्प ऋण रहता है वैसा फल होता है।

२३. प्र०—साश्वादान सम्यक्त्वी उत्कृष्ट कितने समय मे मोक्ष जाता है ?

उ०—अर्द्ध पुद्गल परावर्तन मे आखिर मोक्ष जाता है।

२४. प्र०—पुद्गल परावर्तन का समय कितना ?

उ०—अनती उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी जिसमे समाजाय।

२५. प्र०—तीसरे गुणस्थानक का नाम क्या है ?

उ०—मिश्र गुणस्थानक ।

२६. प्र०—मिश्र का अर्थ क्या ?

उ०—सम्यक्त्व और मिथ्यात्व की मिश्रता ।

२७. प्र०—मिश्रपने को दृष्टात से समझाओ ?

उ०—जिस तरह श्री खड मे मिठास और खटास दोनो साथ-साथ रहते है सध्या समय रात, दिन का मिश्र पना रहता है उसी तरह मध्यम भाव उत्पन्न होता है उसे मिश्र गुण स्थानक कहते हैं ।

२८ प्र०—उसकी मान्यता कैसी होती है ?

उ०—सत्य और असत्य दोनो मार्ग की ओर रूचि रखता हो, एक मे भी निश्चित न हो परन्तु शका शील हो ।

२९ प्र०—मिश्र गुणस्थानक की स्थिति कितनी है ?

उ०—अतर मुहुर्त रह कर या तो ऊपर चढता है या नीचे गिरता है ।

३०. प्र०—चौथा गुण स्थानक का नाम क्या है ?

उ०—अविरति सम्यक्त्व ।

३१ प्र०—अविरति सम्यक्त्व का अथ क्या ?

उ०—असत्य मान्यता को त्याग सत्य मानने की श्रद्धा हो परन्तु व्रत को न आदर सके ।

३२ प्र०—सम्यक्त्व के कितने भेद है ?

उ०—पाच क्षायिक क्षयोपशमिक, औपशमिक, साश्वादान, और वेदक ।

३३ प्र०—क्षायिक, क्षयोपशमिक और औपशमिक का अर्थ क्या ?

उ०—मोहनीय कर्म की मूल दो प्रकृतिया हैं । चारित्र मोहनीय ११ दर्शन मोहनीय । इनमे से चारित्र मोहनीय की २५ प्रकृतिया है और दर्शन मोहनीय की तीन, १ समकित मोहनीय, २ मिश्र

मोहनीय, ३ मिथ्यात्व मोहनीय । ये तीन और दर्शन मोहनीय की २५ कुल २८ प्रकृति । दर्शन त्रिक और चार अनतानुबधी क्रोध, माना, माया, लोभ इन सात प्रकृति का क्षय करने से क्षायिक समकित गिनी जाती है इनका उपशम करने से उपशम समकित और कुछ क्षय और कुछ उपशम करने से क्षयोपशमिक समकित गिनी जाती है ।

३४. प्र०—अनतानु बधी कषाय अर्थात् क्या ?
उ०—अनत है अनुबध जिससे अर्थात् जो तीव्र कषाय के सेवन से अनत कर्म के पुद्गलो का बध अनुक्रम से पडता है ।

३५. प्र०—समकित मोहनीय का थोडे मे शब्दार्थ कहो ?
उ०—समकित होते भी मोहनीय की अमुक प्रकृति द्वारा खीजना पडे ।

३६. प्र०—मिथ्यात्व मोहनीय अर्थात् क्या ?
उ०—मिथ्यात्व मे गिरना पडे वह ।

३७. प्र०—मिश्र मोहनीय अर्थात् क्या ?
उ०—कुछ समकित और कुछ मिथ्यात्व इन दोनो के मिश्र मे रहना पडे वह ।

३८. प्र०—पाचवें गुण स्थानक का नाम क्या है ? और उसका अर्थ क्या ?
उ०—समकित सहित शक्ति अनुसार व्रतो को अगीकार करना अर्थात् पाप को देश से तजना यह देश विरति नामक पाचवा गुण स्थान गिना जाता है ।

३९. प्र०—पाचवे गुण स्थान मे कितनी प्रकृतियो का क्षयोपशम होता है ?

उ०—सात, प्रकृति पहले कही हुई वे और अप्रत्या
ख्यान क्रोध, मान, माया और लोभ इन ग्यारहो
का क्षयोपशम होता है।

४० प्र०—पाचवें गुण स्थान वाला जीव कितने भव में
मोक्ष जाता है ?

उ०—जघन्य तीसरे भव और उत्कृष्ट पन्द्रहवे भव मे
मोक्ष जाता है।

४१. प्र०—देश विरति में खास कितने और कौन से गुण
प्रकट होते हैं ?

उ०—इकवीस अल्प इच्छा, अल्पारम्भ, अल्परिग्रह, सुशील
धर्म वृत्ति, पाप भारू नीति निपुण, एकात आर्य,
विवेक दृष्टि, न्यायावलम्बी ज्ञान आराधक, अक्षुक,
निष्कपट, कोमल लोकप्रिय, सौम्य, परगजु विनित,
कृतज्ञ, सरल स्वभावी और सत्यानुप्रेक्षी।

४२ प्र०—ऐसे इकवीस गुण वाले श्रावक के कितने व्रत हैं ?

उ०—बाहर, पाच अणुव्रत, तीन गुण व्रत, चार
शिक्षा व्रत।

४३ प्र०—श्रावकपना एक भव में मन से कितने समय
आता है ?

उ०—प्रत्येक (नव) हजार समय आता है।

४४ प्र०—छटवें, सातवे, गुणस्थानक के नाम क्या ?

उ०—प्रमत सयति और अप्रमत सयति।

४५. प्र०—प्रमत और अप्रमत सयति का अर्थ क्या ?

उ०—ये दोनो सर्व विरति होते हुए भी संयम में थोडा
बहुत प्रमाद सेवने वाले होते हैं वे प्रमत सयति,
और सयम मे प्रमाद सेवने हारे न हो उन्हें

अप्रमत संयति कहते हैं ।

४६. प्र०—छट्टे और सातवें गुण स्थानक में कितनी प्रकृतियो का क्षयोपशम होता है ?

उ०—छट्टे गुण स्थान में ग्यारह प्रकृति पहिले कही वे और प्रत्याख्यान के क्रोध, मान, माया, लोभ यो पद्रह प्रकृति का क्षयोपशम होता है और सातवें गुण स्थान में सज्वलन जहां जहा सजत्य लिखा हो वहां वहा सज्वलन लिखना के क्रोध सहित सोलह प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ।

४७. प्र०—छट्ठे, सातवें गुणस्थान में कौन होता है ?

उ०—पांच महाव्रत धारी साधु पुरुष ।

४८. प्र०—साधुपना एक भव में मन से कितने समय आता है ?

उ०—उत्कृष्ट नव सौ वार ।

४९. प्र०—आठवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमें कितनी प्रकृतियो का क्षयोपशम होता है ?

उ०—पहिले कही हुई सोलह प्रकृति और सजल का मान मिलकर १७ प्रकृति का क्षयोपशम होता है उसको निवृति बादर गुणस्थान कहते है ।

५० प्र०—उस गुणस्थानक की कैसी स्थिति होती है ?

उ०—शुक्ल ध्यान प्रकट होता है, सहज समाधि रहती है, केवल्यज्ञान रूप सूर्य के उदय के पूर्व ही अनुभव ज्ञान रूप अरुणोदय प्रकट होता है ।

५१. प्र०—इस गुणस्थानक में हर एक जीव जाने वाला अन्त में केवल्यज्ञान की सीमा तक पहुच

सकता है ?

उ०—इस जगह उपशम और क्षपक ऐसी दो विचार की श्रेणिया हैं। इसमें से जो उपशम श्रेणी पर चढता है वह ग्यारहवें गुणस्थान में जाकर पतित हो जाता है, और क्षपक श्रेणी में चढता है वह कर्म के दल को तोडते तोडते समय समय पर अनत गुनी विशुद्धि करते तेरहवें गुणस्थान मे जा केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है।

५२. प्र०—इस गुणस्थानक का दूसरा नाम क्या है ?

उ०—अपूर्व करण (पहिले प्राप्त नही हुआ) गुण-स्थानक।

५३. प्र०—इस गुण स्थान वाला कितने भव करके मोक्ष जाता है ?

उ०—जघन्य इसी भव में, और उत्कृष्ट तीसरे भव में।

५४ प्र०—निवृति वादर का अर्थ क्या ?

उ०—वादर कषाय से निर्वतित।

५५. प्र०—नवमे गुणस्थानक का नाम क्या ? और इसमें कितनी प्रकृतियो का क्षयोपशम होता है ?

उ०—सतरह, पहिले कही वे, और सजल की माया, स्त्री वेद पुरुष वेद, नपुसक वेद यो इकवीस प्रकृति का क्षयोपशम करता है इसको अनिवृति वादर गुणस्थानक कहते हैं।

५६. प्र०—अनिवृति वादर का अर्थ क्या ?

उ०—सर्वथा क्रिया द्वारा निवृति नही परन्तु वादर सपराय क्रिया रही।

५७. प्र०—दसवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमें

कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ।

उ०—इकवीस, पहिले कही वे और हास्य, रति, अरति भय, शोक जुगुप्सा इन सत्ताईस प्रकृतियो का क्षयोपशम करता है उसे सूक्ष्म सपराय नामक दसवां गुण स्थानक कहते है ।

५८. प्र०—सूक्ष्म सपरात अर्थात् क्या ?

उ०—सूक्ष्म अर्थात् थोडी सम्पराय क्रिया अर्थात् छद-मस्त की क्रिया रही है उसे सूक्ष्म सपराय कहते हैं ।

५९. प्र०—ग्यारहवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमे कितनी प्रकृतियो का क्षयोपगम होता है ?

उ०—सत्तावीस, पहिले कही वे और संजल का लोभ ऐसी अट्ठाइस प्रकृति का उपशम करता है उसे उपशांत मोह नामक ग्यारहवा गुणस्थान कहते है ।

६०. प्र०—उपशात मोह का अर्थ क्या ?

उ०—उपशांत अर्थात् जिसने मोह सर्वथा दबा दिया है अर्थात् पानी के नीचे मेल स्थित रहता है, परन्तु पानी निर्मल दृष्टिगत होता है, उसी तरह यहां पर मोहनीय कर्म के के उपशम होने से अध्यव-साय निर्मल होते हैं ।

६१. प्र०—इस गुणस्थानक का परिणाम क्या ?

उ०—इस गुणस्थानक मे जो मर जाय तो अनुत्तर विमान मे जाकर देवता हो, और चौथे गुण स्थानक में रहे और नही तो अवश्य पतित हो तव दसवें से प्रथम गुणस्थान में आ जाय परन्तु वहां से आगे न चढ़े ।

६२. प्र०—बारहवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और इस में कितनी प्रकृतियो नष्ट होती है ?

उ०—पहिले कही हुई अट्ठाईस प्रकृतियो को सर्वथा नष्ट करता है उसे क्षीण मोहनीय नाम का बाहरवा गुणस्थान कहते हैं।

६३. प्र०—उस गुणस्थानक की, स्थिति (परिणाम) कैसी होती है ?

उ०—क्षपक श्रेणी, क्षायक भाव, क्षायक समकित, और यथा ख्यात चारित्र्य में रहते कारण सत्य जोग सत्य, भाव सत्य अमाथी, अकषाई वीतरागी, अविकारी, महाज्ञानी, महाध्यानी, वर्धमान परि णामी, अप्रतिपाती होता है, वहा अनर मुहुर्त रहता है और इसी जगह ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, अतराय का भी क्षय कर तेरहवें गुणस्थानक के पहिले समय में ही केवल ज्योति प्रकट करता है उसे क्षीण मोहनीय गुण स्थानक कहते हैं।

६४. प्र०—तेरहवें गुणस्थान का नाम क्या ? और उनका लक्षण क्या है ?

उ०—वह दश बोल सहित हो, सजोगी, सशरीरी, सलेशी, वीतरागी, यथा ख्यात चारित्री, क्षायिक सम्यक्त्वी, पडित वीर्यवान, शुक्लध्यानी, केवल ज्ञानी, केवल दर्शनी होता है उसे सयोगी केवली गुणस्थानक कहते हैं।

६५. प्र०—उस गुणस्थान में कितने समय रहता है ?

उ०—जघन्य अतर मुहुर्त और उत्कृष्ट थोडा कम

क्रोड पूर्व ।

६६ प्र०—तेरहवे गुणस्थानक मे रहे हुए कैसे गिने जाते है ?

उ०—केवली भगवान, जग दुद्धारक अनतज्ञान दर्शन के आधार भूत, भविष्य, वर्तमान, काल के सर्व भावो को एक ससय मे यथार्थ रीति से जानने वाले ।

६७ प्र०—चौदहवें गुणस्थानक का नाम क्या ?

उ०—अयोगी केवली गुणस्थानक ।

६८. प्र०—अयोगी केवली अर्थात् क्या ?

उ०—इस गुण स्थान में मन, बचन, काया के जोग और प्राण का निरोध कर रूपातित परम शुल्क ध्यान मे अडोल स्थिति में पंचाक्षर बोले जितने समय तक रह चार (वेदनीय, आयुष्य, नाम गोत्र,) कर्म का क्षय कर शरीर से मुक्त होता है ।

६९. प्र०—तेरहवें गुणस्थानक में कितने कर्मों का क्षय होता है ?

उ०—मोहनीय ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, अतराय, इन चार घनघाति कर्म का क्षय होता है, और बाकी के चार जली हुई रस्सी के समान रहते हैं ।

७०. प्र०—चौदहवें गुणस्थानक से मुक्त हो कहां जाते हैं ?

उ०—सिद्ध क्षेत्र में, अनंत सिद्ध स्वरूप मे विराजित होते है ।

७१. प्र०—वे सिद्ध भगवान इस लोक में भी कभी आते हैं ?

उ०—नही, उनको यहां आने का कोई कारण नही अर्थात् कभी भी नही आते ।

७२. प्र०—उनकी शक्ति किस प्रकार की होती है ?
उ०—अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत वल वीर्य, अनत तेज, अखड आनन्द और अनत आव्या वाध, आत्मसुख के घर्ता हैं।

७३ प्र०—उनका स्वरूप कैसा होता है ?
उ०—उनका स्वरूप अगम्य, अगोचर, अवाच्य, अलक्ष अचल, और अतत स्वरूपी होता है।

७४. प्र०—सिद्ध हुई कात्माए कितनी होगी ?
उ०—भिन्न भिन्न आत्माए सिद्ध पद पाई हैं इस पक्ष से अनत सिद्ध हैं, और सबका ,स्वरूप समान है इससे एक हैं। जहा अनत हैं वहा अनत है जहा एक है इस पक्ष से एक गिनी जाती है।

पाठ- ३८

कर्म प्रकृति प्रश्नोत्तर

१ प्र०—जीव को दुख-सुख देने का निमित्त कौन है ?
उ०—जीव के वाधे हुए शुभा शुभ कर्म।

२ प्र०—ये कर्म कितने प्रकार के हैं ?
उ०—आठ।

३ प्र०—उनके नाम कहो ?
उ०—ज्ञानावर्णीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र, अतराय।

क्रोड पूर्व ।

६६ प्र०—तेरहवे गुणस्थानक मे रहे हुए कैसे गिने जाते है?

उ०—केवली भगवान, जग दुद्धारक अनतज्ञान दर्शन के आधार भूत, भविष्य, वर्तमान, काल के सर्व भावो को एक ससय मे यथार्थ रीति से जानने वाले ।

६७ प्र०—चौदहवे गुणस्थानक का नाम क्या ?

उ०—अयोगी केवली गुणस्थानक ।

६८. प्र०—अयोगी केवली अर्थात् क्या ?

उ०—इस गुण स्थान मे मन, वचन, काया के जोग और प्राण का निरोध कर रूपातित परम शुल्क ध्यान मे अडोल स्थिति मे पचाक्षर बोले जितने समय तक रह चार (वेदनीय, आयुष्य, नाम गोत्र,) कर्म का क्षय कर शरीर से मुक्त होता है।

६९. प्र०—तेरहवें गुणस्थानक में कितने कर्मों का क्षय होता है ?

उ०—मोहनीय ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, अतराय, इन चार घनघाति कर्म का क्षय होता है, और बाकी के चार जली हुई रस्सी के समान रहते है ।

७०. प्र०—चौदहवें गुणस्थानक से मुक्त हो कहां जाते हैं ?

उ०—सिद्ध क्षेत्र में, अनत सिद्ध स्वरूप मे विराजित होते है ।

७१. प्र०—वे सिद्ध भगवान इस लोक मे भी कभी आते हैं?

उ०—नही, उनको यहां आने का कोई कारण नही अर्थात् कभी भी नहीं आते ।

७२. प्र०—उनकी शक्ति किस प्रकार की होती है ?
उ०—अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत बल वीर्य, अनत तेज, अखड आनन्द और अनत आव्या बाध, आत्मसुख के धर्ता हैं ।

७३ प्र०—उनका स्वरूप कैसा होता है ?
उ०—उनका स्वरूप अगम्य, अगोचर, अवाच्य, अलक्ष अचल, और अतत स्वरूपी होता है ।

७४. प्र०—सिद्ध हुई कात्माए कितनी होगी ?
उ०—भिन्न भिन्न आत्माए सिद्ध पद पाई हैं इस पक्ष से अनत सिद्ध हैं, और सबका ,स्वरूप समान है इससे एक हैं । जहा अनत हैं वहा अनत है जहा एक है इस पक्ष से एक गिनी जाती है ।

पाठ– ३८

कर्म प्रकृति प्रश्नोत्तर

१. प्र०—जीव को दुःख–सुख देने का निमित्त कौन है ?
उ०—जीव के बांधे हुए शुभा शुभ कर्म ।

२. प्र०—ये कर्म कितने प्रकार के हैं ?
उ०—आठ ।

३ प्र०—उनके नाम कहो ?
उ०—ज्ञानावर्णीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र, अंतराय।

४. प्र०—प्रत्येक कर्म जीव की कौन-कौन सी शक्तियों के अवरोध करने वाले हैं ?

उ०—ज्ञानावरणी ये ज्ञान की अनन्त शक्ति को दबाने वाला है, दर्शनावरणीय दर्शन को, वेदनीय आत्मीय अनन्त सुख को, मोहनीय क्षायिक सम्यक्त्व को, आयुष्य अक्षय स्थिति गुण को, नाम कर्म अमूर्ति गुण को, गोत्र अगुरु लघु गुण को, अन्तराय आत्मिक अनन्त शक्ति को रोकने वाला है।

५. प्र०—ज्ञानावरणीय कर्म कैसे बन्धता है ?

उ०—ज्ञानी के कार्य मे विघ्न डालने से, उनका उपकार भूल जाने से, उनका अपमान करने से, उनके साथ वितडावाद करने से, झगडा, क्लेश, द्वेष तथा किसी के ज्ञान की अन्तराय देने से ज्ञानावणीय कर्म का बन्ध होता है।

६. प्र०—इस कर्म का क्या फल है ?

उ०—मति ज्ञानादि कोई ज्ञान पैदा नही होता है तथा पाच इन्द्रियो का ज्ञान या विज्ञान भी नही होता है, वह जड मूढ पशु सा रहता है।

७. प्र०—उस कर्म की स्थिति कितनी है ?

उ०—जघन्य अन्तर्मुहुर्त की, उत्कृष्ट तीस क्रोडा-क्रोड सागर की।

८. प्र०—दर्शनावरणीय कर्म कैसे बन्धता है ?

उ०—दर्शन सम्यक्त्व अथवा शासन या दर्शत शक्ति) में विघ्न करने से, टेढे बोलने से, त्रुटि देखने से, असातना करने से, उनके विपक्ष भूत बनने से,

तथा हर किसी को इनकी अन्तराय देने से दर्शना-
वरणीय कर्म का बन्ध होता है ।

९ प्र०—इस कर्म का क्या फल है ?

उ०—देखने मे प्रत्येक शक्ति से वे नसीव रहता है,
चक्षु दर्शन से प्रारम्भ कर कोई सत्य दर्शन नही
होता ।

१० प्र०—दर्शनावरणीय कर्म की स्थिति कितनी है ?

उ०— ज्ञानावर्णीय के अनुमार ।

११ प्र०—वेदनीय कर्म के कितने भेद हैं ?

उ०—दो—साता, असाता वेदनीय ।

१२ प्र०—साता वेदनीय कर्म कैसे बनते हैं ?

उ०—प्राणियो को शान्तता देने से, दया, अनुकम्पा
करने से, कोई प्रकार की पीडा, दु ख, असाता
नही देने से, साता वेदनीय कर्म का बध होता है।

१३ प्र०—असाता वेदनीय कर्म का बध कैसे होता है ?

उ०—प्राणियो को अशान्ति देने से, निर्दयता करने से,
शारीरिक या मानसिक दु ख देने से, असाता
वेदनीय कर्म का बध होता है ।

१४ प्र०—यह साता या अमाता वेदनीय कर्म क्या फल
देता है ?

उ०—सातावेदनीय से शारीरिक तथा मानसिक दोनो
प्रकार के मनोज्ञ सुख, शान्ति और इनके अनुकूल
हर एक सयोग प्राप्त होते हैं । असाता वेदनीय
से अमनोज्ञ सामग्री मिलती है, दु ख, अशान्ति,
व्याधि, व्याकुलता, पराधीनता पीडा और हर एक
प्रकार के प्रतिकूल सयोग प्राप्त होते हैं ।

१५. प्र०—साता वेदनीय की स्थिति कितनी है ?
उ०—जघन्य दो समय की उत्कृष्ट पन्द्रह कोडा कोड सागरोपम की ।

१६. प्र०—असाता वेदनीय की स्थिति कितनी है ?
उ०—जघन्य एक सागर के ७ भाग मे से ३ भाग में एक पल्य के असख्यातवें भाग कम की और उत्कृष्ट तीस कोडा कोड सागरोमप की।

१७. प्र ०—मोहनीय कर्म कैसे बधते है ?
उ०—तीव्र क्रोध, मान, माया, लोभ करने से, जीवो को वश करने से, अयोग्य रीति से मारने से अथवा उपदेश से किसी को प्रतिकूल समझा कर मारने से।

१८. प्र०—मोहनीय कर्म का फल क्या ?
उ०—इस मोहनीय कर्म की २८ प्रकृतियों मे से जितने प्रकार की प्रकृतियो की तीव्रता, मदता हो उनमे यह घिरा रहे, सत्य वस्तु को न पहचान सके और असत्य मे भी लिप्त रहे ।

१९. प्र०—उसकी स्थिति किस प्रकार की होती है दृष्टान्त द्वारा समझाओ ?
उ०—जैसे मद्य पान के नशे से भान रहित मनुष्य हिताहित के मार्ग को नही समझ सक्ता, अक्लमदी खो बैठता है, उसी तरह मोहनी कर्म के उदय से मनुष्य आत्मज्ञान, सत्यमार्ग, हित के साधन और अपने कर्तव्य नही समझ सकता ।

२०. प्र०—मोहनीकर्म की स्थिति कितनी है ?
उ०—जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट सित्तर कोडा कोड सागर की ।

२१ प्र०—आयुष्य कर्म के कितने भेद हैं ?
उ०—चार नारकी, मनुष्य, त्रियंच, देव ।

२२ प्र०—इन चारो में से नारकी का आयुष्य कैसे बधता है ?
उ०—महा आरभ समारभ करने से महा परिग्रह सेवन करने से, सदा मद्य-मास का आहार करने से, पचेद्री प्राणियो को बिना अपराध घात करने से इत्यादि ऐसे महा अनर्थ, अकार्य, जुल्म करने से नारकी का आयुष्य बधता है ।

२३ प्र०—तियँच का आयुप्य कैसे बाधा जाता ?
उ०—माया कपट करने से, प्रपच जाल फैलाने से, कम-ज्यादा तोल-नाप की वस्तुए रख अन्य को ठगने से, विश्वासघात, असत्य, छल, दगा कर दूसरो को ठग लेने से ।

२४. प्र०—मनुष्य का आयुष्य कैसे बधता है ?
उ०—दया से, भद्र प्रकृति से, विनीत प्रकृति से और अभिमान रहित सरलता से ।

२५ प्र०—देव का आयुष्य कैसे बधता है ?
उ०—न्याय पूर्वक गृहस्थ धर्म (श्रावक व्रत) का पालन करने से, मुनि-धर्म (साधु व्रत) का पालन करने से, बाल तपश्चर्या करने से और अकाम निजरा करने से ।

२६ प्र०—देवता नारकी का आयुष्य कितना है ?
उ०—जवन्य दश हजार वर्ष का तेतीस सागरोपम का ।

२७ प्र०—मनुष्य तियँच का आयुष्य कितना है ?
उ०—जघन्य अर्त मुहूर्त का उत्कृष्ट तीन पल का ।

२८ प्र०—नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उ०—दो—शुभनाम कर्म, अशुभनाम कर्म ।

२९. प्र०—शुभ और अशुभ नाम कर्म कैसे बधता है ?

उ०—मन, वचन, काया को सरलता से. योग्य रीति से, न्याय मार्ग पर प्रवृत करने से तथा दूसरो की आकाक्षाओ को दु ख पहुँचे ऐसा कोई वित- डावाद न करने से शुभनाम कर्म बधता है और इनके विपरीत चलने से अशुभनाम कर्म का सचय होता है ।

३०. प्र०—यह शुभा शुभनाम कर्म क्या फल देता है ?

उ०—शुभनाम कर्म के फल से इष्ट, शब्द, रूप, गन्ध, रस, स्पर्श, गति, स्थिति, लावण्य, यश—कीर्ति, बल—वीर्य, पुरुषार्थ, पराक्रमे स्वरादि मनोज्ञ प्राप्त होते है और अशुभनाम कर्म से इनके प्रतिकूल अमनोज्ञ सुख प्राप्त होते है ।

३१. प्र०—नामकर्म की कितनी स्थिति है ?

उ०—जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस कोडा कोड सागर की ।

३२. प्र०—गोत्र कर्म के कितने भेद है ?

उ०—दो—उच्च गोत्र, नीच गोत्र ।

३३ प्र०—उच्च, नीच गोत्र कैसे बन्धता है ?

उ०—जाति, कुल, बल, रूप, तप, शास्त्र, लाभ, एश्वर्यता इस आठ प्रकार के मद से नीच गोत्र का बन्ध होता है और ये वस्तुएं प्राप्त होने पर भी यह न करे तो उच्च गोत्र का बन्ध होता है ।

३४. प्र०—उच्च, नीच गोत्र का फल क्या है ?

उ०—उच्च गोत्र से जाति, लाभ, कुल, बल, रूप, तप,

शास्त्र, ऐश्वर्य उच्च मिलते हैं और नीच गोत्र से ये आठो वस्तुए हलकी एव तुच्छ मिलती हैं ।

५ प्र०—इस गोत्र कर्म की कितनी स्थिति है ?

उ०—जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस कोडा कोड सागरोपम की ।

३६ प्र०—अन्तराय कर्म कितनी रीति से बधता है ?

उ०—दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य उनका किसी जीव के उपयोग मे (अन्तराय) रोडे अटकाने से ।

३७. प्र०—अन्तराय कर्म का क्या फल है ?

उ०—जो मनुष्य किसी को जैसी अन्तराय दे वैसी ही अन्तराय उसे मिलती है उस वस्तु का प्रयत्न करने पर भी वह प्राप्त नही हो सकती ।

३८ प्र०—इस कर्म की कितनी स्थिति है ?

उ०—जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस कोडा कोड सागरोपम की ।

पाठ—३९

त्रैसठ श्लाघ्य पुरुषो सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

१. प्र०—इस अवसर्पिणी काल मे अपने आर्यावर्त में कितने तीर्थंकर हुए ?

उ०—चौईस ।

२. प्र०—बाकी रहे हुए चार भरत और पांच इर व्रत में कितने तीर्थंकर हुए ?

उ०—उन प्रत्येक भरत और इर व्रत मे चौबीस चौबीस तीर्थंकर इस अवसर्पिणी काल मे हुए ।

३. प्र०—एक कालचक्र मे एक=एक क्षेत्र मे कितनी चौबीस होती है ?

उ०—दो—(एक उत्सर्पिणी मे, एक अवसर्पिणो मे) ।

४. प्र०—एक पुद्गल परीवर्तन मे कितनी चौबीसी होती है ?

उ०—अनन्ती ।

५. प्र०—पहिले कितनी चौबीसी हुई होगी ?

उ०—अनन्ती ।

६. प्र०—आते (भविष्य) काल मे कितनी चौबीसी होगी ?

उ०—अनन्ती ।

७. प्र०—तीर्थंकर कौन=कौन से आरे मे हुए ?

उ०—तीसरे और चौथे मे ।

८, प्र०—उन चौबीस तीर्थंकरो के नाम कहो ?

उ०—ऋषभदेव से महावीर स्वामी ।

९. प्र०—इन चौबीस तीर्थंकरो मे से तीसरे आरे मे कितने हुऐ और चौथे आरे मे कितने हुए ?

उ०—एक प्रथम तीर्थंकर तीसरे आरे मे और बाकी के सब तीर्थंकर चौथे आरे मे हुए ।

१०. प्र०—ऋषभदेव भगवान का दूसरा नाम क्या है ?

उ०—आदिनाथ, आदि, जिनेश्वर अथवा आदिश्वर ।

११ प्र०—यह नाम क्यो दिया गया ?

उ०—उन्होने ुगल्या धर्म दूर कर धर्म की आदि की जिससे आदिनाथ नाम पडा ।

१२. प्र०—ऋषभदेव भगवान ने दूसरा कार्य क्या किया ?
उ०—पुरुषो की ७२ कला और स्त्रियो की ६४ कला लोको को सिखाई ।

१३. प्र०—प्रथम कला सिखाई या धर्म स्थापित किया ?
उ०—पहिले कला सिखाई और फिर राजपाट त्याग दीक्षा ली, दिक्षा लेन के १०० वर्ष पश्चात् केवल्य ज्ञान प्रकट हुआ और फिर धर्म की स्थापना की अर्थात् भरतक्षेत्र मे चार तीर्थ का विच्छेद हो गया था उनकी फिर स्थापना की ।

१४ प्र०—ऋषभदेव भगवान के कितने पुत्र थे ?
उ०—सो ।

१५. प्र०—उनके सब से बडे पुत्र का नाम क्या था ?
उ०—भरत ।

१६. प्र०—भरत राजा कौन-सी बडी पदवी पाये थे ?
उ०—चक्रवर्ती राजा की ।

१७ प्र०—चक्रवर्ती राजा किसे कहते हैं ?
उ०—जो चक्र द्वारा—भरतक्षेत्र के छहो खण्डो का साधन करते है उसी तरह जो चौदहो रत्न तथा नो निधान प्रभृति मोटो रिद्धि के स्वामी होते है वे चक्रवर्ती कहलाते हैं ।

१८. प्र०—एक=एक चौबीसी में ऐसे कितने चक्रवर्ती होते है ?
उ०—बारह ।

१९ प्र०—अपने भरत क्षेत्र मे उत्पन्न बारहो चक्रवर्ती के नाम कहो ?
उ०—भरत २ सगर ३ मघव ४ सनत्कुमार ५ शान्ति ६ कुंथु ७ अरह ८ सुभ्भुम ९ महापद्म १० हरिषेण

११ जय १२ ब्रह्मदत्त ।

२०. प्र०—तीर्थंकरो की और चक्रवर्तियो की किन-किन ने पदवी पाई ?

उ०—शातिनाथ, कुन्थुनाथ, अरिनाथ ।

२१. प्र०—चक्रवर्ती होकर तीर्थंकर कैसे हुए ?

उ०—वे पहले चक्रवर्ती राजा थे फिर सयम लेकर तीर्थंकर पद को प्राप्त हुए ।

२२. प्र०—चक्रवर्ती मर कर कौन सी गति मे जाते हैं ?

उ०—जो चक्रवर्ती की रिद्धि त्याग कर सयम लेते है वे अवश्य मोक्ष या देवलोक मे जाते है और जो चक्रवर्ती पद मे ही मरते है वे अवश्य नरक गति मे जाते है ।

२३. प्र०—चक्रवर्ती से आधा राज्य पाया और अर्द्ध ऋद्धि के स्वामी हुए वे कौन-से राजा कहलाते है ?

उ०—वासुदेव या अर्द्ध चक्री ।

१४ प्र०—वासुदेव कितने खड जीतते है ?

उ०—तीन, दक्षिण भरत के ।

२५. प्र०—एक चौबीसी मे ऐसे कितने वासुदेव हुए है ?

उ०—नौ ।

२६. प्र०—भरतक्षेत्र मे हुए वासुदेवो के नाम कहो ?

उ०—१ त्रिप्रष्ट महावीर स्वामी का जीव २ द्विप्रष्ट ३ स्वयभू ४ पुरुषोत्तम ५ पुरुषसिंह ६ पुरुष पुडरीक ७ दत्त ८ नारायण ९ कृष्ण ।

२७. प्र०—वासुदेव अपनी समस्त जिन्दगी मे किसी से पराजित हुए या नही ?

उ०—नही, ये किसी से नही हारते ।

२८. प्र०—वासुदेव के भाई को क्या कहते हैं ?
उ०—बलदेव ।

२९ प्र०—वासुदेव के सब भाई बलदेव कहलाते हैं ?
उ०—नही, उनके बडे भाई जो महा समर्थ हो वे बलदेव कहलाते हैं ।

३०, प्र०—वासुदेव की हाजरी मे कितने देव रहते हैं ?
उ०—आठ हजार ।

३१ प्र०—चक्रवर्ती की सेवा मे कितने देव रहते हैं ?
उ०—सोलह हजार ।

३२. प्र०—एक चौबीसी में कितने बलदेव होते हैं ?
उ०—नौ ।

३३ प्र०—इस चौबीसी मे प्रकठ हुए नौ बलदेवो के नाम कहो ?
उ०—१ अचल २ विजय ३ भद्र ४ सुप्रभ ५ सुदर्शन ६ आनन्द ७ नन्दन ८ राम ९ बलभद्र ।

३४. प्र०—बलदेव मर के कहा जाते हैं ?
उ०—वासुदेव की मृत्यु से वैराग्य पा बलदेव अवश्य दीक्षा लेते हैं और मृत्यु पाकर मोक्ष या देवलोक पधारते ।

३५ प्र०—वासुदेव की तरह और कोई तीन खड जीतते हैं ?
उ०—प्रति वासुदेव तीन खड जीतते हैं ।

३६. प्र०—प्रति वासुदेव किसे कहते हैं ?
उ०—वासुदेव के प्रति पक्षी, प्रति वासुदेव ।

३७ प्र०—प्रति वासुदेव किस से मारे जाते हैं ?
उ०—प्रति वासुदेव और वासुदेव के मध्य अवश्य युद्ध होता है और प्रति वासुदेव को वासुदेव मारते है

और प्रति वासुदेव के जीते हुए तीन खंठ वासुदेव प्राप्त करते है ।

३८ प्र०—नौ प्रति वासुदेवो के नाम कहो ?

उ०—अग्रीव, तारक, मेरक, मधु, निशुम्भ, जालेन्द्र, प्रहलाद, रावण, जरासिंधु ।

३९. प्र०—तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव, प्रति वासुदेव ये सब कैसे पुरुष कहलाते है ?

उ०—श्लाध्य वाले पुरुष कहे जाते हैं ।

४०. प्र०—प्रत्येक चौबीसी मे एसे प्रख्यात पुरुष कुल कितने होते है ?

उ०—त्रेसठ ।

पाठ-४०

ज्योतिष्य के प्रश्नोत्तर

१. प्र०—भूत, भविष्यत, वर्तमान काल के फलाफल देखने का कौन-सा शास्त्र है ?

उ०—ज्योतिष्य ।

२. प्र०—ज्योतिष्य के नायक कौन हैं ?

उ०—ग्रह, नक्षत्र ।

३. प्र०—ग्रह कितने हैं ?

उ०—नव ।

४. प्र०—कौन-कौन से ?

उ०—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु ।

५. प्र०—नक्षत्र अर्थात् क्या ?

उ०—एक-सी रीति से गमन करने वाले प्रभावोत्पादक तारे।

६. प्र०—नक्षत्र कितने हैं ?

उ०—सत्ताईस, अट्ठाईस।

७. प्र०—उनके नाम क्या हैं ? और प्रत्येक नक्षत्र के कितने तारे हैं ?

उ०—(१) अश्विनी-जिनके तीन तारे। (२) भरणी-के तीन। (३) कृतिका-के छ। (४) रोहिणी-के पांच। (५) मृगशीर-के तीन। (६) आद्रा-का एक। (७) पुनर्वसु-के पाच। (८) पुण्य-के तीन। (९) अश्लेषा-के छः। (१०) मघा-के सात। (११) पुर्वा फाल्गुनी-के दो। (१२) उत्तराफाल्गुनी-के दो। (१३) हस्ति-के पाच। (१४) चित्रा-का एक। (१५) स्वान्ति-का एक। (१६) विशाखा-के पाच। (१७) अनुराधा-के चार। (१८) जेष्ठा-के तीन। (१९) मूल-के ग्यारह। (२०) पूर्वाषाढ-के चार। (२१) उत्तराषाढा-के चार। (२२) अभिच-के तीन। (२३) श्रवण-के तीन। (२४) घनिष्टा-के पाच। (२५) शतभीसा-के सो। (२६) पूर्वा भाद्रपद-के दो। (२७) उत्तरा भाद्र-पद-के दो। (२८) रेवती के बत्तीस।

८. प्र०—नक्षत्रो का गणित किस सज्ञा से होता है ?

उ०—राशी पर से।

९. प्र०—राशि कितनी और कौन-कौन सी ?

उ०—बारह—(१) मेष, (२) वृष, (३) मिथुन, (४) कर्क

(५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुल, (८) वृश्चिक, (९) धन, (१०) मकर, (११) कुम्भ, (१२) मीन।

१० प्र०—कितने नक्षत्र पर एक राशि रहती है ?
उ०—सवा दो नक्षत्रो पर।

११ प्र०—मेष राशि मे कितने नक्षत्र हैं ?
उ०—अश्विनीपूर्ण भरणी पूर्ण, कृतिका का एक चरण।

१२. प्र०—वृष राशि मे कितने नक्षत्र हैं ?
उ०—कृतिका के तीन चरण रोहणी पूर्ण और मृगशीर के दो चरण।

१३. प्र०—मिथुन राशि मे कितने नक्षत्र हैं ?
उ०—मृगशीर के दो चरण आर्दा पूर्ण, पुनर्वसु के तीन चरण।

१४ प्र०—कर्क राशि के कितने नक्षत्र ?
उ०—पुनर्वसु का एक चरण, पुण्य पूर्ण, अश्वेषा पूर्ण।

१५. प्र०—सिंह राशि मे कौन से नक्षत्र हे ?
उ०—मघा पूर्ण, पूर्वा फाल्गुनी पूर्ण, उत्तरा फाल्गुनी का एक चरण।

१६ प्र०—कन्या राशि मे कौन से नक्षत्र हे ?
उ०—उत्तरा फाल्गुनी के तीन चरण, हस्त पूर्ण के दो चरण।

१७. प्र०—तुला राशि मे कौन से नक्षत्र हैं ?
उ०—चित्रा के दो चरण, स्वाती पूर्ण, विशाखा के तीन चरण।

१८. प्र०—वृश्चिक राशि मे कितने नक्षत्र हैं ?
उ०—विशाखा का एक चरण, अनुराधा पूर्ण, जेष्टा पूर्ण।

१९. प्र०—धन राशि मे कौन से नक्षत्र हैं ?

उ०—मूल पूर्ण, पूर्वाषाढा पूर्ण और उत्तराषाढा का एक चरण ।

२०. प्र०—मकर राशि में कौन से नक्षत्र हैं ?
उ०—उत्तराषाढा के तीन चरण, स्वर्ण पूर्ण, धनिष्ठा के दो चरण ।

२१ प्र०—कुम्भ राशि मे कौन से नक्षत्र हैं ?
उ०—धनिष्ठा के दो चरण, शतभीसा पूर्ण, पूर्वा भद्रपद के तीन चरण ।

२२. प्र०—मीन राशि मे कौन से नक्षत्र हैं ?
उ०—पूर्वा भाद्रपद का एक पाया, उत्तरा पूर्ण, रेवती पूर्ण ।

२३. प्र०— मेष राशि में कौन से अक्षर हैं ?
उ०—अ० ल० ई० ।

२४ प्र०—वृष राशि में कौन से अक्षर है ?
उ०—ख० व० ऊ० ।

२५ प्र०—मिथुन राशि में कौन से अक्षर है ?
उ०—क० छ० घ० ।

२६. प्र०—कर्क राशि मे कौन से अक्षर हैं ?
उ०—उ० उ० ह० ।

२७. प्र०—सिह राशि के कौन से अक्षर हैं ?
उ०—उ० म० ट० ।

२८ प्र०—कन्या राशि मे कौन से अक्षर हैं ?
उ०—प० ठ० ण० ।

२९. प्र०—तुल राशि मे कौन से अक्षर हैं ?
उ०—उ० र० त० ।

३०. प्र०—वृश्चिक राशि मे कौन से अक्षर हैं ?—

उ०—न० र० प० ।

३१. प्र०—धन राशि मे कौन से अक्षर हैं ?

उ०—क० घ० क० ट० ।

३२. प्र०—मकर राशि मे कौन से अक्षर हैं ?

उ०—उ० व० ज० ।

३३. प्र०—कुम्भ राशि मे कौन से अक्षर है ?

उ०—उ० ग० श० ।

३४. प्र०—मीन राशि मे कौन से अक्षर हैं ?

उ०—द० च० ज० थ० ।

३५. प्र०—युग मे कितने वर्ष होते हैं ?

उ०—पाच ।

३६. प्र०—पांच वर्ष को क्या कहते हैं ?

उ०—पांच संवत्सर ।

३७, प्र०—सवत्सर कितने प्रकार के हैं ?

उ०—पाच ।

३८. प्र०—उनके नाम कहो ?

उ०—चद्र सवत्सर, सूर्य संवत्सर, नक्षत्र संवत्सर, ऋ सवत्सर, अभिवर्धन संवत्सर ।

३९. प्र०—चद्र संवत्सर के कितने दिन होते है ?

उ०—तीन सो चौपन मे कुछ कम कुछ ज्यादा परिपूर्ण

४०. प्र०—सूर्य संवत्सरी के कितने दिन होते हैं ?

उ०—तीन सो छासठ ।

४१. प्र०—नक्षत्र संवत्सर के कितने दिन होते है ?

उ०—३२७ ।

४२. प्र०—ऋतु संवत्सरी के कितने दिन होते हैं ?

उ०—३६० ।

४३. प्र०—अभिवर्धन संवत्सरी के कितने दिन होते हैं ?
उ०—३८० ।

४४. प्र०—सब नक्षत्रो का मडल गुरु कितने दिन में फिरता है ?
उ०—बारह वर्ष में ।

४५ प्र०—मगल कितने वक्त में फिरता है ?
उ०—१॥ वर्ष ।

४६ प्र०—बुद्ध कितनी वक्त में फिरता है ?
उ०—बारह माह ।

४७. प्र०—शुक्र कितने समय में परिभ्रमण करता है ?
उ०—१२ माह ।

४८ प्र०—रवि कितने समय में परिभ्रमण करता है ?
उ०—१२ माह ।

४९. प्र०—शनि कितने समय मे परिभ्रमण करता है ?
उ०—तीस वर्ष ।

५०. प्र०—चद्र कितने समय में परिभ्रमण करता है ?
उ०—सत्ताईस दिन से कुछ ज्यादा ।

५१. प्र०—राहु कितने समय में परिभ्रमण करता है ?
उ०—डेढ वर्ष ।

५२. प्र०—परदेश गमन करने वालों को कौन-कौन से अवयोग जानना चाहिये ?
उ०—दिशाशूल, नान-काल, काल-राहु, योगिनी, चद्र, इत्यादि ।

५३ प्र०—पूर्व दिशा में किस वार को दिशा शूल रहता है ?
उ०—शनि और चद्र को ।

५४. प्र०—पश्चिम दिशा में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—रवि, शुक्र को ।

५५. प्र०—उत्तर दिशा में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—बुध और मंगलवार को ।

५६. प्र०—दक्षिण दिशा में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—गुरुवार ।

५७ प्र०—वायव्य कोन मे किस वार को शूल रहता है ?
उ०—मगल ।

५८ प्र०—ईशान कोन मे किस वार को शूल रहता है ?
उ०—बुध और शनि ।

५९. प्र०—नैऋत्य कोन मे किस वार को शूल रहता है ?
उ०—शुक्र और रवि ।

६०. प्र०—अग्नि कोन मे किस वार को शूल रहता है ?
उ०—गुरु और चद्र ।

६१. प्र०—जिस दिशा मे शूल हो ओर उसी और प्रयाण करे तो क्या होता है ?
उ०—हानि होती है ।

६२. प्र०—कौन-सा नक्षत्र किस दिशा मे हो तो गमन नही करना चाहिये ?
उ०—जिस दिन को हस्त नक्षत्र हो तो उत्तर में, चित्रा हो उस दिन दक्षिण मे, रोहिणी हो तो पूर्व मे; श्रवण हो तो पश्चिम मे गमन न करे अगर करता है तो मृत्यु प्राप्त होती है ।

६३. प०—नग्नकाल किस दिन किस दिशा को रहता है ?
उ०—रवि को उत्तर मे, चंद्र को वायव्य मे, मंगल को पश्चिम मे, बुध को नैऋत्य मे, गुरु को दक्षिण मे, शुक्र को आग्नेय मे, शनि को पूर्व दिशा में, काल का वास रहता है इसलिये नग्न काल की